आजादी का अलख

राजस्थान की स्वतन्त्रता संग्राम कालीन काव्य चेतना
का प्रामाणिक दस्तावेज

डॉ० मनोहर प्रभाकर

जन-जीवन प्रकाशन

समर्पण

सहधर्मिणी सुशीला

को

जिसकी कष्ट-सहिष्णुता

और समर्पित सेवा-भाव के

कारण ही

मेरे विनम्र साहित्यिक अनुष्ठान

सम्भव हो सके !

लेखक

आभार

इस पुस्तक के लेखक एवं सम्पादक को सन् १९७८ में दो वर्ष के लिए केन्द्र सरकार के शिक्षा मन्त्रालय के अन्तर्गत कार्यरत 'भारतीय समाज विज्ञान अनुसंधान परिषद्' द्वारा वरिष्ठ फैलोशिप प्रदान की गई थी। फैलोशिप की इस अवधि में स्वतन्त्रता-संग्राम के दौरान राजस्थान में रचित राजनीतिक कविताओं का प्रभूत परिमाण में संकलन किया गया था। उसी के आधार पर इस प्रस्तुति की संरचना की गई है।

लेखक 'भारतीय समाज विज्ञान अनुसंधान परिषद्' के प्रति उनके द्वारा प्रदत्त उदार आर्थिक सहयोग तथा फैलोशिप की अवधि में उसे आजीविका की चिन्ता से मुक्त रखने के लिए आभार-नत है।

इस ग्रन्थ के प्रस्तुतीकरण में जिन व्यक्तियों ने सक्रिय सहयोग दिया है, उनकी सूची लम्बी है। तथापि, लेखक विशेष रूप से प्रो० डॉ० इकबाल नारायण, भूतपूर्व कुलपति, राजस्थान एवं बनारस विश्वविद्यालय तथा प्रो० डॉ० शान्ति प्रसाद वर्मा के प्रति आभारी है, जिन्होंने इस दिशा में उसे न केवल कार्य करने के लिए प्रेरित किया, अपितु समय-समय पर मार्ग-दर्शन भी किया।

राजस्थान साहित्य एवं संस्कृति के मर्मज्ञ श्री रावत सारस्वत, साहित्य अकादमी के अध्यक्ष डॉ० प्रकाश आतुर और राजस्थान प्रगतिशील लेखक संघ के महामन्त्री श्री वेदव्यास के प्रति भी लेखक का मन कृतज्ञता से भरा है, जिनका सहयोग किसी न किसी रूप में निरन्तर प्राप्त होता रहा है।

डा० देवदत्त शर्मा, श्री महेन्द्र जैन और कुमारी आदर्श शर्मा ने भी इस पुस्तक की पाण्डुलिपि तैयार करने एवं शोध-सन्दर्भ तलाशने में बहुमूल्य सहयोग दिया है, पर उनके प्रति कृतज्ञता-ज्ञापन निरी औपचारिकता होगी।

इस पुस्तक के प्रकाशक जन-जीवन प्रकाशन के स्वामी श्री महावीर गोयल और उनकी विदुषी पत्नी डॉ० उषा गोयल के प्रति भी लेखक आभार-नत है, जिनके उत्साह और उलाहनों के कारण ही इस पुस्तक का प्रकाशन सम्भव हो सका।

लेखक उन सभी कवियों और कृतिकारों को भी अपना आभार अर्पित करता है, जिनकी रचनाएं इस संग्रह में समाविष्ट की गई है।

सी-118 ए, मंगल मार्ग,
बापू नगर, जयपुर।

—डॉ० मनोहर प्रभाकर

अनुक्रम

आमुख

राजस्थान में राजनीतिक चेतना और उसके सन्दर्भ में रचित राष्ट्रभक्ति काव्य की चर्चा करने से पूर्व यहां राष्ट्र-भक्ति साहित्य (नेशनलिस्ट लिटरेचर) की अपनी परिकल्पना और अवधारणा को स्पष्ट करना भी अभीष्ट होगा। अधिकांश विद्वानों ने इस विशिष्ट कोटि के साहित्य को राष्ट्रीय साहित्य, राष्ट्रीय चेतना परक साहित्य अथवा राष्ट्रवादी साहित्य-धारा की संज्ञा प्रदान की है। निश्चय ही इस नामकरण का कारण वह शाब्दिक अनुवाद है, जिसका आधार अंग्रेजी के नेशनल अथवा नेशनलिस्ट शब्द रहे हैं। किन्तु भारतीय पृष्ठभूमि में सृजनात्मक साहित्य की इस विशिष्ट धारा का अनुशीलन करने के लिए इन पंक्तियों के लेखक को नेशनलिस्ट लिटरेचर के लिए राष्ट्रभक्ति साहित्य का प्रयोग ही अधिक व्यापक, तर्क संगत, अर्थगर्भित एवं ग्राह्य प्रतीत होता है, क्योंकि राष्ट्रीय चेतना जागृत करने के उद्देश्य से जो कुछ भी साहित्य के माध्यम से अभिव्यक्त हुआ है, उसके मूल में राष्ट्र के प्रति भक्ति का भाव ही प्रमुख है। राष्ट्रीयता की प्रमुख चेतना अपने देश के प्रति श्रद्धा एवं भक्ति की होती है और यही चेतना देश-भक्ति के रूप में उद्बुद्ध हो कर राष्ट्रभक्ति में परिणत होती है।

राष्ट्रीयता वस्तुतः एक राष्ट्र की आत्म-चेतना है। यही चेतना राष्ट्र को परतन्त्रावस्था में स्वाधीनता के लिए संघर्ष करने को प्रेरित करती है और राष्ट्रीय राज्य बन जाने पर उसकी शक्ति-वृद्धि की प्रवृत्ति तथा सम्मान की सूचक हो जाती है। इस प्रकार राष्ट्रीयता के अन्तर्गत एक राज्य के प्रति व्यक्ति का घनिष्ठतम सम्बन्ध निहित है। यह संबंध एक भू-भाग में बसने वाले जन-समूह का अपने राष्ट्र के प्रति भक्ति भाव है।[1]

---

1. शिवराम पाठक, आधुनिक हिन्दी काव्य में राष्ट्रीय चेतना का विकास, इलाहाबाद (1976) पृष्ठ-2

बहुधा देश-भक्ति और राष्ट्रीयता को भिन्न प्रवृत्ति के रूप मे समझा जाता है। किन्तु वस्तु-स्थिति यह है कि आदिम देश-भक्ति भले ही राष्ट्रीय चेतना से भिन्न रही हो, किन्तु वर्तमान देश-भक्ति और राष्ट्रीयता में कोई तात्विक अन्तर नही है। निकट अतीत की कुछ शताब्दियो मे देश-भक्ति राष्ट्रीयता के साथ संयुक्त हो गई है। इस प्रकार देश-भक्ति और राष्ट्र-भक्ति एक दूसरे के पर्याय हो गये हैं।[1]

राष्ट्र-भक्त का आराध्य उसके राष्ट्र की प्रतिमा है। इसीलिए उसका अर्चन, वन्दन, स्तवन और अनुराग राष्ट्र-भक्ति साहित्य मे स्वतः ही समाविष्ट हो जाता है। राष्ट्र-भक्त अपनी मातृभूमि को प्रेम करते है, अपने सहयात्री राष्ट्रवासियो का सम्मान करते है, विदेशी सत्ता के प्रति आक्रोश व्यक्त करते हैं, अपनी राष्ट्रीय उपलब्धियो पर गौरव अनुभव करते है, असफलताओ पर खिन्नता और खीझ प्रकट करते है, अपने अतीत की महिमा का बखान करते है और अपने स्वर्णिम भविष्य के प्रति आशान्वित होते है।[2] यह अनुराग, यह आक्रोश, यह श्रद्धा-भाव, यह गौरव, यह अभिमान, यह खिन्नता, यह खीझ, यह स्तुति-गान और यह आशा का भाव उसी एक केन्द्रीय राष्ट्रभक्ति-भावना के अंग है। अतः साहित्य में जहां-जहां ये भावनाएं अपने विभिन्न रूपों में व्यक्त हुई हैं, वह राष्ट्रभक्ति को ही प्रकाशित करती है। उपर्युक्त सभी प्रकार की भावनाएं एक तर्क संगत सीमा तक राष्ट्रवाद के उस सामाजिक एवं राजनीतिक तत्त्व की संवाहिका है, जो यूरोप के इतिहास में अठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दि के उत्तरार्द्ध में तथा भारत में उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम छोर और बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में उजागर हुआ है।[3] अतः इस राष्ट्रवाद से प्रेरित विभिन्न विधाओ मे जो भी साहित्य-रचना हुयी है, उसे भारतीय परिवेश में राष्ट्रभक्ति साहित्य की संज्ञा से ही अभिहित किया जाना उपयुक्त होगा।

राजस्थान की राष्ट्रभक्ति काव्य-धारा को सही परिप्रेक्ष्य में समझने के लिए यह आवश्यक है कि यहां उस राजनीतिक चेतना और उसके उत्तरोत्तर विकास की रूप-रेखा को स्पष्ट किया जाय, जिसके फलस्वरूप इस विशिष्ट कोटि के साहित्य का सृजन इस प्रदेश मे हुआ।

---

1. वही—पृष्ठ-3
2. नेशनेलिज्म : इन्टर प्रेटर्स एण्ड इन्टर प्रिटेशन्स (द्वितीय संस्करण) ब्वायडसी, शेफर, न्यूयार्क, (1963) पृष्ठ-4
3. नेशनेलिज्म इन इंडिया, निहार रंजन रे, अलीगढ़ (1973) पृष्ठ 18-19

स्पष्ट हो चुका था कि राजस्थान के राजा शान्ति एवं व्यवस्था बनाने रखने मे अक्षम हो चुके थे और इसके लिए वे अंग्रेजी सत्ता के मुखापेक्षी बने थे।[1] इन संधियो में औपचारिक रूप से कहा तो यह गया कि बाह्य आक्रमण की स्थिति में अंग्रेजी हुकूमत उनकी रक्षा करेगी और आन्तरिक मामलो में वे स्वतन्त्र रहेगे, तथापि व्यावहारिक रूप मे इस आश्वासन पर अधिक लम्बी अवधि तक आचरण नही किया जा सका।

1818 से 1857 के बीच

राजस्थान के प्रति अंग्रेजी सत्ता की जो नीति रही, वह कभी हस्तक्षेप की, कभी मौन धारण कर अपने हितों के प्रति जागरूक रहने की, कभी संरक्षण और सहयोग करने की और कभी अपनी शक्ति से आतंकित करने की थी। इसी प्रक्रिया से इन पिछले पांच दशको मे समूचा राजस्थान ब्रिटिश सत्ता के शिकंजे में आ चुका था। राजे-महाराजे नाम-मात्र के शासक रह गये थे। वास्तविक सत्ता ब्रिटेन के हाथो मे जा चुकी थी। तथापि इस बीच ऐसे अवसर भी आये जब कुछ स्वाभिमानी तत्त्वो ने जयपुर, जोधपुर, कोटा और भरतपुर में ब्रिटिश सत्ता के हस्तक्षेप का खुला विरोध किया। भले ही यह विरोध किसी व्यापक राष्ट्रीय भावना से अनुप्रेरित नही था, तथापि जनता और जागीरदारो के एक छोटे संवर्ग और कतिपय राजाओं का अन्तर्मन में निहित ब्रिटिश विरोधी आक्रोश का व्यंजक अवश्य था।

एक प्रकार से राजस्थान में राष्ट्रभक्ति काव्य-रचना के प्रारम्भिक प्रयत्न उन्नीसवी सदी के पूर्वार्द्ध में उस समय से ही दृष्टिगोचर होने लगते हैं, जब मराठों के आक्रमण और पिण्डारियों की लूट-मार से त्रस्त होकर राजस्थान के राजाओं ने ईस्ट इन्डिया कम्पनी से संधियां करके अपने आपको ब्रिटिश सत्ता को समर्पित कर दिया था। इन संधियों से एक ओर वे सामन्त असन्तुष्ट थे, जिनकी परम्परागत मर्यादाओं और हितो पर कुठाराघात हुआ था और दूसरी ओर समाज का वह प्रबुद्ध वर्ग क्षुब्ध था, जिसे अपनी समृद्ध सांस्कृतिक परम्पराओं एवं स्वर्णिम इतिहास पर गर्व था।[2] उन्होंने यह अनुभव कर लिया था कि अंग्रेजी प्रभुसत्ता के अधीन उनकी आन्तरिक स्वतन्त्रता, सामाजिक सुरक्षा, आर्थिक समृद्धि और विकास की संभावनाएं पूर्णतः नष्ट हो जायेगी और

1. वही, पृष्ठ–5, 7, 17
2. कृष्ण स्वरूप सक्सैना : पॉलीटिकल अवेकनिग इन राजस्थान

वे दोहरी दासता के जुए मे ग्रस्त आर्थिक शोषण, उत्पीड़न और दमन के शिकार हो जायेंगे ।[1] इन्हीं भावनाओं ने उनके अन्तर में उस आक्रोश को जन्म दिया, जिसकी सर्वप्रथम अभिव्यक्ति हमें उस युग के ओजस्वी चारण कवियों की रचनाओं में दृष्टिगोचर होती है ।[2]

यद्यपि अंग्रेज-विरोधी राष्ट्रीय चेतना से संपृक्त रचनाओं की अबाध परम्परा हमें उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध से ही प्राप्त होती है, तथापि 1857 के विप्लव एवं इससे पूर्व भी इसके दर्शन उस युग के ख्यातनामा चारण कवियों की डिंगल रचनाओं में हमें होते हैं ।

अठारह सौ सत्तावन के विप्लव से पूर्व भरतपुर पर दो बार अंग्रेजी फौजों ने आक्रमण किया, किन्तु बहादुर जाटों ने बहादुरी से मुकाबला करके उन्हें परास्त कर दिया । 1826 में किले की दीवारों को डाइनामाइट से उड़ाया । उस पर अधिकार करने से पूर्व पूरे 20 वर्ष तक भरतपुर का किला अंग्रेजों के लिए आकाश-कुसुम बना रहा । उधर जोधपुर के महाराजा मानसिंह ने 1818 में सन्धि करने से पूर्व न केवल मैत्री-संधि के प्रस्ताव को ठुकराया था, अपितु उस समय के कट्टर अंग्रेज-विरोधी जसवन्तराव होलकर, सिन्ध के अमीर और नागपुर के अप्पा साहब को सक्रिय सहायता और प्रश्रय प्रदान किया था । इतना ही नहीं, सन्धि पर हस्ताक्षर करने के बाद भी उसने अंग्रेजी सत्ता को अपने आन्तरिक प्रशासन में हस्तक्षेप करने की अनुमति नही दी और गवर्नर जनरल के प्रताड़ना-पत्रों की प्रायः अवज्ञा की । इससे उसकी अंग्रेज-विरोधी मनोभावना की व्यंजना होती है । इसके अतिरिक्त डूंगरपुर के महारावल जसवन्तसिंह को गद्दी से च्युत किये जाने पर हुई व्यापक प्रतिकूल प्रतिक्रिया, जोधपुर मे मिस्टर लठलो पर भीमजी राठौड़ का आक्रमण किया जाना और जयपुर में ए. ए. जी. मिस्टर ब्लैक की हत्या किया जाना आदि ऐसी घटनाएँ हैं जो विप्लव पूर्व ब्रिटिश-विरोधी भावनाओं की सूचक है । इन्हीं भावनाओं ने 1857 से पूर्व रचित राष्ट्रीय चेतना परक चारणी शैली के डिंगल गीतों मे अभिव्यक्ति पायी है ।

पूर्व विप्लव काल के इन विद्रोही चारण कवियों में बांकीदास, गिरवरदान, भोपालदान, नवलजी लालसी एव महेहू दूलजी आदि प्रमुख हैं। बांकीदास ने राज-पूत राजाओ को अपनी सत्यानाशी निद्रा से जागृत करने के लिए उद्बोधित किया ।

---

1. नाथूराम खड़गावत : राजस्थान ड्यूरिंग 1857
2. विजयदान देथा . गोरा हटजा ('परम्परा' विशेपांक)

अपने प्रथम उद्बोधन-गीत[1] में उसने कहा कि अंग्रेज हमारे मुल्क पर चढ़ आये हैं। देश की अस्मिता संकट में पड़ गयी है। जिस धरती को उसके स्वामियों ने मरकर भी दुश्मन के हवाले नहीं किया, वह आज स्वामियों की उपस्थिति में ही उनके हाथ से निकल गयी है, जैसे किसी सुहागन स्त्री ने पहले पति के जीवित रहते हुए ही दूसरे का सौभाग्य-चूड़ला पहन लिया हो। अरे ! जयपुर, उदयपुर और जोधपुर के अधिपतियों ! तुमने अपने सम्पूर्ण वंश-गौरव को मिट्टी में मिला दिया। धिक्कार है तुम्हें ! देश को गुलाम होना था और वह हो गया। जब आजाद होना होगा, तब हो जायेगा।[2]

बांकीदास ने जो आधुनिक अर्थों में राष्ट्रीय चेतना का संवहन करने वाले पहले कवि थे जिन्होंने समूचे राष्ट्र के निवासियों को संगठित होकर अंग्रेजों का विरोध करने और प्रतिशोध लेने को प्रोत्साहित किया।[3] इस सन्दर्भ में वे हिन्दी की राष्ट्रीय चेतना के काव्य के सूत्रधार भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से भी आगे थे।

लालस नवलजी ने जोधपुर के महाराजा मानसिंह द्वारा सन्धि-प्रस्ताव ठुकराने की प्रशंसा में गीत-रचना की और कहा कि यद्यपि अंग्रेजों के फरमानों ने देशी राजाओं को एक-एक करके बांट लिया है, तथापि अंग्रेजी हुक्मनामे को देखते ही अपनी मूंछों पर ताव देकर इस खरीते का उत्तर अपने बाहुबल से देने का निश्चय किया है। सारे देश को रौंदने वाले इन पराक्रमी अंग्रेजों को देश से बाहर निकाले बिना वह अब चैन से नहीं बैठेगा।[4]

लगभग इसी प्रकार की अंग्रेज-विरोधी भावनाएं उस युग के अन्य चारणों ने भी अपने काव्य में अभिव्यक्त की। 1857 के विप्लव में जब राजाओं ने अंग्रेजों का साथ दिया और कतिपय सामन्तों और सामान्यजनों ने मिलकर जब अंग्रेजी फौजों का मुकाबला किया, तो सूर्यमल्ल मिश्रण, बांकीदास, राघोदास, शंकरदान, जवानजी आढ़ा, सिंढायच बुधसिंह, बारहठ दुर्गादत्त, आढ़ा जदुराम, आसिया बुधजी, त्रिलोकदान, आढ़ा चिमनजी, गोपालदान दधवाड़िया, चैनजी बांगुर, लिखमीदान उज्जवल, भरतदान आदि चारण कवियों ने न केवल विप्लव में विद्रोहियों के शौर्य का वर्णन किया, अपितु उनके पूर्वजों के गौरवपूर्ण कार्यों

1. रावत सारस्वत, डिंगल गीत, पृष्ठ 3 से 7
2. वही
3. देवराज पथिक, हिन्दी की राष्ट्रीय काव्य-धारा, दिल्ली (1979) पृष्ठ 22
4. द्रष्टव्य—1. विजयदान देथा, गोरा हटजा

का बखान करके भी सुप्त स्वाभिमान को जागृत करने का प्रयत्न किया। जिन वीरों ने 1857 के विद्रोह में सक्रिय भाग लिया और जिन्होंने सहयोग दिया, वे सभी इन कवियो की प्रशस्तियों के विषय बने और जिन्होने विदेशियों का साथ दिया, उनके देश-द्रोह की तीव्रतम भर्त्सना की गयी।[1]

जहां तक जन-सामान्य में राष्ट्रीय चेतना जागृत कर सकने की सामर्थ्य का प्रश्न है, इन कविताओं की अपनी सीमा थी, क्योंकि मध्य युगीन चारण-परम्परा की डिंगल शैली में लिखी होने के कारण इनकी भाषा दुरूह और ऐसी शब्दावली में बद्ध थी, जो साधारण पाठक की समझ से बाहर थी। तथापि इन रचनाओं को राजस्थान में राष्ट्रीय चेतना के आरम्भिक स्तरों के ऐतिहासिक दस्तावेजों के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए।[2]

राष्ट्रीय पुनर्जागरण

सन् 1857 के विप्लव के बाद राजस्थान के राजनीतिक एवं सामाजिक क्षेत्र में किसी प्रकार की जागृति के कोई विशिष्ट चिन्ह दृष्टिगोचर नहीं होते। अंग्रेजी फौजों द्वारा विद्रोहियों के निर्मम दमन के कारण सारा प्रदेश पराभव की भावना से अभिभूत हो चुका था। तथापि राष्ट्रीयता की जो चिन्गारियां इस विप्लव ने सुलगायीं, वे पूर्णतः ठण्डी नहीं हुई थी। जैसा कि आगे के घटना-चक्र से स्पष्ट होगा, देश-प्रेम और अंग्रेज-विरोध की जो भावनाएं ऊपर से दमित प्रतीत हो रही थीं, अनुकूल समीरण का स्पर्श पाकर फिर से प्रज्ज्वलित हो उठीं।[3]

उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम दौर में जब आर्य-समाज आन्दोलन प्रारम्भ हुआ, तो राजस्थान भी उससे अछूता नहीं रहा। महर्षि दयानन्द जिन्होंने राजस्थान की अनेक यात्राएं की थी। यहां के जन-सामान्य ही नहीं, नरेशों में भी राष्ट्रीय भावनाएं जागृत करने में समर्थ हो सके। महर्षि ने स्वधर्म, स्वभाषा, स्वदेशी और स्वराज्य का जो मन्त्र दिया उसने जन-सामान्य के अन्तर में सुप्त राष्ट्रीय भावनाओ को झकझोर दिया।[4] आर्य समाज के कार्यकर्त्ता और प्रचारक

---

1. खड़गावत, राजस्थान ड्यूरिंग 1857
2. विजयदान देथा, गौरा हटजा।
3. पृथ्वीसिंह मेहता, हमारा राजस्थान
4. के. एस. सक्सेना, राजस्थान में राजनैतिक जन-जागरण

राजस्थान के हर क्षेत्र में पहुंचे और उन्होंने महर्षि का सन्देश जन-सामान्य तक पहुंचाया। स्वराज्य की प्राप्ति के लिए सामाजिक बुराइयो को समाप्त करने का अभियान चलाया गया। उदयपुर से महाराणा सज्जनसिंह के संरक्षण में कीर्ति सुदाकर साप्ताहिक का प्रकाशन और अजमेर से देश-हितैषी तथा राजस्थान समाचार, राजस्थान टाइम्स और राजस्थान पत्रिका आदि पत्रों का प्रकाशन भी प्रारम्भ हुआ, जिनमे राष्ट्रीय चेतना को जागृत करने वाली सामग्री का प्रकाशन अपने ही ढंग से होने लगा। जैसा कि सी. चार्ल्स ने अपनी पुस्तक "नेशनलिज्म एण्ड हिन्दू सोशल रिफार्म"[1] में उल्लेख किया है, आर्य समाज ने धार्मिक एवं सामाजिक सुधारों के साथ-साथ पूर्व गांधीयुगीन राष्ट्रवाद के लिए उपयुक्त भाव-भूमि तैयार की। निश्चय ही आर्य समाज आन्दोलन ने सामाजिक बुराइयों और अन्ध-विश्वासों के विरुद्ध जेहाद छेड़कर राष्ट्रवाद के पनपने के लिए उपयुक्त उर्वर क्षेत्र बनाने मे महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

आर्य समाज के भजन-गायक और प्रचारको ने सामाजिक सुधार, वर्तमान व्यवस्था की विसगतियों और सामाजिक परिवर्तन की अनिवार्यता पर देश-प्रेम से ओत-प्रोत रचनाओं को दूर-दराज देहातों तक पहुंचाया। उन्होंने राष्ट्र के प्रति एक नई निष्ठा, नई आस्था एवं नये सामाजिक उत्तरदायित्व का सन्देश दिया। जन-रंजन मे सक्षम संगीतमय एवं नाटकीय रचनाओ द्वारा उन्होने एक स्वतन्त्र राजनीतिक जीवन की आधार-शिला रखी। इस परिवेश में राजस्थान में राष्ट्र-भक्ति काव्य-धारा का भी अच्छा विकास हुआ।

सन् 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना और उसके फलस्वरूप उत्पन्न हुई राजनीतिक गतिविधियों ने भी जो चेतना जागृत की, उसका प्रभाव राजस्थान के प्रबुद्ध वर्ग और जन-सामान्य दोनों पर ही हुआ।

व्यापक आन्दोलनों का सिलसिला

वीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ मे बिजोलिया, वेगू, सीकर, बूदी, भरतपुर, अलवर आदि में जो कृषक आन्दोलन राजनैतिक कार्यकर्त्ताओ द्वारा सचालित किये गये, उन कृषक-आन्दोलनो ने भी राष्ट्रीय चेतना को जागृत करने में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की। आर्थिक शोपण, कुशासन, उत्पीड़न और सामन्ती दमन-चक्रों के विरुद्ध संचालित इन आन्दोलनों ने देश-प्रेमी कवियों की कल्पना को एक नया स्फुरण प्रदान किया, जिसके परिणामस्वरूप हिन्दी और राजस्थानी

1. सी. चार्ल्स, नेशनलिज्म एण्ड हिन्दू सोशल रिफार्म।

के कवियों ने भी राष्ट्रीय भावनाओं से ओत-प्रोत कविताएं लिखीं। दूसरी ओर राजस्थान में सौभाग्य से एक बड़े परिमाण मे ऐसे राजनीतिक कार्यकर्त्ता थे, जिनमें पद्य-रचना करने की सामर्थ्य थी। इन कार्यकर्त्ताओं द्वारा विपुल मात्रा में राष्ट्रीय चेतना जागृत करने वाली रचनाएं लिखी गई।

इधर पत्रकारिता के क्षेत्र में भी राष्ट्रवादी पत्र-पत्रिकाओ का उदय हुआ। अजमेर मे राजस्थान, नवीन राजस्थान और तरुण राजस्थान जैसे राजनीतिक साप्ताहिक प्रकाशित किये जाने लगे, तो जयपुर से समालोचक और झालावाड़ से सौरभ जैसे साहित्यिक पत्रों का संचालन भी होने लगा। इन पत्रों की राष्ट्रवादी नीति के फलस्वरूप भी राष्ट्रीय चेतना मूलक कविताओं की रचना इस काल में पर्याप्त मात्रा में हुई।[1]

राष्ट्रवादी आन्दोलन का उत्कर्ष

बंगाल के विभाजन के फलस्वरूप हुए देशव्यापी विरोध, उग्र राष्ट्रवादियो की गतिविधियों तथा भारत छोड़ो आन्दोलन एवं असहयोग आन्दोलन के प्रभाव से भारतीय राष्ट्रीय काव्य-धारा और अधिक सम्पुष्ट होने लगी और राजस्थान में भी इसका प्रभाव हुआ। राजस्थान के कवि और लेखक देशानुराग में डूबी राष्ट्रवादी भावनाओं को और अधिक मुखर होकर वाणी देने लगे।

बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में जब देश में राजनीतिक गतिविधियां और तेज होने लगीं, तो राजस्थान मे भी प्रजा-मण्डलो के तत्वावधान में राजनीतिक आन्दोलन अपने प्रखर स्वरूप मे संचालित होने लगे।[2]

सन् 1935 से 1947 का यह काल ऐसा था, जिसमें प्रचुर परिणाम मे राष्ट्रीय कविताएं लिखी गयी। 1937 में अजमेर से प्रकाशित हरिभाऊ उपाध्याय के संपादकत्व में संचालित त्याग-भूमि के माध्यम से सैकड़ों की संख्या में स्वाधीनता संग्राम से संबधित रचनाएं प्रकाशित हुई। इसी प्रकार राजस्थान के विभिन्न अचलो मे जो आन्दोलन हुए, उनके फलस्वरूप भी भारी संख्या में राष्ट्रीय कविताएं लिखी गई जो मौखिक तथा मुद्रित दोनों ही माध्यमो से जनसामान्य तक पहुंचीं।

---

1. डॉ. मनोहर प्रभाकर, राजस्थान में हिन्दी पत्रकारिता
2. लक्ष्मण सिंह, पॉलीटिकल एण्ड कॉन्स्टीट्यूशनल डवलपमेंट इन दी फॉर्मर राजपूताना स्टेट्स।

इस प्रकार लगभग एक शताब्दी के दौरान राजस्थान मे हिन्दी तथा राजस्थानी प्रभूत परिमाण मे राष्ट्रीय चेतना मूलक जिन कविताओं की रचना हुई, उनका वर्गीकरण स्थूल रूप से निम्न प्रकार किया जा सकता है :

1. देशानुराग की उद्बोधक रचनाएं
2 विद्रोह और विध्वंस की रचनाए
3. उग्र राष्ट्रवाद की रचनाए
4. अहिंसक राष्ट्रवाद की रचनाएं
5. राष्ट्रीय वीरों की प्रशस्तियां

उपर्युक्त प्रकृति की रचनाओ के अतिरिक्त सामन्ती अत्याचार, उत्पीड़न, आर्थिक शोषण, लाग-बाग और बेगार, प्रशासनिक क्रूरता, दमन और रियासती जुल्म-जबर्दस्तियों से संबधित रचनाए भी पर्याप्त संख्या में लिखी गई। यद्यपि इन रचनाओ का सरोकार स्थानीय घटनाओ और जन-आन्दोलनों से ही मुख्यतः है, किन्तु उनके मूल मे भी व्यापक राष्ट्रीय भावना से प्रेरित रचनाधर्मिता ही सन्निहित है।

विशुद्ध देशानुराग की उद्बोधक रचनाओ पर कुछ कहने से पूर्व राजस्थान मे चारणी शैली की जो रचनाएं उन्नीसवी शताब्दी के पूर्वार्द्ध मे अथवा अठारह सौ सत्तावन के संघर्ष के आसपास लिखी गयीं, उनके बारे मे भी संक्षिप्त उल्लेख करना अप्रासंगिक न होगा। उन रचनाओं मे यद्यपि अंग्रेज-विरोधी भावनाएं तो पर्याप्त रूप से विद्यमान थी, तथापि उनमें उस व्यापक राष्ट्रीय चेतना का अभाव था, जो आगे चलकर बीसवी सदी के पूर्वार्द्ध मे विकसित हुई। चारण कवियों की अधिकाश रचनाएं प्रशस्तिपरक डिगल गीतों की परम्परा मे लिखी गयी थी। इन रचनाओं का उत्स कवियो की निजी अनुभूति एव प्राचीन चेतना का संघर्ष न होकर परम्परा का अनुकरण मात्र था। वैयक्तिक अनुभूतियो के अभाव मे वे हमारी संवेदनाओ को जगाने मे अक्षम है। "रूढ़िगत शैलियो द्वारा संचालित इनकी व्यंजना मे भाषा और यथार्थ का सघर्ष नही, भाषा की भ्रामक चिरन्तनता ही परिलक्षित होती है। अधिकांश शब्द यथार्थ के बिम्ब-प्रतीक न रहकर यथार्थ के पूरक बन गये है। प्राचीन काव्य शैली और शब्दों मे निहित सामाजिक चेतना को उन्होंने अपने अनुभव से समृद्ध नही किया, बल्कि उसी में उन्होने अपनी अनुभूति को भी पा लिया।"[1] बदले हुए यथार्थ का उन्होने पुरानी चेतना से ही

1. विजयदान देथा, गोरा हटजा, चौपासनी (1956) पृष्ठ-41

साक्षात्कार किया और परिणामतः परम्परा और रूढ़ियों की जड़ता ने उनकी चेतना को भी निष्क्रिय बना दिया। इसी निष्क्रियता के कारण अतीत की विरासत को लेकर वर्तमान के यथार्थ को आत्मसात करते हुए वे युगानुकूल अभिव्यक्ति के संसाधनों को तलाशने में असमर्थ रहे। किन्तु इसके विपरीत बीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध में राष्ट्रीय चेतना से सम्पृक्त जो काव्य-धारा प्रस्फुटित हुई, उसने कवियों की निजी अनुभूति एवं संवेदना के कारण ऐसी अभिव्यक्ति एवं शिल्प को जन्म दिया, जो जन-मानस को प्रभावित करने में सक्षम थी।

इन रचनाओं में जहां एक ओर देश-भक्ति एवं स्वाधीनता-प्राप्ति की आकांक्षा के स्वर मुखरित हुए, तो दूसरी ओर विभिन्न राजनीतिक आन्दोलनों और लोक-जागरण की प्रवृत्तियों ने भी अभिव्यक्ति पायी। चेतना के विभिन्न स्तरों का स्पर्श करते हुए इन रचनाओं में गांधीवादी जीवन-दर्शन से प्रभावित विचारों को व्यञ्जित किया गया है, तो स्वाधीनता प्राप्ति के लिए शक्ति के प्रयोग का भी आह्वान किया गया है।[1] आगे चलकर रूस की क्रान्ति के बाद इन रचनाओं पर समाजवाद का प्रभाव भी देखा जा सकता है।[2]

राजस्थान में राजनीतिक चेतना और स्वाधीनता-संग्राम का स्वरूप भले ही ब्रिटिश शासित प्रदेशों से भिन्न रहा हो, किन्तु यहां के प्रबुद्ध साहित्यिकों, लेखकों और कवियों के समूचे सृजन को अपनी स्थानीय विशिष्टताओं के साथ भारतीय राजनीतिक एवं सामाजिक परिवेश में ही देखा जाना चाहिए, क्योंकि उनके दृष्टि-क्षेत्र में केवल राजस्थान ही नहीं, अपितु पूरे राष्ट्र की परिकल्पना थी।

इस सन्दर्भ में सबसे पहले हम देशानुराग की उद्बोधक रचनाओं को लेते हैं। इस संबंध में यह द्रष्टव्य है कि जब किसी भी देश में राष्ट्रीय चेतना का प्रादुर्भाव होता है, तो सबसे पहले उसकी अभिव्यक्ति देशानुराग के रूप में होती है। जब देश के निवासी अपनी पृथक् पहचान और विदेशी आक्रांता से भिन्न अपनी विशिष्ट सामाजिक, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक परम्पराओं को उजागर करने के लिए आकांक्षित होते हैं। उनका अपने अतीत के प्रति मोह-भाव जागृत होता है और वे अपने पुरखों के पुण्यों और उनके महान् कार्यों की कीर्ति-कथाओं का बखान करके अपनी वर्तमान दुर्दशा से उबरने को उत्कंठित होते है।[3]

---

1. सुवेश, आधुनिक हिन्दी और उर्दू काव्य की प्रवृत्तियां, दिल्ली (1974) पृष्ठ 245
2. वही पृष्ठ 246
3. गोविन्द प्रसाद शर्मा, नेशनलिज्म इन इन्डो-एंग्लीकन फिक्शन, पृ. 5-28

देशानुराग को उभारने वाली अतीत के गौरव-गान की यही प्रवृत्ति राजस्थान की राष्ट्रीय काव्य-धारा की प्रारम्भिक रचनाओं में देखी जा सकती है। इन रचनाओ का उद्देश्य देशवासियों के सुप्त गौरव को जागृत कर उन्हे वर्तमान की अधोगति से मुक्त होने की प्रेरणा देना है।[1]

राजस्थान में आधुनिक राष्ट्रीय धारा के सबसे पहले कवि गिरिधर शर्मा नवरत्न है, जिन्होने "मातृ-वन्दना" नामक अपने काव्य-संग्रह मे सर्वप्रथम संस्कृत के स्तवनो से प्रभावित देशानुराग की कविताओं को स्थान दिया। इस संग्रह की रचनाओं मे मातृभूमि की वन्दना अनेक रूपो मे हुई है। कभी कवि अपने अतीत के गौरव का स्मरण करता है, तो कभी वह देश-भक्ति में डूबकर देश-हित के लिए अपने आपको समर्पित करने का संकल्प करता है। भारत के गौरव पूर्ण अतीत का स्मरण करते हुए कवि एक स्थान पर कहता है :

कौन महारानी लक्ष्मी सा था युद्ध वीर ?
कौन माता अहिल्या सा कहीं दानवीर था ?
जाकर विलोके जाति-जातियो का इतिहास
आर्य जाति तेरे जैसा किसमे खमीर था ?[2]

इसी प्रकार "जय देश" नामक एक अन्य रचना में वह भारत को "वेदोद्‌गाता–भाग्यविधाता" कह कर उसके महिमा मंडित सांस्कृतिक वैभव का स्मरण कराता है।[3] विभिन्नता में अभिन्नता के दर्शन कराता हुआ, वह देश की भौगोलिक एकता को राष्ट्रीय एकता के रूप मे चित्रित करता है :

पंजाबी गुजरात निवासी
बंगाली हो या ब्रजवासी
राजस्थानी या मद्रासी
सबके सब है भारतवासी
तेरे सुत प्रिय देश !
जय देश ! जय देश ![4]

---

1. वही
2. राजस्थान के कवि पृष्ठ-88
3. राजस्थान के कवि पृष्ठ–88
4. सुधीन्द्र, हिन्दी कविता मे युगान्तर, दिल्ली (1950) पृष्ठ–247

देश को सर्वस्व समझ कर उसके हित "राम की दुहाई" देकर जब जीने और मरने की प्रतिज्ञा करता है, तो उसका देशानुराग अपने प्रखरतम स्वरूप में उजागर होता है। वह कहता है :

> मेरा देश, देश का मैं, देश मेरा जीव प्राण
> मेरा सम्मान मेरे देश की बड़ाई में।
> जीऊंगा स्वदेश हित, मरूंगा स्वदेश काज
> देश के लिए न कभी करूंगा बुराई मैं।
> भीषण, भयंकर प्रसंग में भी भूल के भी
> भूलूंगा न देशहित राम की दुहाई मैं।
> जब लौं रहेगी सांस सर्वस्व छुटाय दूंगा
> देश को भी झुका लूंगा देश की भलाई में।[1]

कवि का अन्तर देशानुराग की भावनाओं से इतना अभिभूत है कि वह केवल देश-प्रेम के रंग में ही डूबे रहना चाहता है, क्योंकि उसकी दृष्टि में दूसरे सभी रंग भंग होकर डूब जाते है। वह अपना सर्वस्व देश पर न्यौछावर कर देना चाहता है :

> चर्चा जहाँ देश की हो, मेरी जीभ वही खुले
> और नही खुले कही खुदा की खुदाई में।
> मेरे सुने कान, गान सांचे देश-भक्तन के
> और गान आवें कभी मेरे न सुनाई में।
> मेरे अंग रंग चढ़े एक देश-प्रेम को ही
> और रंग-भंग होके बूड़ जात राई में।
> मेरो धन, मेरो तन, मेरो मन, मेरो जीव
> मेरो सब लगे प्रभु देश की भलाई मे।

नवरत्न जी के समकालीन कवि प्रताप नारायण पुरोहित यद्यपि प्रधानत: राष्ट्रीय चेतना के कवि नही है, तथापि उन्होंने भक्ति एवं नीति विषयक अपनी रचनाओं के साथ स्फुट रूप में देशानुराग को व्यक्त करने वाली रचनाएं भी लिखी है। मातृभूमि की एक स्तुति में वे भारत भूमि की प्रशस्ति करते हुए उसे विष्णु-लोक के सदृश पवित्र मानते हैं और उसकी रक्षा के लिए अपनी देह को भी नगण्य मानते है।[2]

---

1. स्वराज्य गीतांजलि, भाग–1, पृष्ठ–2
2. प्रताप नारायण पुरोहित, मन्दाकिनी, पृष्ठ–3

साथी पुरखज रै पथ चाल ।
जिण पथ कुंभा, सांगा, पातल
चांपा, कूंपा, गोरा-बादल
दुरगादास शिवाजी, सिहा पृथ्वीराज छत्रसाल ।

हाड़ौती के कवि मांगीलाल भव्य वीर प्रसविनी भारत भूमि की वन्दना करते हुए उसके सात्विक स्वरूप का चित्रांकन प्राचीन ब्रज भाषा काव्य परम्परा से ग्रहण किये हुए प्रतीको के सहारे इस प्रकार करते हैं :

क्रोध को भुजंग विष दारन मनौ है मणि
वीर प्रसविनी देश भाग्य प्रतिहारी है ।
ठौर बज्र गोला मृदु बैनों से डिगा दे मेरु
नैन ग्रांसुग्रो से पिघला दे बज्र भारी है ।
दैवि नम्रता से जय पाले केशरी पै चढ़
मोह में विजेता मानो कृष्ण चक्रधारी है ।
भाग्य की विधाता देश मान शानदाता यही
विश्व प्राणदाता ये हमारी महतारी है ।[1]

मातृभूमि के ग्रर्चन, ग्राराधन, पूजन, स्तवन एवं स्तुति में जिन कवियों ने वन्दना गीत लिखे, उनमें राजस्थानी भाषा के उन सृजन-धर्मियों का भी सक्रिय योगदान है, जिनकी रचनाओं ने अपनी हृदयग्राही शैली के कारण लोकगीतों का स्वरूप ग्रहण कर लिया । देश की ग्रतीत की प्रशस्ति करते हुए ऐसे ही एक जन-कवि ने पूर्वजों के गौरवपूर्ण पथ का ग्रनुसरण करने का आग्रह किया है । देशानुराग के इन गीतो का एक पार्श्व यह भी है कि कवि भारत की वर्तमान स्थिति को देखकर क्षुब्ध होता है, किन्तु उसके उद्बोधन ग्रौर जागरण का स्वर उठाकर अपनी ग्राकांक्षा ग्रभिव्यक्त करता है । इस प्रकार के उद्बोधन-गीतों के गायकों के रूप मे सुधीन्द्र का नाम ग्रग्रणी है । 'शंख-नाद', 'जौहर' और 'प्रलय-वीणा' काव्य-संग्रहो मे सुधीन्द्र के ऐसे ग्रनेकों गीत संकलित हैं । देशवासियों को उद्बोधित करते हुए 'शंखनाद' में एक स्थान पर कवि कहता है :

देश-दशा को देख अब, हे भारत संतान जगो ।
पतित-दलित पीड़ित स्वदेश के अहो ग्रजर वरदान जगो ।
माँ को रोता देख ग्राज भारत के हृत अभिमान जगो
शंखनाद सुनकर अब तो नत, हत्, मृत, निष्प्राण जगो ।

---

1. राजस्थान साहित्य अकादमी संग्रह से

उद्‌बोधन के ये स्वर कभी वर्तमान के प्रति विक्षोभ की व्याकुलता से भरे होते है, तो कभी वे अतीत के स्वर्णिम इतिहास का स्मरण दिलाकर प्राणों में प्रेरणा भरते है :

उठ-उठ मेरे वन्दनीय, अभिनन्दनीय भारत महान् ।
जूझे उठ राजस्थान आज
हल्दी घाटी का लिए दाप ।
पद्मिनी अंगना का जौहर
वप्पा प्रताप का ले प्रताप ।[1]

सुधीन्द्र ने ही अपनी 'पांचजन्य' शीर्षक रचना में देश के महिमा मंडित सांस्कृतिक वैभव का स्मरण करते हुए विदेशी आततायी को मिटा देने के लिए कृत संकल्प भारत की जागृत आत्मा का चित्रण इस प्रकार किया है :

रे, यह क्या युग से जड़ीभूत
जागरूक आज है शैल राज ।
छूने को ऊँचा आसमान
उठ रहा उच्छ्वसित उदधि आज ।
है तक्षशिला से सेतबन्धु
तक हुई लहर सी प्रवह्मान !
कैलास, विन्ध्य, नर्मदा, सिन्धु ।
हो उठे अचानक प्राणमान ।

इसी प्रकार वर्तमान को सम्बोधित करते हुए वह प्रलय का आह्वान करता है और अपनी कविता में रुद्रगीत के अग्निवर्षक अक्षरों के भर जाने की कामना करता है :

वजे नवल नवयुग का डमरू
गीत किंकिणी का जाये भर !
वजे आज कवि की कविता मे
रुद्रगीत का अक्षर-अक्षर !
नाचो-नाचो ओ प्रलयंकर
ओ शिवशंकर, ओ विश्वंभर ।

---

1. शंखनाद, पृष्ठ–35

नाचो ओ अतीत के गौरव
नाचो भावी के प्रकाश-घर ।[1]

उपर्युक्त उद्धरणों से इस निष्कर्ष पर पहुँचा जा सकता है कि सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की संवाहिका के रूप में जो काव्य-धारा प्रवाहित हुई, उसका मूल स्वर अतीत की गौरव-गाथा है । कवि अतीत की इस भाव-भूमि पर ही वर्तमान की कर्मवादी राष्ट्रीय चेतना का शंखनाद करता है और अपने उद्बोधन गीतों द्वारा देशवासियों को जागृत करने का प्रयास करता है ।

उद्बोधन-गीतों की इसी श्रृंखला में अलवर अंचल के देश-भक्त कवि हरनारायण शर्मा ने अपने एक जागरण-गीत में भारतवासियो का इस प्रकार आह्वान किया है ।[2]

उठो-उठो हे जागृत भारत, लेकर यश की अमर कहानी,
तुझमें जागे नई जवानी, तुझमे जागे आग पुरानी ।
गूँज रहा उत्तर में हिमगिरी, लहर उठा दक्षिण का सागर,
कांप गया पश्चिम का कोना, गरज पड़ा प्राची का अम्बर
उभर उठी हूँकार देश की, हँस-हँस जीवन भेंट चढ़ाएँ ।
जाग रहा जनता में जीवन, जीवन में फिर ज्योत जलाएँ ।।

अतीत-दर्शन, मातृभूमि के स्तवन एवं देशार्चन की रचनाएँ निश्चय ही विद्वानों द्वारा राष्ट्रीय चेतना के सांस्कृतिक पक्ष के अन्तर्गत परिगणित की गई हैं, तथापि इन रचनाओ में युग की राजनीतिक हलचलों की प्रतिक्रिया का लगभग अभाव है । वस्तुतः ये रचनाएँ राष्ट्रवादी चिन्तन की पूर्व चेतना का ही आभास मुख्यतः कराने में समर्थ है । तथापि अपने आप में इनका महत्त्व किसी भी प्रकार कम नही, क्योंकि इन्ही के माध्यम से देशानुराग की भावना हुई, जिस पर भावी संघर्ष की व्यूह-रचना का निर्माण किया गया ।

विद्रोह और विध्वंस की रचनाएँ

राष्ट्र के सांस्कृतिक वैभव की प्रशस्तियो द्वारा राष्ट्रीय चेतना को उद्बुद्ध करने वाली देशानुराग की प्रारंभिक कविताओ के दौर के समाप्त होने पर

---

1. सुधीन्द्र, प्रलय वीणा, पृष्ठ–8
2. लेखक के व्यक्तिगत संग्रह से

उत्तरोत्तर बढ़ती हुई राजनीतिक जागृति के परिणामस्वरूप काव्य में विद्रोह और विध्वंस के स्वर मुखरित हुए।

जब एक राष्ट्र जागृत होता है, तो वह विदेशी सत्ता के क्रूर कार्य-कलापों का प्रतिरोध करने को कटिबद्ध होता है। वह शासन की राष्ट्रीयता विरोधी प्रवृत्तियों का विरोध करता है और अपने आत्म-बल को संजोकर उस संघर्ष की राह पकड़ता है, जिसके सफल हो जाने पर परतन्त्रता के पाश से मुक्ति मिलती है। देशानुराग की परवर्ती रचनाओं में इसी संघर्ष के विभिन्न सोपानों को तलाशा जा सकता है, क्योंकि अतीत की स्वर्णिम पृष्ठभूमि पर वर्तमान का उज्ज्वल प्रासाद स्थापित करने की जब कामना की जाती है और वह कामना जब यथार्थ की भावभूमि से टकराकर चूर होती है, तो क्षोभ एवं आक्रोश विद्रोह और विध्वंस की वाणी में परिवर्तित होता है।

राजस्थान के राष्ट्रीय चेतना परक काव्य में यह स्वर बीसवीं शताब्दी के चतुर्थांश से प्रारंभ होकर पूर्वार्द्ध की समाप्ति तक निरन्तर दृष्टिगोचर होता है। उसमें राष्ट्रीय जीवन के प्राणों का एक ऐसा स्पन्दन है, जो कहीं जन-जीवन के आकुल कंठ की पुकार को प्रतिबिम्बित करता है, तो कहीं स्वतन्त्रता के लिए बलिदान हो जाने में जीवन की सार्थकता को व्यञ्जित करता है।

विदेशी प्रभुसत्ता के प्रति विद्रोह को वाणी मिली सर्वप्रथम उन रचनाओं में जो अंग्रेजों के कार्य-व्यापारों की भर्त्सना एवं निन्दा करने के लिए लिखी गई। देशवासियों के हृदय में अंग्रेजों के प्रति आक्रोश एवं विद्रोह उत्पन्न करने के लिए यह आवश्यक था कि उनकी कुटिल नीतियों और इरादों का पर्दाफाश करके उनके प्रति असम्मान की भावना पैदा की जाती। इसी आवश्यकता की पूर्ति के लिए इन रचनाओं का जन्म हुआ, जिनमें यह कहा गया कि गौरांगों की शोषक नीति से राष्ट्र खोखला हुआ जा रहा है और देश का धन विदेश की ओर प्रवाहित हो रहा है। कवि शंकर दान सामोद ने अपने गीतों में अंग्रेजों की नियत का भण्डाफोड़ किया। 'अंग्रेज री नीत' शीर्षक अपने एक गीत में उन्होने कहा कि ये अंग्रेज पूरे व्यवसायी हैं, वे अपना हर कदम लाभ और हानि को देखकर आगे बढ़ाते हैं। ये अंग्रेज जो व्यापार करने आये थे, मौका पाकर यहाँ के शासक बन बैठे हैं। इन्होंने अवध की बेगमों को दिन-दहाड़े तिरस्कृत किया और हिन्दुस्तान की फौजों को अपने स्वार्थ के लिए खपा दिया। अरे अंग्रेजों! अपनी सफाई मत दो, थोड़ी तो शर्म करो। उन्होंने कहा :

वाणीजां नीत हित देस जांणी बुरी,
नफै हुं भलो ओ बुरो नापै।
कुलखणां देस हित काज करसी किसा
दुख्यां री लूट हूं नंह धापै।
विणज रो नांवले आया वण बापड़ा
तापड़ा तोडियो राज तांई।
मोको पा मुगलां रो भाण जिण मारियो
पेखो थां कुण क्यां समझ कांई॥
धोलै दिन देखतां नवाबी धुजाई
सताई बेगमां अवध सांई।
खोडलां फौज हिन्दवाण री खपाई
सफाई नांखो मती सरम खाई।[1]

उन्होंने आह्वान किया कि सब लोग अपने भेद-भाव मिटा कर अंग्रेजों के साथ संघर्ष करें। मुसलमान, राजपूत, जाट, सिख, मराठे आदि सब मिल कर युद्ध करें ताकि मुल्क के ये मीठे ठग वापस पलायन कर जायें :

मिल मुसलमाण, राजपूत औ मरेठा
जाट-सिक्ख पंथ दृंड जबर जुड़सी।
दौड़सी देसरा दव्योड़ा दाकल कद
मुलक रा मीठा ठग तुरत मुड़ सी॥

इसी प्रकार की भर्त्सना के स्वर राव गोविन्दसिंह ने अपने गीतों में मुखरित किये। उन्होंने सामन्तों और जनता दोनों की दुर्बलता की ओर संकेत करते हुए गुलामी के पिंजड़े को तोड़कर मुक्त हो जाने की प्रेरणा दी :

भारत प्यारा रे, आजादी का रंग में रंगजा भारत प्यारा रे !
भारत प्यारा रे, तोड़ गुलामी पींजड़ा ने भारत प्यारा रे !
अंग्रेजां की कांई हकूमत, व्यापारी ये लोग।
कम्पनी[2] कानी सूं ये भोग रह्या छै भोग॥
राजा भी सब बण्या बावला पड्या पींजड़े भोग।
देश बीच बेकारी फैली, बढ़यो गुलामी रोग॥[3]

---

1. लेखक के व्यक्तिगत संग्रह से।
2. कम्पनी शब्द यहां अंग्रेजी राज के पर्याय के रूप में ही प्रयुक्त हुआ है।
3. श्री रावत सारस्वत के सौजन्य से प्राप्त।

कवि अक्षयसिंह रत्नू ने अंग्रेजों को सम्बोधित करते हुए आगाह किया कि इस भारतवर्ष रूपी खेत के रक्षक जाग पड़े हैं। अब उसे उन्मत्त गदर्भ और अधिक दिनों तक चर कर नष्ट नहीं कर सकते। अपने जागरण-गीत में उन्होंने अंग्रेजों को इन शब्दों में ललकारा :

भागो-भागो रे अंग्रेजों, सोचो देश विराना है !
जब तक मालिक नहीं संभाले—चरते खेत गधे मतवाले
अब तक जाग पड़े रखवाले—मुश्किल खाना है।
अब जनता तुमसे नहि राजी, अब न चलेगी धोखे बाजी
खुल गई पोल ढोल की बाजी, अब तो जाना है।[1]

महाप्राण गीतों के गायक कवि सुमनेश जोशी ने विदेशी सत्ता को ललकारते हुए उस जागरण का उद्घोष किया, जो जनता-जनार्दन के हृदय में हो चुका था। उन्होंने प्रश्न किया :

रोक ले तूफ़ान
ऐसा कौनसा बल है तुम्हारा ?
कब रुका है ज्वार, सागर के हृदय में उमड़ता जो
कब रुका है गगन में घनश्याम घिर कर घुमड़ता जो
कब रुका भूकम्प, जिससे धरणि धूजे शेष डोले
कब रुका है प्रलय, शंकर ने नयन जब तीन खोले
नियति इनको रोक ले
ऐसी न उसके पास कारा ?[2]

चूंकि राष्ट्रीय काव्य-धारा देश की राजनीतिक परिस्थितियों का ही भाव-प्रवण प्रतिबिम्ब है, उसमें युग के स्पन्दन को पूरी तरह अनुभव किया जा सकता है। स्वाधीनता-संग्राम के दौरान एक स्थिति ऐसी उत्पन्न हुई, जब एक ओर लोकमान्य तिलक के क्रान्तिकारी विचारों का राष्ट्र के प्रबुद्ध वर्ग पर अमिट प्रभाव पड़ रहा था और दूसरी ओर महात्मा गांधी का जीवन-दर्शन अपनी तेजस्विता से राष्ट्रीय क्षितिज को उद्भासित कर रहा था। परिणामतः राष्ट्रीय काव्य-धारा भी इस दौर में पहुंच कर दो रूपों में आगे बढ़ती हुई दृष्टिगोचर होती है। उग्र राष्ट्रवाद के समर्थक कवि विप्लव, क्रान्ति और प्रलय के गीत गा

1. अक्षयसिंह रत्नू से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त
2. कृपया देखें सुमनेश जोशी कृत राजस्थान के स्वाधीनता सेनानी

रहे थे, जबकि गांधीवाद से प्रभावित कवि सत्य, अहिंसा के माध्यम से संग्राम करने की नीति का प्रतिपादन कर रहे थे। किन्तु इस तथ्य से भी इन्कार नही किया जा सकता कि कही-कही गांधीवाद के तेजस्वी प्रभाव से उग्रनीति के समर्थक कवि भी मुक्त नही रह पाये है, जबकि अनेक स्थानों पर गांधीवादी राष्ट्रीयता के गायक कवियों ने भी क्रान्तिकारी कविताओं का सृजन किया है।

उग्र राष्ट्रवाद की रचनाएं

जहाँ तक राजस्थान का सम्बन्ध है, उग्र राष्ट्रवाद की समर्थक राष्ट्रीय कविताएं यहाँ प्रचुर परिमाण में रची गई। इसका मूल कारण यह है कि इस प्रदेश मे वीर रसात्मक साहित्य की एक दीर्घ परम्परा थी, जो प्राणों का मोह त्याग कर युद्ध-स्थल मे जाने और विजय-श्री वरण करने की प्रेरणा देने वाली थी। वर्तमान युग के कवि लोग जहां इस परम्परा से प्रभावित थे, वहां इस वीर भूमि के श्रोताओं और पाठकों को भी इसी पृष्ठभूमि के कारण कदाचित् यही स्वर रुचिकर लगते थे। किन्तु यहां के साहित्य में उग्र राष्ट्रवाद से प्रेरित होकर सशस्त्र क्रान्ति का उद्घोष करने वाली कविताओ के साथ रचनाएं भी हैं, जो गांधीवादी जीवन-दर्शन से प्रभावित सत्य और अहिंसा के अस्त्रों से संघर्ष करने का सन्देश देती है। सिद्ध कवियों से लेकर सामान्य पद्यकार तक सभी की रचनाओं में यह स्वर मिलता है। आर्य समाजी विचारधारा से प्रभावित एक कवि शीतलचन्द्र "शीतल" अंग्रेजों के विरुद्ध सशस्त्र क्रान्ति का आह्वान निम्न शब्दों में करते हैं.

> तू युद्धवीर बन वेद कहे गुँजार।
> बिना युद्ध के किसी देश ने कहां राज्य श्री पाई है ?
> युद्धवीर लोगो ही ने जय-ध्वजा सदैव उठाई है।
> तलवारों से मुल्कों की बिगड़ी तकदीर बनाई है,
> दुश्मन के खूनों से रणचण्डी की प्यास बुझाई है।
> युद्धवीर के चरणों की ठोकर दुनियां ने खाई है,
> युद्धवीर ने शासन कर जग को सभ्यता सिखाई है ॥[1]

वीर-व्रत का इसी प्रकार आह्वान एक अन्य कवि ने किया है। पहाड़ी चट्टानो, कांटो की दीवारो, ओलो की झड़ियो और विधि की उल्टी रेखाओं के बावजूद

---

1. कविवर शीतलचन्द्र 'शीतल' गौरवगान (सांभर झील-मारवाड़) पृष्ठ-11

वीरव्रत पर दृढ़ रहने का सन्देश इस कविता में उस युग के राष्ट्रवादी साप्ताहिक "नवीन राजस्थान" के माध्यम से दिया गया है :

वीर-व्रत पर दृढ़ रहो नवीन ।
विपत्तियों के ये धन क्षण में होगे तेरह-तीन !
पथ रोके गिरि श्रेणी खड़ी हों, कांटों की दीवार अड़ी हो
ओलों की लग रही झड़ी हों, विधि की उल्टी देख पड़ी हों
तदपि न तू निज व्रत-पालन मे होना साहस-हीन ।।[1]

मातृभूमि की मुक्ति के लिए "बलिवेदी" पर चढ़ने की कामना कवि निरंकुश ने इन शब्दों में की है :

चढ़ लेने दे हृदय आज बलिवेदी पर चढ़ लेने दे
वीर भूमि की धूलि धरै शिर, भाव सैन्य को बढ़ने दे
पूर्ण शक्ति से उन्हें क्रान्ति के गिरि पर निर्भय चढ़ने दे
शुद्र शक्ति को समर भूमि में दिल भर खूब विचरने दे
असिधारा में पड़ परवशता सर से पार उतरने दे
क्या परवाह डूब जायगा, मरना है, मर जाने दे
माता हित मिट जाने वाला, में तो नाम लिखाने दे ।।[2]

वागड़ प्रदेश के जुझारू कवि चतुर्भुज आजाद भी उपरोक्त स्वर मे ही अपना स्वर मिलाते है । उनकी कामना यही है कि :

कुर्बानी का जीवन हो बस और मौत हथियार रहे
बलिवेदी पर जाने वाले, मरने को तैयार रहें
होय बगावत ऐसी वीरों, जुल्मी शासन मिट जाये
आजादी के दीवानों पर रंग केसरी चढ़ जाये ।।[3]

स्वाधीनता-संग्राम-काव्य के रचयिताओ मे अपेक्षतया अज्ञात कवियित्री शान्तिदेवी ने भी स्वतन्त्रता-प्राप्ति के लिए रजत-क्रान्ति का ही आह्वान किया है । उनकी मान्यता है कि रक्त बहाये बिना स्वत्व का मिलना असंभव है । स्वदेश पर प्राण देने में ही उन्हे जीवन की सार्थकता का बोध होता है :

1. नवीन राजस्थान, 28 जनवरी, 1923; पृष्ठ-6
2. नवीन राजस्थान, 28 जनवरी, 1923
3. लेखक के व्यक्तिगत संग्रह से

रक्त बहाये बिना जगत में नही किसी को स्वत्व मिला,
और प्राण भय से छिपने से किस-किस को अमरत्व मिला,
इच्छापूर्वक जीने का भी जग में किसे महत्व मिला,
प्राण दिये जिसने स्वदेश पर उसको जीवन तत्व मिला ।।

हाड़ौती अंचल के कवि जगदीश देश की परतन्त्रता के प्रति द्रोह का अपना धर्म समझते हैं और तोप और तलवार का सामना करने के लिए सन्नध होकर समरांँगण मे अपना डेरा बसाते है ।

द्रोह करना धर्म है अब देश की परतन्त्रता पर
वर्ष सौ तक हम लड़ेंगे देश की स्वाधीनता पर,
तोप अरु तलवार से डर कर न हम पीछे हटेंगे
बम गोलियो को देखकर तो और दूने ही बढ़ेंगे,
देश की स्वाधीनता पर प्राण हँस-हँस कर तजेंगे
हन्टरों की मार से तो गान बन्दे के कहेंगे,
अमर हो यह क्रान्ति सुन्दर है समर मे आज डेरा ।।

राजस्थान में जन-क्रान्ति के सशक्त गायक और स्वाधीनता सैनानी गणेशीलाल व्यास 'उस्ताद' देश को काजी नजरुल इस्लाम के स्वर में सम्बोधित करते है । वे राजस्थान की शौर्य परम्परा मे देश के लिए सिर हथेली पर लेकर आजादी के दीवानो की फौजो के कूच का उद्घोष करते है :

मातृभूमि का ऋण उतारने के लिए सिर का सौदा करने की आकाक्षा रखने वाले उन समर्थ सैनानियो को मस्तक की कुर्बानी देने की वे अनिवार्यता मानते है :

मुलक ने मोट्यारां माथा देणा पड़सी
देश नै मोट्यारां माथा देणा पड़सी
बीत गयो जूनो जुग सारो, बदल रयो दुनियां रौ धारो
जुग नै हाथ लगावौ !
सिर सौदे री साध सपूतां, पूरी किण विध होगी सूता
जागो जगत जगावो !
आवो अपणो देस उबारां, भारत मा रो भार उतारां
सिर दे नाक बचावो ![1]

---

1. जन कवि उस्ताद–संपादक रावत सारस्वत, पृष्ठ 39

राजस्थान के लोकनायक और राजस्थानी के समर्थ कवि जयनारायण व्यास, जिन्होंने मारवाड़ में जन-जागरण का शंख फूंका और देश के स्वाधीन होने पर राज्य के मुख्यमंत्री का पद संभाला, भी अपने अन्तर्मन से उग्र राष्ट्रवाद के ही समर्थक प्रतीत होते हैं। उन्होंने अपनी रचना 'सपूतां नै ललकार' में मध्ययुगीन चारण कवियों की तरह मातृभूमि के वीरों को मां का दूध न लजा कर युद्ध-स्थल में ही खेत रह जाने की प्रेरणा दी है। वे कहते हैं कि जिस धरती के धान ने इस शरीर को प्रबल बनाया है, उसे पराधीनता के पाश से मुक्त करने के लिए प्राणों का उत्सर्ग भी वरण करने योग्य है :

मत दूध लजाइजे पाछो मत आइजे बेटा राड़ सूं।
जिण धरती रै धान सूं, ओ परबल बण्यो सरीर ॥
उण धरती पर दुखड़ो पड़ियो, वीर न छोड़े धीर।
पाछो वलजे जीत नैं थूं, या रहिजे रण खेत।
जा बेटा मैदान में अब, तज दे घर रौ हेत ॥[1]

अपनी पुरानी आन-बान और शौर्य की इसी परम्परा का स्मरण कराते हुए 'अग्नि वीणा' के गायक कन्हैयालाल सेठिया ने राजस्थान के वीरों को ललकारते हुए उनसे प्रश्न किया :

कभी विजय में बदलेगी क्या बता तुम्हारी हार ?
या लटकेगी खूंटी पर ही तेरी यह तलवार ?

किन घड़ियों में बेसुध सोये
मारवाड़ के पूत
पराधीन तुम, देश तुम्हारा
जो बांके रजपूत
बता कहां किशरिये बाने
कहां तुम्हारे साज
कितने दिन तक ढँकी रहेगी
इन चिथड़ों की लाज
अरे उतारोगे क्या मां का जो तुम पर ऋण-भार ?[2]

---

1. राजस्थान साहित्य अकादमी संग्रह
2. कन्हैयालाल सेठिया, 'अग्निवीणा', पृष्ठ 14-15

यहां तक कि गांधीवादी विचारधारा के प्रबल समर्थक कवि सुधीन्द्र ने भी "इन्कलाब–जिन्दाबाद" का उग्र स्वर अपनी कतिपय रचनाओं में प्रतिध्वनित किया। स्वतन्त्रता रूपी प्रेयसी का वरण करने की उनकी उद्‌भावना चारण-कवियों की उस कल्पना के अधिक निकट प्रतीत होती है, जिसके अनुसार युद्ध-भूमि में वीरगति पाने वाले शूरों को अपने बाहुपाश मे बांधने के लिए सुरलोक की अप्सराएं व्याकुल होती है। उनका कथन है :

अपने ही शोणित का तुमने फाग कभी क्या खेला है
चलो शहीदो स्वतन्त्रता के पुण्य समर की वेला है,
बंधे रहोगे कब तक वीरो प्रणय-पाश अलकाली में
रंगे रहोगे कब तक शूरों प्रेम-सुरा की प्याली में,
स्वतन्त्रता प्रेयसी तुम्हारी खड़ी विजय माला लेकर
कब तक फंसे रहोगे तुम इस परवशता की जाली में,
इन्कलाब युग के पुकार की यह कैसी अवहेलना है ।।[1]

अहिंसक राष्ट्रवाद की रचनाएँ

जैसा कि अन्यत्र कहा जा चुका है, कर्मवीर गांधी ने सत्याग्रह और असहयोग द्वारा राष्ट्रीय जीवन को स्वाधीनता का एक नया मन्त्र दिया। उनकी सबसे बड़ी उपलब्धि यह थी कि उन्होंने स्वतन्त्रता की ज्वाला को अभिजात वर्ग से लेकर पूरे जन-समाज के बीच विकीर्णित कर दिया। एक प्रकार से वर्ग विशेष का आन्दोलन उन्हीं के दिशा-निर्देश से जन-आन्दोलन बना और राष्ट्रीय नेताओं की मंच-ध्वनि को जन-ध्वनि बनाकर जनता को अपने साथ लेकर मर मिटने की आकाक्षा करना गांधी ने ही सिखाया।[2]

दादा भाई नौरोजी, फीरोजशाह मेहता, गोपाल कृष्ण गोखले और बाल गगाधर तिलक सभी की आवाज जानी पहचानी थी, किन्तु गांधी की आवाज का अन्दाज सर्वथा नया ही था, जिसने सारे देश पर अपना जादू किया और परिणामतः साहित्य जगत् भी उससे अछूता न रहा। गांधी की वाणी के इस सम्मोहन के बारे मे प० जवाहर लाल नेहरू लिखते है :

"उसकी आवाज औरो की आवाज से जुदा थी। वह एक शान्त और धीमी आवाज थी, लेकिन जन-समुदाय की चीख से ऊपर सुनाई देती थी। वह आवाज

1. सुधीन्द्र, स्वराज्य गीतान्जलि, पृष्ठ 12
2. सुधीन्द्र, हिन्दी कविता मे युगान्तर, पृष्ठ 280

कोमल और मधुर थी, किन्तु उसमें कहीं न कहीं फौलादी स्वर छिपा दिखाई देता था। उस आवाज में शील था और वह हृदय को छू जाती थी, फिर उसमें कोई ऐसा तत्व था, जो कठोर भय उत्पन्न करने वाला था। उस आवाज का एक-एक शब्द अर्थपूर्ण था और उसमें एक तीव्र आत्मीयता का अनुभव होता था। शान्ति और मित्रता की उस भाषा में शक्ति और कर्म की कांपती हुई छाया थी और था अन्याय के सामने सिर न झुकाने का संकल्प।"[1]

गांधी की इसी आवाज से अभिभूत होकर देश के अन्य कवियों के साथ राजस्थान के कवियों ने भी स्वाधीनता प्राप्ति के लिए संघर्ष करने हेतु, सत्य-अहिंसा के आदर्शों की दुहाई दी। गांधी की दृष्टि में हिंसा द्वारा प्राप्त स्वाधीनता निरर्थक थी। युग-युग से चली आ रही हिंसावादी राजनीति के क्षेत्र में यह एक सर्वथा नूतन प्रयोग था, जिसका काव्य में भी अवतरण हुआ। इस नूतन पथ के अनुगामी कवियों ने कृपाण, खड्ग, तोप और तलवार का मार्ग छोड़कर जेल, हथकड़ी-बेड़ी और सत्याग्रह का मार्ग अपनाने का सन्देश दिया। विदेशी सत्ता को उखाड़ फैंकने के लिए सशस्त्र क्रान्ति का आह्वान करने वाले कवियों के ठीक विपरीत गांधीवाद के अनुगामी कवियों ने सत्य और अहिंसा से ही आततायी पर विजय पाने का सन्देश दिया। इस धारा के एक कवि निरंकुश ने अपने उद्गार इस प्रकार व्यक्त किये।

यहां तो देश पर सब कुछ किये कुर्बान बैठे है
चढ़ाने देश को खुशी से सब सरो सामान बैठे है।
सहन कर-कर हमारे तो हृदय ही हो चुके पत्थर
तभी तो सामने तीरों के सीना तान बैठे है।
लिया हठयोग-पथ अपने प्रकृति से युद्ध छेड़ा है
सिवा हथियार विजयी हो—यही प्रण ठान बैठे है॥[3]

उन्होने अंग्रेजी प्रभुसत्ता के सैन्य और धन बल का मुकाबला आत्म-बल से करने का सन्देश दिया और सत्य एवं अहिंसा के आयुधों की प्रभावशीलता के प्रति अपना आत्म-विश्वास प्रकट किया। अंग्रेजों को सम्बोधित करते हुए उन्होंने अपनी निर्भीक वाणी को स्वर दिये।

---

1. वही पृष्ठ 281
2. सुवेश, आधुनिक हिन्दी और उर्दू काव्य की प्रवृत्तियां, पृष्ठ 246
3. नवीन राजस्थान, 25 मार्च, 1923 ; पृष्ठ 6

अगर है आपको अभिमान अपने सैन्य, धन-बल का
तो हमें पूर्णतः विश्वास है, निज नीति-कौशल का।
कभी सम्मुख अनय के, मूल यह सिर झुक नही सकता
बढ़ा जो पैर आगे क्षेत्र में वह रुक नही सकता।
भरोसा आत्म-बल का है, सहारा सत्य-सीमा का
नहीं है खौफ रत्ती भर, हमें धन-माल का जां का।[1]

हिन्दी राष्ट्रीय काव्य-धारा के अग्रणी गायक हरिकृष्ण प्रेमी ने, जो सन् 1927 मे अजमेर में प्रकाशित राष्ट्रीय पत्रिका "त्याग भूमि" से संबद्ध थे, गांधीवादी जीवन-दर्शन को अपनी रचनाओं से अभिव्यक्त कर रहे थे। अंग्रेजी सत्ता के विरुद्ध बलिदान के शस्त्र से लड़ने का संकल्प व्यक्त करते हुए उन्होंने पशुबल अत्याचार एवं कपट के तीर कमानों से संघर्ष करने का आह्वान इन शब्दों मे किया :

लड़ेगा तोपो से बलिदान।
वहां तोप-तलवारें होगी और यहां पर प्राण।
लाल-लाल आकाश सिखाता आज शहीदी शान,
पशुबल, अत्याचार, कपट ने ताने तीर-कमान,
बढ़ो-बढ़ो आगे सीना कर सिंहों की सन्तान।
सर्वनाश गाता है, तो गाने दो पागल तान,
मर मिटने मे मिलता है, मृदु अमृत्व महान्।
युग-युग का अन्याय हृदय में उठा रहा तूफान,
रंगभूमि सौ-सौ तानों से करती है आह्वान।।[2]

पंडित गिरधर शर्मा जिन्होंने राष्ट्र वन्दना के गीत लिखकर सुप्त स्वाभिमान को जगाने में राजस्थान के काव्य-धर्मियो की अग्रिम पंक्ति के अधिकारी है, शान्ति, अहिंसा, सत्य और प्रेम से अंग्रेजी सत्ता के जुल्म और अत्याचारों का डटकर मुकाबला करने का उद्घोषण करते हैं :

नये-नये निज अस्त्र-शस्त्र दिन रात चलावें
बैलूनों में बैठ-बैठ गोले बरसावें

---

1. नवीन राजस्थान, 18, फरवरी, 1923 ; पृष्ठ 6
2. त्यागभूमि, फाल्गुन, संवत् 1986, पृष्ठ 1

अपनी सारी शक्ति भले ही आ अजमावें
होंगे विचलित कभी नहीं सत्याग्रह वाले
खो देंगे निज धैर्य नहीं सत्याग्रह वाले
शान्ति-अहिंसा, सत्य-प्रेम में रंगे रहेंगे
निज चरित्र-सामर्थ्य दिखा स्थिर विजय लहेंगे ।[1]

अहिंसा-युद्ध करने का सन्देश जिन कवियों ने भी दिया है, वे सभी अंग्रेजों के अत्याचारों के सामने सिर न झुकाने किन्तु साथ ही हिंसक शस्त्र न उठाकर प्रतिरोध करने एवं आत्मोत्सर्ग करने की प्रेरणा देते हैं । कवि मांगीलाल भव्य ने भी अंग्रेजों की गोलियों को विना पीठ दिखाये छाती पर सहन करने और वलिदान देकर भारतभूमि की लाज रखने का आग्रह किया है ।[2]

सत्याग्रह का जय-नाद करते हुए जयपुर के एक अज्ञात लोक कवि संघर्ष में अहिंसा की केसर घोलकर प्रेम-रंग वरसाते हुए आगे बढ़ने का सन्देश देते है । वे शरीर के टुकड़े उड़ जाने की स्थिति में भी अहिंसा के मार्ग से पीछे न हटने का संकल्प दुहराते हैं :

अहिंसा केसर घोली छै ।
ई की पिचकारी मार्‌यां से प्रेम-रंग दरसावै ।
चाहे तन का उडै टूकड़ा, पाछा पग न हटावै ।
खड़ी वीरां की टोली छै ।
धनुप अहिंसा, शर सत्याग्रह, आजादी छै निसाणी ।
शान्ति और दृढ़ता से डॅट कर वेध पियांला पाणी ।
प्रजा दृढ़ता से वोली छै ।

उपरोक्त उदाहरणों से यह समझा जा सकता है कि भारत का स्वराज्य आन्दोलन तिलक और गांधी की पथ प्रदर्शिता में जिन धरातलों पर पहुंचा, उसकी झांकी राजस्थान की राष्ट्रीय चेतना परक काव्य-धारा में देखी जा सकती है । यह नहीं इस धारा की कविताओं में उन उद्धात्त जीवन मूल्यों को भी तलाशा जा सकता है जो हमें तिलक और गांधी ने दिये ।

---

1. स्वतन्त्रता की पुकार (काव्य संग्रह) 1921, पृष्ठ 83
2. स्वतन्त्रता संग्राम काव्य, पृष्ठ 112
1. लेखक के व्यक्तिगत संग्रह से
2. सुधीन्द्र, हिन्दी कविता में युगान्तर, पृष्ठ 288

जिस समय गांधी दक्षिणी अफ्रीका में सत्याग्रह और निष्क्रिय प्रतिरोध का संचालन कर रहे थे, तिलक बर्मा में कारागार में वन्दी बने थे। यह एक अद्भुत संयोग था कि कारागार में जन्म लेने वाले कृष्ण के कर्मयोग का रहस्य समझने-समझाने के लिए वे 'गीता-रहस्य' नामक भाष्य की रचना कर रहे थे और उधर गांधी दक्षिणी अफ्रीका में हंसते हुए कारावास भोग रहे थे। यही कारण है कि स्वाधीनता के दीवानों को कारावास कृष्ण-मन्दिर बन चुका था।

भरतपुर के लोक-गायक नानकचन्द जिनके राष्ट्रीय गीतों की जन-सभाओं में कभी बड़ी धूम रहा करती थी, जेल को कृष्ण मन्दिर समझने का अनुरोध करते हुए वहाँ की यातनाओ को भी आनन्दमयी अनुभूतियो में बदल देने का उपक्रम करते है :

जेल मत समझो बिरादर, जेल जाने के लिए,
कृष्ण मन्दिर को गये परसाद, खाने के लिए।
दो समय परसाद मिलता है सुबह और शाम को,
एक डब्बू दाल, रोटी पांच खाने के लिए।
हापुड़ के पापड़ से बढ़ कर रोटियां थीं जेल की,
दाल क्या थी जीरा-जल कब्जी मिटाने के लिए।
हाथ में थी हथकड़ी और पांव में बेड़ी पड़ी,
कृष्ण का जो चक्र था चक्की चलाने के लिए ।।[1]

गांधी ने भारतीय राजनीति मे प्रवेश करते ही असहयोग-आन्दोलन और सत्याग्रह द्वारा राष्ट्रीय जीवन मे क्रान्ति का उद्घोष किया था। हिंसक शस्त्र के स्थान पर उन्होने जनता के हाथ में नैतिक अस्त्र दिया। रक्त दान लेने के बदले उन्होंने रक्त दान देने का धर्म राष्ट्रीय योद्धा के आगे प्रतिष्ठित किया। राष्ट्र की बलिवेदी को अपने मस्तक से सजा देने की दीक्षाएं सत्याग्रह ने दी। परिणामतः राजस्थान मे भी सत्याग्रह की अभिनन्दनात्मक कविताएं लिखी गई, जिन्होने राष्ट्र के बलि-वीरों को सत्य पर अटल रहने, पग-पग पर आग से खेलने और हसते-हंसते आत्मोत्सर्ग की प्रबल प्रेरणा दी। प्रत्येक राष्ट्रीय योद्धा प्रहलाद, सुकरात, ईसा और मंसूर हो गया।

सत्याग्रह कर्त्तव्य शास्त्र ने है बतलाया
प्रह्लादिक भक्त जनों ने मार्ग दिखाया

---

1. राजस्थान साहित्य अकादमी संग्रह

बड़े-बड़े ऋषि साधुजनों ने भी अपनाया
शुभ संकल्प-सिद्धि का साधन इसे बनाया
मीरां ने विष-पान किया, निज नियम निभाया
वीलम्मा ने जीवन दिया पर जी न चुराया
मस्त हुआ मंसूर अनलहक नाद सुनाया
इसे साध कर टालस्टाय भी साधु कहाया
सत्याग्रह के प्रेम मंत्र की जो लें दीक्षा
लेवेंगे परमेश उन्हीं की उच्च परीक्षा ।।[1]

राष्ट्रीय वीरों की प्रशस्तियां

स्वाधीनता संग्राम के वीरों, बलिदानियों और प्राणोत्सर्ग करने वाली विभूतियों का प्रशस्ति गान भी राष्ट्र भक्ति काव्य-धारा का ही एक अंग स्वीकार किया जाना चाहिये । इन प्रशस्तियों के माध्यम से कवि इन नर पुंगवों की गौरव गाथाएं गान्या कर राष्ट्र के सामान्यजनों के मन को प्रेरणा की ज्योति से आलोकित करता है और महापुरुषों का अनुकरण कर राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम में कूदने को प्रोत्साहित करता है ।

राजस्थान में चारणी साहित्य की जो परम्परा रही है, उसमें वीरों की ही प्रशस्तियां नहीं, युद्ध में काम आने वाले घोड़ों, अस्त्र-शस्त्रों, महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थलों, नगरों और घटनाओं की प्रशस्तियां भी मिलती हैं । इसी परम्परा की विरासत को लेकर यहां के कवियों ने राष्ट्रीय स्वाधीनता-संग्राम के सेनानियों की प्रशस्तियां लिखीं । इन प्रशस्तियों की एक विशिष्टता यह है कि इनकी विषय-वस्तु जहां देश के बड़े नेताओं का स्तुति गान करती है, वहां राजस्थान के उन वीरों का भी वन्दन करती है, जिन्होंने स्वाधीनता-संग्राम में अपनी ऐतिहासिक भूमिका निभाई । विजयसिंह पथिक, केसरीसिंह बारहठ, प्रतापसिंह, दामोदर दास राठी, राव गोपालसिंह खरवा, जमनालाल बजाज आदि पर लिखे गये ये प्रशस्ति गीत राष्ट्रीय संग्राम में इन व्यक्तियों के विशिष्ट योगदान को उजागर करते हैं ।

---

1. गिरधर शर्मा, स्वतन्त्रता की झंकार, पृष्ठ 21

प्रस्तुत संकलन में लगभग उन सभी प्रवृत्तियों का दिग्दर्शन कराने वाली प्रतिनिधि हिन्दी तथा राजस्थानी कविताओं को समाविष्ट किया गया है। संकलन के अन्त में प्रमुख चारणी रचनाओं का भावार्थ, कवि-परिचय तथा कविताओं में वर्णित स्थानों एवं व्यक्तियों के बारे में संक्षेप में टिप्पणियाँ भी दी गई हैं।

आशा है, राजस्थान के स्वाधीनता संग्राम एवं कवि-कर्म में रुचि रखने वाले विद्वानों, सामान्य पाठकों और अनुसन्धित्सुओं को यह संग्रह उपादेय प्रतीत होगा।

—डॉ० मनोहर प्रभाकर

□

गीत चेतावणी रो

□ कविराजा बांकीदास रो कह्यो

आयो इंगरेज मुलक रै ऊपर, आहंस लीधा खेंचि उरा ।
धणियां मरै न दीधी धरती, धणियां ऊभां गई धरा ।।

फौजां देख न कीधी फौजां, दोयण किया न खला-डळा ।
खवां-खांच चूड़ै खावंद रै, उणहिज चूड़ै गई यळा ।।

छत्रपतियां लागी नह छांणत, गढ़पतियां धर परी गुमी ।
बळ नह कियो बापड़ां बोतां, जोतां-जोतां गई जमी ।।

दुय चत्रमास बादियो दिखणी, भोम गई सो लिखत भवेस ।
पूगौ नहीं, चाकरी पकड़ी, दीधौ नहीं मरैठां देस ।।

बजियो भलो भरतपुर वाळो, गाजै गजर धजर नभ गोम ।
पहिलां सिर साहब रो पड़ियो, भड़ ऊभां नह दीधी भोम ।।

महि जातां चींचातां महिलां, अै दुय मरण तणा अवसांण ।
राखो रै किहिक रजपूती, मरद हिन्दू की मुसलमांन ।।

पुर जोधांण, उदैपुर, जैपुर, थांरा खूटा परियांण ।
आंकै गई आवसी आंकै, बांके आसल किया बखांण ।।

★

गीत भरतपुर रो

☐ कविराजा बांकीदास रो कह्यो

उतन विलायत किलकता कांनपुर आविया,
ममोई लंक मदरास मेळा।
यलम धुर वहण अंगरेज दाटण यळा,
भरतपुर ऊपरा हुआ भेळा ।।

अलीमन सूर रो वंस कीधौ असत,
रेस टीपू विजै अंवट रुड़िया।
लाट जनराळ जरनेल करनैल लख,
जाट रै किलै जमजाळ जुड़िया ।।

सैन रिजमट असंख पलटणां तणे संग,
भड़ तिलंग बंग किलंग तणा भिळिया।
अभंग जंग भरतखंड पारका ऊसर ऊवै,
मारका वजंद्र रै दुरंग मिळिया ।।

सराबां बोतलां पीयां छक-छक सड़क,
किया निधड़क हिया, हरवळा कोप।
वीर रस ओपियां हलां विध-विध वधै,
टोपियाँ दवादस तणा टोप ।।

पीठ बड़बड़ात कूरम, छटा प्रलै री,
मही खड़खड़ात हैजम मचोळां।
मुनि हड़हड़ात धड़ड़ात तोपां महत,
गयण गड़ड़ात पड़भ्राट गोलां ।।

अरक दुत सोम सम, नमै लोयणां असम,
धूम्रां तम तोम लग धूरां धूरां।
तठै सूर लड़ैता थटै धण तंदूरां,
हरख सूरां निरख रंभ हूरां ।।

करै तदबीर गोरा चढ़ण कांगुरां,
तिलंग फररै, फुरत फैल ताळी।
छूट पिसतोल पड़होल सायर छिलक,
करावीण सिलक किलक काळी॥

तुरां खुरताळ वज तूर तासा त्रंबट,
माळ फरहर गजां धजां माळा।
अडण अणडोल जाटां पत आवियो,
तोल खग कपाटां खोल ताळा॥

आग भड़हड़ै डूंडे रमै रण आंगणै,
नाग फण नमै करै ससत्र नागा।
कठालग कवादी व्यूह रचना करै,
लठावन तणा भड़ लड़ण लागा॥

धड़ां सिर जोम, ताजै धड़ां धमाधम,
कांगुरां तरफ वाजै कुहाड़ा।
किलो गिरधरण ओळै रयण बंधकड़ा,
विरोलै चोवड़ा फिरंग वाळा॥

दिया सूजा तणै पैंड तोपां दिसा,
सफीलां तणा नह लिया सरणा।
बीजळां रीठ पावै सभ्रा खिलावै,
विजा करपूर करपूर वरणा॥

अणी जटवाड़ वीरांतणी आकळै,
विवध तीरां तणी मची बरखा।
हसम अंगरेज री आठ वाटां हुई,
पूर पाटां हुई रुधर परखा॥

अरांवां तणो असवाव अपणावियो,
भट किलकता तणो भागौ।
आड रोपी वज्रंद भीक वागो असंभ,
लीक टोप पटक पंथ लागौ॥

असावड़ वनां में हुई लोयां अनन्त,
चढ़ै घोड़ां बात दिगंत चाली।
सायरा दिरांणा हजारां साहिवां,
खुरसियां हजारां हुई खाली॥

अण खरव कलह तर कहै दुज अेकठा,
गरब वां कितावां तणा गळिया।
थया वळहीण लसकर फिरंगयांन रा,
चीण इनांन रा इलम चलिया॥

मेर मरजाद रणजीत आखाड़मल,
खेर दीवा उसण जवर खेटै।
पुखत गुरगम मिळी सेन पण पांकियो,
भरतपुर फेर नह उसर भेटै॥

आउवा रा/गदर-संबंधी छप्पय

☐ कविया गिरवरदान रा कह्या

बरती चवदह बरस, पड़े इळ बेध अपारां,
विकट लोग बदळियो, सोच लागो उर सारां।
कानी कानी कळह, दाय कम्पनी उर दीधौ,
खोज खजानो खास, लूट अेरणपुर लीधौ।
बजराग भाट लागा बहै, धके दिली दिस धाउवे,
महाराज खीज लेवा मदत, आचर रुपिया आउवे।।

काळां बांधी कमर, कमर बांधी खुसियाळै,
विसना सिवसा वळे, भड़ां ज्यां जोगण भाळै।
लाग सिंधवां ललक, खलक हक बक धूजै खित,
करण टूक केवियां, रूक रण रहरू करत।
बजराग भाट बैंडा बधै, घाट चमू दिस घेरणां,
कवादी लोक लोह लाट कर, फजर फाटकां फेरणां।।

सुण चांपै रच सला, मित्र परधानां मेले,
खामन्द बगसो खून, बंधो मत दुसहां बेले।
सह मंत्री मिल सला, थाप जुध कारण थटाई,
होणहार ज्यूं होय, मिटै किण भांत मिटाई।
भरोसे खुसाळ सक्ति भिड़ण, संभियो सगलां साथ रै,
आजाद हिंद करवा उमंग, निडर आउवा नाथ रै।।

★

गीत आउवा रो

☐ मीसण सूरजमाल रो कह्यो

लोहां करंतो झाटका फणां कंवारी घड़ा रो लाडौ,
आडो जोधांण सूं खेंचियो वहे अंट।
जंगी साल हिदवांण रो आवगो जींनै,
आउवो खायगो फिरंगाण रो अजंट।।

रीठ तोपां बंदूकां जुञ्जबां नाळां पेंड रोपै,
बकै चंडी जय-जय रुद्र-पिया रा बाखांण।
मारवा काज सौ वज्र हिया रा भूरियां माथै,
खुसळेस आयो हाथां लियां रै केवांण।।

गजां तूटै भ्रसुंडां पै ढाल फूटै सोर गंजा,
जुटै भड़ां हजारां तड़च्छां खावै जोह।
भूरो बाघ चंपोराव भूरियां ऊपरा भुट्टै,
छुट्टै प्रांण कायरां न मावै हिये छोह।।

भागे भीच गोरा सिंधांपरां रा जिहांन भालो,
दावो तेगां झाट दे उत्तालो दसूं देश।
तीसूं नींद न आवै, कंपनी लगाड़े ताला,
कालो हिये न मावै अगंजी खुसळेस।।

★

गदर-सम्बन्धी दूहा

☐ मीसण सूरजमाल रा कह्या

वीकम बरसां वीतियां, गण चौ चन्द गुणीस ।
विसहर तिथ गुरु जेठ वद, समय पलट्टी सीस ।।

जिण वन भूल न जावता, गैंद, गवय गिड़राज ।
तिण वन जंबुक ताखड़ा, ऊधम मंडै आज ।।

मूंछ न तोड़ौ कोट में, कढ़ियां छोडै काळ ।
काळां घर चेजो करै, मूसा पण मूंछाळ ।।

डोहै गिड़ वन वाड़ियां, द्रह ऊंडा गज दीह ।
सीहण नेह सकैक तौ, सहल भुलाणौ सीह ।।

सीह न वाजौ ठाकुरां, दीन गुजारौ दीह ।
हाथळ पाड़ै हाथियां, सौ भड़ वाजै सीह ।।

इकडंकी गिण अेकरी, भूलै कुळ साभाव ।
सूरां आळस अेस में, अकज गुमाई आव ।।

तन दुरंग अर जीव तन, कढणौ मरणौ हेक ।
जीव विणट्ठां जे कढौ, नांम रहीजै नेक ।।

कायर घर ऊंडा कहै, की धव जोड़ै कांम ।
कण कण संचै कीड़ियां, जोवै तीतर जांम ।।

टोटै सरकां भींतड़ा, घातै ऊपर घास ।
वारीजै भड़ झूंपड़ां, अधपतियां आवास ।।

महलां लटण धाड़वी, झूंपड़ियां न सुहाय ।
झूंपड़ियां री लूट में, जीव सीलणौ जाय ।।

★

चेतावणी रा चूंगटिया

□ बारहठ केसरी सिंह रा कह्या

सोरठा :

पग पग भम्या पहाड़, धरा छोड़ राख्यो धरम ।
'महारांणा' 'मेवाड़', हिरदे बसिया हिंद रै ।।

घण घलिया घमसांण, रांणा सना रहिया निडर ।
पेखंतां फुरमांण, हल चल किम फतमल हुवै ।।

गिरद गजां धमसांण, नहचै धर माई नहीं ।
मावै किम महारांण, गज सौ रै घेरे गिरद ।।

ओरां ने आसांण, हाकां हरवल हालणो ।
किम हालै कुलरांण हरवल साहां हांकिया ।।

नरियंद नजरांण, झुक करसी सरसी जिकां ।
पसरेलो किम पांण, पांण थका थारो फता ।।

सकल चढावै सीस, दान धरम जिण रो दियो ।
सो खिताब बगसीस, लेवण किम ललचावसी ।।

सिर झुकिया सहसाह, सींहासण जिण सांमने ।
रळणो पंगत राह, फादै किम तोनै फता ।।

देखै लो हिंदवाण, दिज सूरज दिस नेह सूं ।
पण तारां परमांण, निरख निसासां नांखसी ।।

देखै अंजस दीह, मुळकैलो मन ही मनां ।
दंभी गढ दिल्लीह, सीस नमंतां सीसवद ।।

अन्तबेर आखीह, पातळ जो बातां पहल ।
रांणा सह राखीह, जिण री साखी सिरजटा ।।

कठण जमाणो कोल, बांधै नर हीम्मत विनां ।
वीरां हन्दो बोल, पातळ सांगै पाखियौ ।।

अब लग सारां आस, रांण रीत कुल राखसी ।
रहो साहि सुखरास, अेकलिंग प्रभू आपरै ।।

नांन मोद सीसोद, राजनीत बळ राखणो ।
गवरमिन्ट री गोद, फळ मीठा दीठा फता ।।

✶

सुतंतरता रा फुटकर दूहा

पराधीन भारत हुयो, प्यालां री मनुवार ।
मात्र-भोम परतन्त्र हो, बार-बार धिक्कार ।।

मतवाळा हो पोढ़ गया, सुध-बुध दोन्ही भूल ।
पर हाथां रा हो गया, या हिड़दा में सूल ।।

दुसमण देसां लूट कर, ले ज्यावै परदेश ।
राजन चड़ल्या पहरल्यो, धरो जनानो भेस ।।

तन पर साड़ी ओढ़ कर, महलां बैठो जाय ।
अन्यायी दिन-दिन अठे, जोर जमाता जाय ।।

विस खावो कै सरण लो, सरवरिया री थाह ।
कै कंठा विच घाल लो, घाघरिया री घाह ।।

कठै गई वा वीरता, कठै रजपूती सांन ।
टुकड़ां रा मोताज हो, खो बैठ्या अभिमान ।।

रजपूती सत खो दियो, सतहीणा सिरदार ।
पतहीणा रजपूत हो, मतहीणा भरतार ।।

वस्त्र कसूमल पहरलो, कसो कमर तरवार ।
बरछी और कटार ले, हुवो तुरंग असवार ।।

पाछा घर मत झांकज्यो, पग मत दीज्यो टार ।
कट भळ जाज्यो रेत में, पण मत आज्यो हार ।।

ओ सुहाग खारो लगै, जद कायर भरतार ।
रंडापो लागै भलो, होय सूर सिरदार ।।

सीख राज री होय तो, हूं पण चालूं साथ ।
दुसमण पण फिर देख ले, म्हांरा दो दो हाथ ।।

★

मेरा देश

□ गिरधर शर्मा 'नवरत्न'

मेरा देश, देश का मैं, देश मेरा जीवन प्राण,
मेरा सम्मान मेरे देश की बड़ाई में।
जीऊंगा स्वदेश हित, मरूंगा स्वदेश काज,
देश के लिये कभी न करूंगा बुराई मैं ।।

भीषण भयंकर प्रसंग में भी भूल के भी,
भूलूंगा न देश हित राम की दुहाई मैं।
जबलौं रहेगी सांस सर्वस्व भी लगा दूंगा,
ईश को भी झुकालूंगा देश की भलाई में ।।

चर्चा जहां देश की हो, मेरी जीभ वहीं खुले,
और नहीं खुले कहीं खुदा की खुदाई में।
मेरे कान गान सुने सांचे देश भक्तन के,
और गान आवें कभीं मेरे ना सुनाई में ।।

मेरे अंग रंग चढ़े एक देश-प्रेम को ही
और रंग भंग होके बूड़ें जा तराई में।
मेरो मन, मेरो तन, मेरो धन, मेरो जीव,
मेरो सब लागे प्रभु, देश की भलाई में ।।

★

सत्याग्रह का दिव्यनाद

□ गिरधर शर्मा 'नवरत्न'

सत्याग्रह की दिव्य ज्योति देखो यह छाई,
सत्याग्रह की करूं कहो किस तरह बड़ाई।
सत्याग्रह में धर्म-कर्म का मर्म छिपा है,
सत्याग्रह पर परमपुरुष की परम कृपा है।

सत्य धर्म का रूप धर्म से प्रेम न न्यारा,
सत्याग्रह का प्रेम बिना है सत्य न प्यारा।
जहां प्रेम है वहां नहीं हिंसा कुछ होती,
पड़े प्रेम की घोर विपक्षी पर भी ज्योती।

सत्याग्रह कर्तव्य शास्त्र ने है बतलाया,
प्रह्लादादिक भक्तजनों ने पाल दिखाया।
बड़े-बड़े ऋषि साधुजनों ने भी अपनाया,
शुभ संकल्प-सिद्धि का साधन इसे बनाया।

मीरां ने विष-पान किया निज नियम निभाया,
वीलम्मा ने जीवन दिया पर जी न चुराया।
भस्म हुआ मंसूर अनहदक नाद सुनाया,
इसे साध कर तुलस्ताय भी साधु कहाया।

सत्याग्रह के प्रेम मंत्र की जो लें दीक्षा,
लेवेंगे परमेश उन्हीं की उच्च परीक्षा।
जो होंगे उत्तीर्ण सिद्धियां उन्हें वरेंगी,
सत्ता जग की आय उन्हीं के पांय पड़ेंगी।

सत्याग्रह का लिया जिन्होंने व्रत हो भारी,
हैं वे परम पुनीत तपस्वी सद-गुणधारी।
हिंसा रिपुता झूठ निकट उनके न रहेंगे,
होंगे जो उपसर्ग सभी वे स्वयं सहेंगे।

मातृ-वन्दना

सुधीन्द्र

आज का यह मधु-मधुर क्षण !
कर रहा हूँ जननि, तव पद-पद्म
रजहित आत्म-अर्पण !
माँ तुम्हारी गोद में भय
मुझे मरने का न है !
चरण-रज ही शीश पर
अमरत्व का वरदान है !
हृदय के लघुकलश में
भर अमल स्नेह-प्रसेक माँ
पुतलियों पर मैं तुम्हारा
कर चुका अभिषेक माँ
आज करता है अमर,
अभिवन्दना मेरी रणांगण !
आज का यह मधु-मधुर क्षण !

★

क्षितिज के उस पार

□ सुधीन्द्र

क्षितिज के उस पार
साथी !
क्षितिज के पार,
अपना रहा देश पुकार !

इस नदी के पार पर्वत शृंखला के क्रोड़ भीतर
जन्म-भू जननी बसी है स्वर्ग से भी श्रेष्ठ-सुन्दर;
धूल वह जिससे बने हम, है हमें फिर आज पानी,
लो, बुलाती है हमें दिल्ली हमारी राजधानी !
आज रक्त बुला रहा है रक्त को, हुंकार आई !
अब न पल खोओ,
सम्भालो
शीघ्र निज हथियार।
साथी ! क्षितिज के उस पार, अपना रहा खून पुकार !!

सामने ही लो हमारे स्वच्छ-सुथरा मार्ग आया,
कूच हम इस पर करेंगे, भाइयों ने यह बनाया।
शत्रु के भी बीच से हम मार्ग अपना कर बढ़ेंगे,
और बढ़ पाये नहीं तो बीच में ही बलि चढ़ेंगे।
हम पड़े चिर नींद में लेंगे विजय का स्वप्न-दर्शन,
शेष सेना के विजय-पथ का करेंगे धूलि-चुम्बन।
मार्ग दिल्ली का
स्वयं
स्वाधीनता का द्वार !
साथी ! क्षितिज के उस पार, अपना रहा राष्ट्र पुकार !! ★

पुण्य समर की बेला है

☐ सुधीन्द्र

चलो शहीदो ! स्वतन्त्रता के पुण्य समर की बेला है।
तुम भी अपना भाग बंटा लो, आजादी का मेला है ।।

चलो चलो अब रुको न पल भर रुकने का है काम नहीं,
किसी विघ्न-बाधा के आगे झुकने का लो नाम नहीं।
स्वयम् मृत्यु से भी बढ़ बढ़ कर आलिंगन करने वालो,
जब तक मर न मिटेंगे लाखों, तब तक है आराम नहीं।
दुर्वह भार क्रान्ति का जग में, वीरों ने ही झेला है,
चलो शहीदो ! स्वतन्त्रता के पुण्य समर की बेला है ।।

*　　　*　　　*

सत्य तुम्हारा लक्ष्य अटल हो, अस्त्र अहिंसा बन जाए,
विश्व प्रेम हो कवच तुम्हारा, त्याग छत्र सा तन जाए।
पुण्य प्राण प्रेरक की तुमको, क्रान्ति-नन्दिनी आ जाए,
विजय ध्वनि से गुञ्ज अमर हो, क्षण भंगुर जीवन जाए।
एक अहिंसा सत्याग्रह का व्रती कभी न अकेला है,
चलो शहीदो ! स्वतन्त्रता के पुण्य समर की बेला है।

*　　　*　　　*

दास्य पाश है जब तक तब तक, रे कैसी ये रंग रलियां?
कैसी विजयादशमी तब तक, कैसी ये दीपावलियां ?
कैसी तब तक सुख की नींदें, कैसी ये सुख की सांसें ?
राज-मार्ग बलिदान अभी है, नहीं प्रणय पुर की गलियां?
अपने ही शोणित का तुमने फाग कभी क्या खेला है ?
चलो शहीदो ! स्वतन्त्रता के पुण्य समर की बेला है ।।

*　　　*　　　*

बंधे रहोगे कब तक वीरो, प्रणय पाश अलकाली में,
रंगे रहोगे कब तक शूरो, प्रेम-सुरा की लाली में ?
स्वतन्त्रता प्रेयसी तुम्हारी, खड़ी विजय माला लेकर,
कब तक फँसे रहोगे तुम इस, परवशता की जाली में ?
इन्कलाब युग के पुकार की, यह कैसी अवहेला है ?
चलो शहीदो ! स्वतन्त्रता के पुण्य समर की बेला है ।।

* * *

आओ अमर शहीदों के हम ढूंढ़ें वे पद-चिह्न चलें,
जो मर मिटे मातृ-चरणों में, उनकी पदरज शीश मलें ।
एक एक हम अपनी मां के, उज्ज्वलतम अभिमान बनें,
एक दूसरे से बढ़ चढ़ कर, खरे अनल में हों निकलें ।
देखो तो इस तीर्थराज में, कैसा रेला-पेला है,
चलो शहीदो ! स्वतन्त्रता के पुण्य समर की बेला है ।।
तुम भी अपना भाग बँटा लो, आजादी का मेला है ।।

★

जय हिन्द

□ सुधीन्द्र

है "जय हिन्द" हमारा नारा –
जनता ने है आज पुकारा ।।

जिस दिन वीर सुभाष हमारा
बना अग्नि के पथ का राही

उस दिन भारत की पलकों में
नाची स्वतन्त्रता मनचाही

बढ़ा पंच नद, चढ़ा युद्ध-मद
सेना दौड़ी वहाँ महानद,

भाड़े के अब कहां बने वे, आजादी के वीर सिपाही,

बन्दी मां के उन लालों ने
जब पलकों की ओर निहारा,

है "जय हिन्द" हमारा नारा –
जनता ने है आज पुकारा ।।

परतन्त्रों का धर्म रहा है
बन्धन से विद्रोह मचाना

परतन्त्रों का धर्म रहा है
मन-प्राणों में आग जगाना

जीवित है तो कुछ कर जाना
करते, करते ही मर जाना

दिल्ली जब तक दूर हमारी, आजादी की फौज उठाना,

जब तक हम स्वाधीन नहीं हैं
"नौ अगस्त" त्यौहार हमारा,

है "जय हिन्द" हमारा नारा—
जनता ने है आज पुकारा ।।

व्यर्थ नहीं जायेगी मेरे
शत शत प्राणों की कुर्बानी

लिखती आई क्रान्ति-रक्त से
स्वतन्त्रता की अमर कहानी

बढ़ती है जब जब तरुणाई
सुनती है तब तब शहनाई

विद्रोही बलिदान मांगती, स्वतन्त्रता-हृदय की रानी,

विजयी कल हारा दीखेगा
विजयी होगा कल जो हारा ।

है "जय हिन्द" हमारा नारा –
जनता ने है आज पुकारा ।।

कौन कह रहा स्वतन्त्रता के
पुण्य समर में मिली पराजय ?

अणु मे और परम अणु में भी
आज शक्ति का भरा हिमालय ।

जनता की यह क्रान्ति अभंजन
झुका न सकता स्वयं जनार्दन

कड़ियों के कण कण में जागी, विजली विद्रोहों की अक्षय,

अन्यायी, बस एक पलक में
टूटेगी लोहे की कारा ।

है "जय हिन्द" हमारा नारा –
जनता ने है आज पुकारा ।

खड़े हिमालय ने ललकारा
"कुचले तू वज्रों की काया"

"कमर कसी है विद्रोहों ने ।"
ले, मेरा विन्ध्य चिल्लाया

तक्षशिला, नालन्द, अवन्ती
आज मनाते क्रान्ति-जयन्ती

ब्रह्मपुत्र गरजा प्राची में, भागो क्षितिज अरुण हो आया,

मुक्त करो मेरी जननी को
गाती है गंगा की धारा ।

है "जय हिन्द" हमारा नारा,
जनता ने है आज पुकारा ।।

★

धरती बोल उठी

☐ रांगेय राघव

चला जो आजादी का यह
नहीं लौटेगा मुक्त प्रवाह,
बीच में कैसी हो चट्टान
मार्ग हम कर देंगे निर्बाध।

मृत्यु की महराबों से गूँज
शहीदों की आती आवाज,
रक्त से भीगे झण्डे फहर,
उठाते हैं अपनी तलवार ॥

●

डायन है सरकार फिरंगी,
चबा रही है दाँतों से,
छीन गरीबों के मुँह का हाँ
कौर दुरंगी घातों से।

हरियाली में आग लगी है,
नदी-नदी है खौल उठी,
भीग सपूतों के लोहू से
अब धरती है बोल उठी ॥

इस झूठे सौदागर का यह
काला चोर-बजार उठे,
परदेशी का राज न हो बस,
यही एक हुंकार उठे !

★

फिर उठा तलवार

☐ रांगेय राघव

एक नंगा वृद्ध
जिसका नाम लेकर मुक्त
होने को उठा मिल हिंद
कांपते थे सिन्धु औ साम्राज्य
सिर झुकाते थे सितमगर त्रस्त
आज वह है बन्द
मेरे देश हिन्दुस्तान
वर्बर आ रहा जापान
जागो जिन्दगी की शान

अरे हिन्दी
कौन कहता है कि तू है रुद्ध
कर न पायेगा भयंकर युद्ध
युद्ध ही है आज सत्ता
आज जीवन

देश
संगठन कर
जातियों की लहर मिलकर
तू भयानक सिंधु,
राष्ट्र रक्षा के लिए जो धीर
फिर उठाले आज
संस्कृति की पुरानी लाज से
भीगी हुई तलवार।

★

पांचजन्य

☐ कन्हैयालाल सेठिया

रे, यह क्या युग से जड़ीभूत
जागरूक ग्राज है शैलराज,
छूने को ऊँचा ग्रासमान
उठ रहा उच्छ्वसित उदधि ग्राज।
है तक्षशिला से सेतुबन्ध –
तक हुई लहर-सी प्रवहमान,
कैलाश, विन्ध्य, नर्मदा, सिन्धु,
हो उठे ग्रचानक प्राणमान ।।

वह सिन्धु-शतद्रु-वितस्ता का
क्रीड़ांगण प्रिय पंचनद देश,
बनकर पुरु दिखलाने ग्राया
ग्राक्रान्ता को पौरुष ग्रशेष।
युग-युग से विश्रुत पृथीराज
का पुण्य पुरातन इन्द्रप्रस्थ,
बढ़ रहा ग्ररे किस ग्रोर किये
ग्रपने प्राणों को करतलस्थ !

इस पार्थ-सारथी के ब्रज में
हलधर समेत गोपाल ग्राज,
ग्रत्याचारों का ध्वंस–भ्रंश
करने को है सज रहे साज।
इक्ष्वाकु, दिलीप ग्रौर रघु का,
राघव का वह कौशल प्रदेश,

है व्रती राम-सा आज—
आततायी को करने नामशेष ।।

अपना अतीत कर रहा याद
विक्रम का वह मालव महान्,
है निभा रहा कुम्भा, सांगा,
"पत्ता" का राजस्थान आन ।
वरवीर शिवाजी का सृष्टा
वह महाराष्ट्र है अविश्रान्त
ये द्रविड़-वंग कटिबद्ध आज
थी कभी न जिनकी भ्रांत-क्लांत ।।

उस यश:काय पल का स्मारक
विश्रुत विदर्भ उठकर सगर्व,
कहता है : कर दूंगा पल में
ध्वंसक—घर्षक का गर्व खर्व ।
कीर्तिध्वज छत्रसाल-शोभी
अच्युत—अदम्य बुन्देलखण्ड,
कर रहा क्रान्ति का महाह्वान
बन समर-यज्ञ होता प्रचण्ड ।।

है उद्धर्व जगत-गौरव विहार
जो मूर्त सत्य की अमर शोध,
आंगन में जिसके हुआ प्रथम
गौतम को तम में ज्योति-बोध ।
रे, हमें याद है भीम—भीष्म
भाई-भाई का महायुद्ध,
भारत जब था उद्भ्रान्त-श्रान्त
व्यामोह-लुब्ध, विक्षुब्ध-रुद्ध ।।

रण में "तस्मादुत्तिष्ठ" और
"युद्धस्व" आदि से दे प्रबोध,
था हृषिकेश ने किया परं–
तप का विलीन वह मार्गरोध ।
आया है गत इतिहास लौट
इतने युग-युग के बाद क्या न ?
है भूल गया क्या विश्व उसे
दे गया कि जो वह अमर ज्ञान ?

अश्रुत-अभूत यह समर आज
है जहां न हन्ता और हन्य,
मोहन हैं जिनके हाथ सत्य-
का चक्र, प्रेम का पांचजन्य ।
कर रहे बन्धु से वह अनुनय
मिल जाय बन्धु को न्याय स्वत्व,
अन्यथा अमानुषता का शिर
अवनत कर देगा मानवत्व ।।

यह राज्य-विभव-लिप्सा नर की
जिसके प्रतीक विध्वंस–भ्रंश,
शोषण-धर्षण से हेय पाप !
यह मानव में पाशविक अंश ।
सज रहे सैन्य, हो रहे घोष-
"हम सजग, जागरूक, सावधान!"
बस पांचजन्य की ओर यहां
लग रहे विश्व के आज कान ।।

★

तेरी यह तलवार

☐ कन्हैया लाल सेठिया

कभी विजय में बदलेगी क्या बता तुम्हारी हार ?
या लटकेगी खूँटी पर ही तेरी यह तलवार ।।

किन घड़ियों में बेसुध सोये
मारवाड़ के पूत,
पराधीन तुम, देश तुम्हारा
ओ बाँके रजपूत !

आज शेर की माँदों में है
गीदड़ का आवास,
नहीं रहा क्या तुम को अपने
साहस पर विश्वास ।

अरे, कभी क्या उठकर लोगे अपने गत-अधिकार ?
या लटकेगी खूँटी पर ही तेरी यह तलवार ।।

माँग रही है कितने युग से
पीड़ित माँ बलिदान,
किन्तु छिपाये बैठे हो तुम
कायर ! अपने प्रान ।

आज तुम्हारे प्यालों में है
सुरा छलकती लाल,
किन्तु सुरा में नाच रहा है
देखो अपना काल ।

अरे, अभी भी चेतो सुन कर अपनी ही चित्कार ।
या लटकेगी खूँटी पर ही तेरी यह तलवार ।।

वन्द हुए क्यों आज तुम्हारे
वे कड़खे के गीत,
पायल की झनकारों से क्यों
जोड़ी तुमने प्रीत।

बता कहाँ केशरिये बाने
कहाँ तुम्हारे साज,
कितने दिन तक ढँकी रहेगी
इन चिथड़ों में लाज।

अरे, उतारोगे क्या माँ का जो तुम पर ऋण-भार ?
या लटकेगी खूँटी पर ही तेरी यह तलवार ॥

★

आजाद हिन्द फौज

□ परदेशी

सत्तावन की महाक्रांति का
यह इतिहास सुनाएगी,
नई फौज आजाद हिंद की
सोया देश जगाएगी।

यह आंधी की सखी कि साथी
बढ़ती प्रलय-प्रवाहों सी,
उठी और हो गई दूर
निद्रा दुनिया के शाहों की।

कौन जानता कांप उठेंगे
तख्त ताज उन्तालिस में,
हम होंगे स्वाधीन शीघ्र ही
शंका थी किसको इसमें।

कौन सुनेगा हाल गदर का
हमको याद जबानी है,
जहां देश आजाद बनाने
उजड़ी लाख जवानी है।

लुटा सल्तनत दिल्ली की वह
बना बहादुरशाह बागी,
नाना बढ़ा, बढ़ी झांसी की
रानी थी दुनिया जागी।

आजादी की आग देश में
मंगल पांडे सुलगाता,
वीर तांतिया टोपी उसको
आहूति दे घधकाता।

खबर हुई कलकत्ते तब तक
फैल गई चिंगारी थी,
अब तो रण के मैदानों में
खुल लड़ने की बारी थी।

बन्धु, फौज आजाद हिन्द की
इसकी अमर निशानी है,
तलवारों की झंकारों में
कहती वही कहानी है।

उसका भी उद्देश्य, देश की-
आजादी लड़ – लेना है,
लगे प्राण का मोल इसे तो
हँस आहुतियां देना है।

सत्तावन के महाद्रोह का
यह इतिहास सुनाएगी,
नई फौज आजाद हिन्द की
सोया देश जगाएगी।

उसने डेलहौज़ी जीता, यह
आचिनलेक हराएगी,
उठी काल की ज्वाल-माल
जालिम का महल जलाएगी।

वहां सैन्य के आगे बढ़ता
नाना जैसा रण – जेता,
जहां लहर – सी लहराती –
फौजों का बोस बना नेता।

बोस कि जिसका रोष काल
का भेजा पहला न्यौता है,
अरे मिटेगा वही मौज में
जो कंटक – दल बोता है।

अमर फौज आजाद हिन्द की
बढ़ी बाढ़ – सी आएगी,
पथ के पत्थर बहा, देश के –
घर-घर अलख जगाएगी।

सत्तावन की फौज चढ़ी,
गोरों का नाम मिटाने को,
और उठी यह चूर दासता –
की कड़ियां कर जाने को।

उसने कलकत्ते कूंच किया,
यह लन्दन आग लगाएगी,
उसने गायी कड़ी एक, यह-
पूरा गीत सुनाएगी।

इसकी हुंकारें गर्जन बन
गूंज गगन में जाएगी,
कौन शक्ति दुनिया की बोलो
इसे रोक जो पाएगी ?

स्वतन्त्रता का अगम सिन्धु यह
थाह पलों मे लाएगी,
नई फौज आजाद हिन्द की,
सोया देश जगाएगी॥

★

समर-भेरी

□ राष्ट्रीय पथिक

असहयोगान्दोलन की समर-भेरी बजा दीजे।
निडर हो द्वेषियों को शक्ति अब अपनी दिखा दीजे।

स्वशासन कौन देता है खुशी से, पैर पड़ने से,
अगर हो "हिम्मते मर्दा" तो खुद कब्जा जमा लीजे।

न इस में खूनरेजी है न इस में संगरेजी है,
अगर है सिर्फ यह है दस्ते इमदादी हटा लीजे।

जिन्होंने शक्ति मद से मत्त हो पंजाब में निर्भय,
बहाया खून बच्चों का, उन्हें नीचा दिखा दीजे।

सती-साध्वी स्त्रियों तक का जिन्होंने मान तोड़ा है,
उन्हें शासन यहाँ करना असंभव बना दीजे।

गुलामी ही सिखाने के लिये निर्मित स्कूलों से,
तुरत ही अपने बच्चे-बच्चियों को अब छुड़ा दीजे।

अपढ़ रह जायं, रह जायें, गुलामी हम न सीखेंगे,
सुघड़ विद्यार्थियों ! यह वाक्य गुरुओं को सुना दीजे।

खुला दो कोर्टें अपनी, चलें पंचायतें अपनी,
भरे अन्याय से न्यायालयों को अब उठा दीजे।

जवां मर्दाने हिन्दुस्तां, नहीं है भेड़ के बच्चे,
मजा शेरों से भिड़ने का जरा इनको चखा दीजे।

★

मैं राजस्थान निवासी हूँ

ईश्वर

तन पुष्ट नहीं दुष्कालों से, मन तुष्ट नहीं नेस्यालों से ।
पर फिर भी दृढ़ विश्वासी हूँ, मैं राजस्थान निवासी हूँ ।।

दुर्दैव दुष्ट का मारा हूँ, स्वेच्छाचारों से हारा हूँ ।
निज स्वत्वों का अभिलाषी हूँ, मैं राजस्थान निवासी हूँ ।।

अत्याचारों को सहता हूँ, पर निष्क्रिय कभी न रहता हूँ ।
स्वातंत्र्यजहाज खलासी हूँ, मैं राजस्थान निवासी हूँ ।।

सब मिल कांग्रेस में जाते हैं, मुझको न निकट बिठलाते हैं ।
क्या मैं योरुप-अधिवासी हूँ, मैं राजस्थान निवासी हूँ ।।

दुःख सहा, दिया सुख औरों को, श्रम से धन सौंपा चोरों को ।
अब नीतिकुशल सन्यासी हूँ, मैं राजस्थान निवासी हूँ ।।

अपनों के और परायों के, दुश्मन तक के बरजायों के ।
हितचिन्तन का अभ्यासी हूँ, मैं राजस्थान निवासी हूँ ।।
मैं पाप-पंक का शोषक हूँ, निज पौरुष-प्रण का पोषक हूँ ।
मरता न कभी अविनाशी हूँ, मैं राजस्थान निवासी हूँ ।।
पापी निज कृत फल पावेंगे, पर दुःख मुझे बतलावेंगे ।
कारण कि स्वधर्म उपासी हूँ, मैं राजस्थान निवासी हूँ ।।
अब नहीं चलेगी मनमानी, हो राजा या कि महारानी ।
स्वातंत्र्य भाग्य आयासी हूँ, मैं राजस्थान निवासी हूँ ।।
निज जन्म सफल कर लेने को, माता के दुःख हर लेने को ।
मैं पर हित निपुण प्रवासी हूँ, मैं राजस्थान निवासी हूँ ।।

★

स्वाधीनतार्चन

□ चतुर्वेदी रामचन्द्र शर्मा

जन्म-सिद्ध अधिकार नहीं जिसको प्यारा है,
नर श्रेणी में वही अधम जग में न्यारा है।
जीवित भी वह मरा हुआ प्राणी है जग में,
पराधीनता – पाश पड़ी है जिसके पग में।
दुनिया में विख्यात है, मानव की प्राचीनता,
जगदीश्वर से है मिली, स्वतन्त्रता – स्वाधीनता।

उद्‌बोधन

□ निरंकुश

अगर है आपको अभिमान अपने सैन्य, धन, बल का,
तो हमें पूर्णत: विश्वास है, निज नीति – कौशल का।
कभी सम्मुख अनय के भूल, यह सिर झुक नहीं सकता,
बढ़ा जो पैर आगे क्षेत्र में, वह रुक नहीं सकता।
भरोसा आत्म-बल का है, सहारा सत्य-सीमा का,
नहीं है खौफ रत्ती भी, हमें धन-माल का, जाँ का।

कुर्बानी

□ निरंकुश

यहाँ तो देश पर सब कुछ किये कुर्बान बैठे हैं,
चढ़ाने को खुशी से सब सरो सामान बैठे हैं।

डराते हो हमें क्या जालिमों, जुल्मोतशद्दुर से,
गँवाने को यहाँ क्या है, नकदनाराण बैठे हैं।

दिखा कौटिल्य के विषधर उन्हें क्या फल निकालेंगे,
जो पहले ही चढ़ाकर चाप पर विष-बाण बैठे हैं।

डरें तो वे डरें इन भभकियों से, चक्रवातों से,
छिना जो तेग़ ग़ैरों से लिए अब म्यान बैठे हैं।

यहाँ तो प्राप्त करना ही पड़ा है, खूब खो-खो कर,
इसी से मृत्यु पर गाने बसन्ती तान बैठे हैं।

सहन कर-कर हमारे तो हृदय ही हो चुके पत्थर,
तभी तो सामने तीरों के सीना तान बैठे हैं।

लिया हठयोग-पथ हमने प्रकृति से युद्ध छेड़ा है,
बिना हथियार विजयी हों, यही प्रण ठान बैठे हैं।

बलिवेदी पर चढ़ लेने दे

□ निरंकुश

चढ़ लेने दे हृदय आज, बलिवेदी पर चढ़ लेने दे,
त्याग क्षेत्र में स्वयं-सेवा से, एक काम कर लेने दे।

धर देने दे माँ चरणों में, प्राण-पुष्प धर लेने दे,
अपनेपन को भूल आज, सर्वस्व भेंट कर देने दे।

हाँ घिरने दे भाग्य-शून्य में, विपत्ति-घनों को घिरने दे,
अजय-दुर्ग पर सच्चाई की, पीत-पताका उड़ने दे।

वीरभूमि की धलि धरे शिर, भाव-सैन्य को बढ़ने दे,
पूर्ण शक्ति से उन्हें क्रान्ति के, गिरि पर निर्भय चढ़ने दे।

शुद्ध शक्ति को समर भूमि में, दिलभर खूब विचरने दे,
असिधारा में पड़ परवशता, सर से पार उतरने दे।

क्या परवाह डूब जायगा, मरना है मर जाने दे,
माता हित मिट जाने वालों में तो नाम लिखाने दे।

जय है किसको मिली, स्थिर किस-किस का यहाँ निशान हुआ ?
जीवन उसका ही सफल हुआ, जो जीवन हित बलिदान हुआ।।

★

शिर चढ़ा देंगे

□ मेवाड़ी कृषक

विजय के वाद्य राजस्थान में मिलकर बजा देंगे,
इसी उजड़े चमन को आज हम उपवन बना देंगे।
शिशिर का हो चुका दौरा, चला ऋतुराज का चक्कर,
इन्हें वह शक्ति है रोते हुओं तक को हँसा देंगे।
जले, झुलसे, सुपल्लव पुष्पहत दुर्दैव के मारे,
सबल हो विश्व को जय-घोष से अपने हिला देंगे।
सुसुप्तों को जगा देंगे, जनों को पथ दिखा देंगे,
अमिट जो बन रहे दुर्गुण, उन्हें जड़ से मिटा देंगे।
भले ही माल, धन, ऐश्वर्य में हर एक बढ़ जावे,
मगर इस क्षेत्र में निर्द्रव्य भी सबको हटा देंगे।
हमारा सब स्वदेशोद्धार वेदी पर धरा होगा,
सुमन जिस थल गिरेगा, देश को हम शिर चढ़ा देंगे।

★

परिवर्तन

□ शीतलचन्द 'शीतल'

कितने परिवर्तन कर डाले, कितने ही करते जायेंगे,
एक दिन स्वराज्य हम पायेंगे, धर्मध्वजा फहरायेंगे।

मत-पन्थों का दकियानूसी आडम्वर हमने उड़ा दिया,
प्रिय देशप्रेम और स्वतन्त्रता का रंग कौम पर चढ़ा दिया।

चौकन्ना करके जाति का हाजमा हिफाजत वढ़ा दिया,
वह वुद्धपन छूतछात का भूत गढ़े में गढ़ा दिया।

अव वेद ज्ञान – सन्देश देश के घर – घर में पहुँचायेंगे,
एक दिन स्वराज्य हम पायेंगे, धर्मध्वजा फहरायेंगे।

●

युद्धवीर

तू युद्धवीर वन, वेद कहें गुंजार।
सिवा युद्ध के किसी देश ने कहाँ राज्यश्री पाई है।
युद्धवीर लोगों ही ने जय-ध्वजा सदैव उड़ाई है।
तलवारों से मुल्कों की बिगड़ी तकदीर वनाई है।
दुश्मन के खूनों से रणचण्डी की प्यास वुझाई है।
युद्धवीर के चरणों की ठोकर दुनिया ने खाई है।
युद्धवीर ने शासन कर जग को सभ्यता सिखाई है।

★

दीदये ख़ूंबारस

□ आर. एस. 'शीरन'

क्या दुआ माँगे भला इस चर्खे कज़ रफ्तार से।
जो मिटाने पर तुला हो, तोप और तलवार से।।

दस्ते शफ़क़त अब उठाकर छोड़ दे तकदीर पर।
जुल्म ही अच्छा है जालिम, सर ऐसे प्यार से।।

काट ले सर, खाल खिंचवाले, तुझे है अख्तियार।
जोशे दिल रुकता नहीं अब, जुल्म की बौछार से।।

गूंजती है कान में उन बेगुनाहों की सदा।
जो तसद्दुक हो गये हैं, गोलियों की मार से।।

याद आये जब तसद्दुक, 'डायरे खूँखार' का।
अश्के हसरत क्यों न टपके, दीदये खूँबार से।।

अब उठो ए अहले भारत, शोरोशर पर कान दो।
क्या सदायें आ रही हैं, जेल की दीवार से।।

सर में सौदा मुल्क का हो, दिल में हो दर्दे वतन।
मत डरो ए अहले दानिश, कैद के आज़ार से।।

एतबार उसका कहाँ, बातों का उसका क्या यकीन।
जो कि फिर जाता है अपने, कौल से, इकरार से।।

रह गया हो कोई शक तरजे हकूमत पर 'शरन'।
पूछ लो अपने दिले मुज़गर के हाले यार से।।

★

अरे, ओं राजस्थान उठ !

☐ दिक कवि

आज अरे ओ राजस्थान !

फिर सुनकर तेरी हुँकार,

जाग उठे पीड़ित संसार।

हिल जावें, जल, थल, आकाश,

अरि तज दे जीवन की आश।

रच ऐसा कुछ विजय-विधान,

आज अरे ओ राजस्थान।

रुक जावें ये वज्र प्रहार,

हो जावे कुंठित असिधार।

रहें न अत्याचार अनन्त,

हो दासत्व निशा का अन्त।

कर स्वातन्त्र्य-सुधा का पान,

उठ, आज अरे ओ राजस्थान।

★

झण्डा न नीचे झुकाना

☐ विजयसिंह पथिक

प्राण मित्रों भले ही गंवाना, पर यह झण्डा न नीचे झुकाना।

तीन रंगा है झण्डा हमारा, बीच चर्खा चमकता सितारा।
शान है यही इज्जत हमारी, सर झुकाती जिसे हिन्द सारी।
तुम भी सब कुछ मुसीबत उठाना, पर यह झण्डा न नीचे झुकाना।।

है यह आजादपन की निशानी, इसके पीछे है लाखों कहानी।
जिन्दा दिल ही हैं इसको उठाते, मर्द ही शीश इस पर चढ़ाते।
तुम भी सब कुछ इसी पर चढ़ाना, पर यह झण्डा न नीचे झुकाना।।

रे क्या भूले हो जलियानवाला, या वो डायर का इतिहास काला।
गोलियों की लगी जब झड़ी थी, नीव आजादी की तब पड़ी थी।
याद हो गर वो खूं में नहाना, तो न झण्डा ये नीचे झुकाना।।

उसने तो क्या-क्या न जुल्म ढाया, पेट के बल भी हमको चलाया।
माँ व बहनों को घर-घर रुलाया, कोसों पैदल बच्चों को चलाया।
और अब भी न क्या हो रहा है, कौन सुख नींद में सो रहा है।
लाखों पाते न भर पेट खाना, सच बोलो तो है जेलखाना।।
है इसी से पिछड़ा यह तराना, होना आजाद या मिट ही जाना।।

बस करलो अहद मर मिटेंगे, पर व्रत से न तिल भी हटेंगे।
कुछ भी हो यह मुल्क आजाद होगा, उजड़ा गुलशन भी आबाद होगा।
गायेंगे आज से सब ये गाना, हिन्द होगा न अब ये जेलखाना।।

झंडा यह हर एक किले पर चढ़ेगा, इसका बल रोज दूना बढ़ेगा।
तोप तलवार बेकार होंगे, सोने वाले भी बेदार होंगे।
सब कहेंगे कि सर ही कटाना, पर यह झण्डा न नीचे झुकाना।।

शान्त हथियार होंगे हमारे, पर ये तोड़ेंगे और के दुधारे।
बस भला हो जो अंग्रेज भागें, लोभ हिन्दी हुकूमत का त्यागें।
वरना बदला है यह क्या ठिकाना, उससे बदलेगा सारा जमाना ॥

हे प्रभो ! मति धीर हों हम, टेक सत्यत्व पर ही रखें हम।
हम क्या, कह उठा सब जमाना, दूध देखो न माँ का लजाना ॥
प्राण मित्रों भले ही गंवाना, पर ये झण्डा न नीचे झुकाना ॥

□

रेशम समझ कर रेंजियों को ही सदा अपनायेंगे,
वे भी न यदि हम को मिली तो भस्म देह रमायेंगे।

सूखे चने खाने पड़ें, पकवान गिन कर खायेंगे,
आसन न होगा, घास पत्ते या पयाल बिछायेंगे।

क्या विघ्न के राक्षस हमें भय का प्रपंच दिखायेंगे,
हम देश हित यमराज से भी मुदित हाथ मिलायेंगे।

तिल तिल अगर कटना पड़े निर्भय खड़े कट जायेंगे,
पर वीर राजस्थान का हर्गिज न नाम डुबायेंगे।

□

हम राजस्थान निवासी हैं

☐ विजयसिंह पथिक

हम राजस्थान निवासी हैं, हम वीर भूमि अधिवासी हैं ।
अब नहीं चलेगी मनमानी, हो राजा या कि महारानी ।
हम पूरे क्रांति उपासी हैं ।।

हम दुनियाँ नयी बनायेंगे, ढूंढ़ों पर महल चुनायेंगे ।
निबलों को सबल बनायेंगे, सबलों को मार्ग दिखायेंगे ।
हम समानता विश्वासी हैं ।।

हम निर्भय सदा विचरते हैं, दुखियों की सेवा करते हैं ।
रण में न काल से डरते हैं, बस ध्यान सत्य का करते हैं ।
हम कर्मयोग अभ्यासी हैं ।।

☐

मरते-मरते

☐ विजयसिंह पथिक

दाग़ दुश्मन को दिला जायेंगे मरते-मरते।
जिन्दादिल सबको बना जायेंगे मरते-मरते।।

हम मरेंगे भी तो दुनियाँ में जिन्दगी के लिए।
सबको मर मिटना सिखा जायेंगे मरते-मरते।।

सिर अगर धड़ से जुदा होगा, हो जायेगा।
कौम के दिल को मिला जायेंगे मरते-मरते।।

खंजरे जुल्म गला काट दे परवाह नहीं।
दु:ख गैरों के मिटा जायेंगे मरते-मरते।।

क्या जलायेगा तू कमजोर को ए जलाने वाले।
आह से तुझको जला जायेंगे मरते-मरते।

यह न समझो तुम्हारी मौत से होगी राहत।
सैकड़ों 'पथिक' बना जायेंगे मरते-मरते।।

☐

पीड़ितों का पंछीड़ा

माणिक्यलाल वर्मा

मर्दां, ओ रे ! काली तो भादूड़ा री रातां सोवे छा,
तन का कपड़ा खोवे छा, हाय पड्या पड्या थे रोवे छा।
आंसू सूं डीलड़ो धोवे छा, मर्दा, ओ रे ! काली तो.......।।

ढ़ांडा थांने जाण सिपाही कूटे छा, धन माल कमाई लूटे छा,
दूजां के खूंटे-खूंटे कूटे छा, आपस में भाई फूटे छा।
मर्दा, ओ रे ! काली तो भादूडा री रातांँ सोवे छा ।।

मर्दा, ओ रे ! वेगारां का जूता थां के सिर पर लागे छा,
पहरां में नितका जागे छा, थे देख सिपाही भागे छा,
वेगारी नाम सूं वागे छा, पहरा में नितका जागे छा।
मर्दा, ओ रे ! काली तो भादूड़ा री रातां सोवे छा ।।

मर्दा, ओ रे ! गहना को वो खाट तोड़वो उठ्यो छा।
लोहू को गुटको छूट्यो छा, लूण्यां को हांडो फूट्यो छा।
यो नार आंक सूं खूट्यो छा।
मर्दा, ओ रे ! काली तो भादूड़ा री रातां सोवे छा ।।

मर्दा, ओ रे ! पकड़ दड़क रुपयां को छन-छन निठगी छा।
कठती वत्ती सव कटगी छा।
घिसा और गाड़यां मिटगी छा, परणा की कीमत घटगी छा।
मर्दा, ओ रे ! काली तो भादूड़ा री राता सोवे छा ।।

मर्दा, ओ रे ! दौड़-दौड़ कर घूट्यो नजराणो देवो छा।
छाने छाने रिश्वत लेवो छा।
वो पागल उल्लू कहवो छा, वल्दांज्यूं रात दिन वहवो छा।
मर्दा, ओ रे ! काली तो भादूड़ा री रातां सोवे छा ।।

मर्दा, ओ रे ! एकठ थां को देख सभा ने रोके छा ।।
बन्दे की बोली टोके छा, झूठां भूतां ने धोके छा,
बिन बादल मोर्‌या कूंके छा ।
मर्दा, ओ रे ! काली तो भादूड़ा री रातां सोवे छा ।।

मर्दा, ओ रे ! थां बालक हाथ कंवारा रेवे छा ।
पण नूत बराड़ौ देवे छा, घर भूखा रहवी सहबो छा ।
थे हाय निसासी लेवे छा ।
मर्दा, ओ रे ! काली तो भादूड़ा री रातां सोवे छा ।।

मर्दा, ओ रे ! हाकम हाकम करता हास्या छा ।
कूंतां में पूरा मास्या छा, घर में नहीं बचता खास्या छा ।
सोमल खां मरनो धान्या छा ।
मर्दा, ओ रे ! काली तो भादूड़ा री रातां सोवे छा ।।

मर्दा, ओ रे ! सुणकर अर्जी एक देवता आयो छा ।
जीको पैतों नहीं पायो छा ।
बूंटी सत्याग्रह लाज्यो छा । तब लोगां के मन में भाग्यो छा ।
मर्दा, ओ रे ! काली तो भादूड़ा री रातां सोवे छा ।।

मर्दा, ओ रे ! देखो आंख्या खोल सूरजो उग्यो छा ।
दूजो काकोजी पूग्यो छा ।
पापीड़ो पड़ग्यो लूग्यो छा, बीज धर्म को उग्यो छा ।
मर्दा, ओ रे ! काली भादूड़ा री रातां सोवे छा ।।

मर्दा, ओ रे ! कांटा की या बाढ़ खेत ने खागी छा ।
या भूख ज्वाला लागी छा, लुगायाँ होगी नांगी छा ।
या मौत सामने आगी छा ।
मर्दा, ओ रे ! काली तो भादूड़ा री रातां सोवे छा ।

मर्दा, ओ रे ! रींछ बांदरा नार स्याल सब झूमेगा ।
काली नागण भी फूंकेगा, फिर चोर लुटेरो लूटेगा ।
कपड़ा लेबान घूमेगा ।
मर्दा, ओ रे ! काली तो भादूड़ा री रातां सोवे छा ।।

मर्दा, ओ रे ! काल कोठरी भीतर थांने खड़केगा ।
बन्दूक्यां न्याली अड़केगा, तोपां की जोड़्यां धड़केगा ।
वे सपना में भी भड़केगा ।
मर्दा, ओ रे ! काली तो भादूड़ा री रातां सोवे छा ।

मर्दा, ओ रे ! हाथ जोड़बो छोड़ आख्याँ राती करलो ।
ई खुसामद ने दूरी धर लो, झूठो मत पीवो थां जड़दो ।
यो मर्द नसो डील में भरदो ।
मर्दा, ओ रे ! काली तो भादूड़ा री रातां सोवे छा ।।

मर्दा, ओ रे ! मरताँ मर जाज्यो पण लागत मत दीज्यो ।
घणी करे तो हासिल भी मत दीज्यो, बेड़ी का दु:ख थे पालीज्यो ।
अन्नदाता कहबो छोड़ दो, यो मत खीज्यो ।
मर्दा, ओ रे ! काली तो भादूड़ा री रातां सोवे छा ।।

मर्दा, ओ रे ! याद ओरे करज्यो ललकारी ।
बड़ी अन्त में धूजेगा, खरला में भी जस गूंजेगा ।
हो रोग अन्यायी सूजेगा, पग पाछा थांका पूजेगा ।
मर्दा, ओ रे ! काली तो भादूड़ा री रातां सोवे छा ।।

□

वतन पर मरने वाले तू

□ माणिक्यलाल वर्मा

वतन पर मरने वाले तू, कुरबाँ की तैयारी कर,
कि मक़तल पर चढ़ा मंसूर, वैसी होशियारी कर ।।

भगतसिंह सा भगत वन जा, या नरसी की फकीरी ले,
लुटा दे मुल्क पर दौलत, घर की भी ख्वारी कर ।

चढ़े सूली, लगे गोली, जलाया जंगलों में जाय,
निशां न हो कब्र का भी, उस दोजख में सबूरी कर ।

खुदा जनता का सेवक वन, गरीवों का निशां धो दे,
न तू नजदीक वहिश्त के हो, न दोजख की ही दूरी कर ।

न वन जालिम कभी भी तू, न वन खिदमत का ठेकेदार,
न डिक्टेटर का आदी हो, न भूली सी जम्हूरी कर ।

अर्जी

□ नयनूराम शर्मा

लेता जाजो जी नानक जी भील, अर्जी पंचा की,
दीजो म्हांकी अरजी परम पिता के हाथ।
बून्दी की दुखिया परजा की कीजो सारी बात।।

डूब्यो धरम पाप छायो छै, नीत राज की खोटी।
बालक बूढ़ा पचां रात दिन, फिर भी मिले न रोटी।।

तन ढकबा सारूं न चींथरा, नान्यां डोले नागी।
फिर भी पापी म्हाके ऊपर, गोल्यां भर भर दागी।

राजो दारू पी सूतो, गोला लूट मचाई।
सब रैय्यत ने लूट लूट, मोटी हेल्याँ बणवाई।।

भूगतो घणी दुखां में रैय्यत, अब तो कंठ तक डूबी।
मरबा सारूं सत्याग्रह पर अब तो डटकर ऊबी।।

तू अनाथ को नाथ कहावे, हे तिरलोकी नाथ!
छोड़ बडां ने अब तो धर दे म्हां के माथे हाथ।।

इतरी डाक खानवां छां म्हैं नानक थारे साथ।
दूजी डाक फेर आवे छै, कह दीजो या बात।।

कह दीजो जां तक म्हाकी होगी नहीं सुणाई।
मरबा ऊपर ऊवां छां सब, बालक लोग लुगाई।।

धन्य धन्य थारी जननी नै मर्यो देश के काम।
चांद सूरज बूंदी है जां तक, थारो रहसी नाम।।

डावी का कुछ देशद्रोही, बुरो देश को ताक्यो ।
दूजा मोडो, ओनाड़ी ठाकर, थां पर फंद्यो नांक्यो ।।

रामकिशन हाकम, इकरामों सुपरडंट को डंक ।
नाजिम घन्नालाल यां मांथे, रहती सदा कलंक ।।

छोरा छोर्‌यां को धोको मत लाज्यो रत्ती मन में ।
वे म्हांका छै, म्हां वांका छां, ई दु:ख-सुख जीवन में ।।

कै तो थारी वलि दु:खां सू म्हां छूट जावां छां ।
दूजू मोड़ा वेगा म्हां भी, सारा ही आवां छां ।।

अब तो हो में एक किनारा पर ही रहसी वात ।
कै तो अन्याय मिटेगो, के म्हां को सिर साथ ।।

□

हीरा और कोयला

□ हरिभाऊ उपाध्याय

हीरा बनकर राजमुकुट का कैदी होऊँगा,
किन्तु कोयला बनकर घर-घर आग जगाऊँगा ।

खुश किस्मत हूँ नहीं कि देखो
राजमुकुट यह सिर पर है।

खुश किस्मत हूँ क्योंकि भाग्य से
लाखों आखों में घर है।

फूल बनूँगा तो खुशबू दे आदर पाऊँगा ।
कांटा रह तन दे जीवन की बाड़ लगाऊँगा ।।

आग चमककर, ऊँची उठकर
जग में शोहरत पाती है।

पर लकड़ी जगहित जल-जल कर
वहीं राख बन जाती है ।।

□

गौरव-झरना

□ हरिभाऊ उपाध्याय

छिड़ा भीषण स्वराज्य संग्राम,
दिखा दो अपना-अपना काम ।

सत्य के वख्तर को कसकर,
शान्ति के शस्त्रों से सज कर ।

बढ़ाते चलो कदम आगे,
न मन में लाना कुछ भी डर ।

वीर तुम शिव-दधीचि संतान,
मौत मत श्वानों की मरना ।

पूर्वजों का तुम रखना मान,
प्रवाहित कर गौरव-झरना ।

ऐसो दीजो राज

□ जयनारायण व्यास

(१)

म्हांने ऐसो दीजो राज, म्हारा राजा जी !

(२)

गांव गांव पंचायत चुणकर, पंच चलावे राज। म्हारा० ।।

(३)

जिले जिले री कमेटियाँ में, व्है परजा रो काज। म्हारा० ।।

(४)

बड़ी कमेटी व्है जोधाणे, चोखा उणरा साज। म्हारा० ।।

(५)

वोट नांख ले पंच चुणीजे, म्हारी करे आवाज। म्हारा० ।।

(६)

पंचां मांय सूं बणे मिनिस्टर, रखे न्यावरी लाज। म्हारा० ।।

(७)

कम खरचे सूं काम चलावे, करे न काज कुलाज। म्हारा० ।।

(८)

घणी पढ़ाई और सफाई, मिले पेट भर नाज। म्हारा० ।।

(९)

चंगा ताजा मिनख रहे सब, बंधे प्रेम री पाज। म्हारा० ।।

(१०)

शोभा थांरी इणसूं होसी, सुण लीजो महाराज। म्हारा० ।।

□

हम क्या चाहते हैं ?

□ जयनारायण व्यास

बतावें तुम्हें हम कि क्या चाहते हैं,
हुकूमत का ढंग कुछ नया चाहते हैं ।।१।।

मुकर्रर करें पंच हर गांव में हम,
उन्हें इन्तजाम हम दिया चाहते हैं ।।२।।

हो हर जिले में हमारी हुकूमत,
दे मत हम उसे चुन लिया चाहते हैं ।।३।।

मुकम्मिल रहे हम पै ही जुम्मेवारी,
प्रजा की हुकूमत किया चाहते हैं ।।४।।

न रिश्वत रहे और बेगार मिट जाय,
किसानों को राहत दिया चाहते हैं ।।५।।

सही बात लिखने व कहने व मिलने,
की आजादी हासिल किया चाहते हैं ।।६।।

फकत चाहते हैं प्रजा की भलाई,
फकत चैन से हम जिया चाहते है ।।७।।

न कोई हमारे हुकूक हमसे छीने,
न हम औरके हक लिया चाहते हैं ।।८।।

सभी को है हक चैन की जिन्दगी का,
सभी से गले मिल लिया चाहते हैं ।।९।।

ग़ैर जिम्मेदार हुकूमत

☐ जयनारायण व्यास

फील्ड साहब की हकूमत गैर जिम्मेवार है ।
इसलिए करसों के सर पर तन रही तलवार है ।।

जब से हजरत ने कदम रखा है मरुधर देश में ।
तब से वर्षा है न पानी काल की भरमार है ।।

महकमों में हुक्म है दरबार का बस नाम को ।
नौकरों के हाथ में सारा ही कारोबार है ।।

पूछता कोई नहीं राजा व प्रजा को यहाँ ।
आज दीवानों ने दाबा सबका सब दरबार है ।।

जुल्म चण्डावल में ढाये और सितम निमाज में ।
जालिमों के हाथ में इस देश की सरकार है ।।

ठाकुरों को छूट दी दारू निकालें और पीयें ।
ताकि कम होने न पाये जुल्म की रफ्तार है ।।

जुल्म करते हैं ठिकाने खूब पी पी कर शराब ।
क्या सुनावें आपको बस कहना अब बेकार है ।।

नौजवानों खत्म करदो ले लो जिम्मेवारियाँ ।
नौकरों की यह हकूमत गैर जिम्मेवार है ।।

छत्र छाया में बनें दरबार के ऐसा विधान ।
और कहे संसार रेगिस्तान क्या गुलजार है ।।

☐

खोटी कमाई

जयनारायण व्यास

राज पेट भर देवै रोटी, फिर भी करै कमाई खोटी ।।

रिश्वत वो सरकारी चोरी, मुफ्त कमाई लाग सोरी,
झटपट बूध बणै फिर मोटी, फिर भी करै कमाई खोटी ।।१।।

देखे नहीं न्याव-अन्याव, धन जोडण रो मोटो चाव,
शानदार बणावावै कोठी, फिर भी करै कमाई खोटी ।।२।।

तीत-अतीत नहीं तू देखे, आयो धन लाठी सूं लेवै,
पकडै दीन दुखी री चोटी, फिर भी करै कमाई खोटी ।।३।।

घणी दुरासीसां ले चुकियो, फिर भी है भूखौ रौ भूखौ,
लारे लागे लेकर सोटी, फिर भी करै कमाई खोटी ।।४।।

बुरी गरीबी री है हाय, ईश्वर न नहीं आवै दाय,
उणरी टीस नहीं है छोटी, फिर भी करै कमाई खोटी ।।५।।

दिन लेखो लेणे रो भासी, तब करणी रा फल तू पासी,
उंचसी नहीं पाप री पोटी, फिर भी करै कमाई खोटी ।।६।।

निबलां नैं है घणा सताया, चूँट-चूट कर वां नै खाया,
विकवादी चाँदी री टोटी, फिर भी करै कमाई खोटी ।।७।।

उण रा फाटा कपड़ा खौस, फूल्यो फिरै राल मन जोस,
धारण होसी थनै लंगोटी, फिर भी करै कमाई खोटी ।।८।।

जद हिसाब उण घर होवेला, तड़प-तड़प कर थै रोवैला,
किस्मत आखिर होसी फोटी, फिर भी करै कमाई खोटी ।।९।।

कुण ?

□ जयनारायण व्यास

धान घणो उपजावै कुण ?
पेट नही भर पावै कुण ?
हाथाँ वस्त्र बणावै कुण ?
फिर नागो रह जावै कुण ?
सब नै सुख पहुँचावै कुण ?
उण करसै री बातां सुण ।

हुकम दे चुकी है सरकार,
इण सूं मत लीजो बेगार,
फिर भी मुफ्त लाद दे भार,
अहलकार वो जागीरदार,
दुखड़ो ओ सहलावै कुण ?
उण करसै री बातां सुण ।

अफसर अठी उठी जद जावै,
मोटा-मोटा भत्ता पावै,
खूब समान साथै ले जावै,
नहीं जबान हिलावै कुण ?
उण करसै री बातां सुण ।

साथ अगर ह्वै घोड़ी घोड़ो,
चार नहीं चाहिजै ना थोड़ो,
खूंटी रो पो मार हथोड़ो,
काम करो या भुगतो कोड़ो,
जबरन ज्यों त्यों जावै कुण ?
उण करसै री बातां सुण ।

करै ठिकाणां में जो बारस,
खोद-खोद नित लावै घास,
जो ना देवै वो वदमाश,
उणरो होवै सत्यानाश,
इण सूं चुप रह जावै कुण ?
उण करसै री वातां सुण ।

इणरी वात सुणाव कुण ?
ध्यान राज रै लावै कुण ?
नित रो दु:ख मिटावै कुण ?
धण आसीसों पावै कुण ?
ओ नहीं समझै मैं हूं कुण ?
उण करसै री बातां सुण ।

सेवा री लौ

जयनारायण व्यास

जग में वो ही है वडभागी, जिण रै लौ सेवा री लागी ।
खावै हाथी, खावै घोड़ा, खावै कीड़ी कीड़ा,
भर्‌यो पेट धरम रो जाणै वो धरती री पीड़ा,
मोटो वो ही है जो त्यागी, जिण रै लौ सेवा री लागी ।।१।।

मिनख-मिनख में फर्क इत्तो ही, एक स्वार्थ में लागै,
दूजो परमारथ करणै रो जतन करै, नै जागै,
वो ही है साँचो वैरागी, जिण रै लौ सेवा री लागी ।।२।।

जो दूजां नैं दु:ख दे देकर, धन दौलत हथियावै,
करणी रो फल आखर पावै, परभौ भी बिगड़ावै,
वगसी कदे न ऐडो दागी, जिण रै लौ सेवा री लागी ।।३।।

जनम लियो वा कौम बड़ी, है सेवा उणरी करजे,
उणरी सेवा करतां जीवो, उणरी खातर मरजे,
उण रा मत वणजो थे वागी, जिण रै लौ सेवा री लागी ।।४।।

रामजी सूं ओलंबी

☐ जयनारायण व्यास

ओ मिनख जमारो राम, म्हाने मत दीज ।।

नित परभाते नारा जोड़ो, दिन भर वांरी पूंछ मरोड़ो,
खूब करो काम ।।१।।

धानां रा ढ़िगला रा ढ़िगला, म्हें ही ए निपजावां,
सिगला वात रै चाम ।।२।।

पिण भूखा टाबरिया म्हारां, गावलिया फाटा करसां रा,
वाजां मूंड निलाम ।।३।।

करजै सूं हा थाका काठा, बांधां रोज पेट पर पाटा,
नहीं पास मैं दाम ।।४।।

नहीं करै मीनत मजदूरी, सुख सम्पत उण रै घर पूरी,
मोटा व्हारां धाम ।।५।।

म्हांसूं तो ढांढा ही आछा, धंधो कर जद आवै पाछा,
करै खूब आराम ।।६।।

☐

रिश्वत छोड़ दे

☐ जयनारायण व्यास

रिश्वत छोड़ दे,
महाराजाजी री सख्त मनाई है, रिश्वत छोड़ दे ।।

थने मिले तनखा माहवारी और तरक्की होवे रे,
म्हां पर करज रोटियां खातर, टाबर रोवे रै..........।।१।।

थारो घर पक्को बणियोड़ो, चोखो थारो गाबो रे,
म्हारी टपरी री छपरी में, दीखै आगो रे..........।।२।।

बरतन थारे गहणा थारे, म्हारी हांडी फूटोड़ी,
टाबर नागा, राली फोटी, मचली टूटोड़ी..........।।३।।

थां सूं म्हारो हाल बुरो है, फिर भी थूं क्यूं लूटै रे,
जो निबलां ने रोसे, उण सूं भगवन रूठै रै..........।।४।।

घड़ो पाप रो जद भर जासी, करणी रा फल पासी रे,
हाय गरीबां री जो लेसी, नरकां जासी रे..........।।५।।

☐

डंके की चोट

☐ जयनारायण व्यास

कहदो आ डंके री चोट, मारवाड़ नहीं रैसी ठोठ ।।

(१)

अब मैं सूता नहीं रहां ला, गांव गांव आबात कहांला ।
पैला काढो घर री फोट, मारवाड़ नहीं रैसी ठोठ ।।

(२)

जगां जगा स्कूल खुलावो, अरजी दो आवाज उठाओ ।
मरद बणो मत बाजो फोट, मारवाड़ नहीं रैसी ठोठ ।।

(३)

सुण जो रे कालेजी छोरा, अब थे थोड़ा हुइजो दोरा ।
लो जुम्मेवारी री पोट, मारवाड़ नहीं रैसी ठोठ ।।

(४)

गरमी री छुट्टियां में जावो, पढणों लिखणो उठे सिखावो ।
कुछ दिन खावो जाडा रोट, मारवाड़ नही रैसी ठोठ ।।

(५)

सुणो जवानों म्हारी बात, परिषद रो थे दीजो साथ ।
आवो मरदा बांध लंगोट, मारवाड़ नहीं रैसी ठोठ ।।

(६)

मारवाड ने फरज सिखाओ, अरजी दो आवाज उठाओ ।
तकलीफो री करो रिपोट, मारवाड़ नही रैसी ठोठ ।।

(७)

लोक हितैषी पंच चुणो सब, परजा हित री बात सुणो सब ।
सोच समभ कर देवो वोट, मारवाड़ नहीं रैसी ठोठ ।।

☐

मुरधर माय

जयनारायण व्यास

(१)

वीनती सुणी नि म्हारी मुरधर माय, थोड़ी दया चित लाय।
दुखियों री बिखायतां री करजो थे सहाय ।।म्हा०।।

(२)

धानड़ो निपजावां म्हें तो ढील न सुखाय,
सर तोडा टाबरिया तांई करे हाय-हाय ।।म्हा०।।

(३)

सियाळै उनाळै राखां मन में हुलास।
छणी दावां विणिया वीणां मोकलो कपास ।।म्हा०।।

(४)

तांई फाटा चीथरा सूं गुजारो करां।
ठंड में ठरठरता विना मौत ही मरां ।।म्हा०।।

(५)

ठीकरा अडाणा बाजां घर रा धणी,
भूखां मरतां आख्यां धंसगी टाबरियां तणी ।।म्हा०।।

(६)

सोना हन्दी चिड़ियों सूं सूनो हुयगो देस,
वाणियां रै भोगलावे करसा हन्दा केस ।।म्हा०।।

(७)

वर री बणियां ने मिले नहीं चीर,
फाटगा धावलिया राल्यां हुयगी लीरां लीर ।।म्हा०।।

(८)

सेठ जी लगायो नहीं हलवाणी रै हाय।
सेठाणीजी वारे निकले सेज गाड़ियां साथ ।।म्हा०।।

(९)

खाय पीय न लारे लागी रावला री बैठ,
रोट्यां रा देवाल हुयगा हिंडोला सूं हैठ ।।म्हा०।।

(१०)

खेतरा जोते न कोई भणे न गुणे,
ऐ दारूड़ा पीवे ने माठा मारूड़ा सुने ।।म्हा०।।

(११)

निकामा निठाला बैठा ठकरायां करे,
रोट्यां रा देवाल करसां भूख सूं मरे ।।म्हा०।।

(१२)

म्हारी मोटी माय म्हाने मारग बताय,
शरणागत आयारा दु:ख-दालद मिटाय ।।म्हा०।।

□

यक वतन हमारा

□ गणेशलाल व्यास 'उस्ताद'

(१)

मजहब जुदा जुदा हैं, यक है वतन हमारा ।
हिन्दू भी मुसलमां भी, हैं एक मां का प्यारा ।।

(२)

यक खाक के हैं पुतले, यक खाक में मिलेंगे ।
है एक खूं नसों में, किस्मत ने किया न्यारा ।।

(३)

कुदरत ने यक बनाया, मुमकिन नहीं जुदाई ।
यक जिस्म की दो आँखें, कैसे करें किनारा ।।

(४)

आजाद था किसी दिन, हिन्दोस्तान अपना ।
आपस की फूट ही से, बर्बाद हुआ सारा ।।

(५)

उस कौम का है मुश्किल, नामों निशां भी बचना ।
गर यक की मुसीबत में, दूसरा न है सहारा ।।

(६)

है अहले हिन्द सारे, हिन्दू भी मुसलमां भी ।
दोनों की जबां पर है, 'आजाद हिन्द' नारा ।।

□

आजादी पर मरने वाले

□ गणेशलाल व्यास 'उस्ताद'

(१)

हर दिल में जिन्दा रहते हैं, आजादी पर मरने वाले।
कब जुल्मो-सितम सह सकते हैं, वह जान फिदा करने वाले ।।

(२)

जिसकी मिट्टी से बने हुए, गर वही वतन आजाद नहीं।
कुर्बान वतन पर होते हैं, तब फर्ज अदा करने वाले ।।

(३)

जो मान गुलामी को राहत, सोते हैं नरम बिछौनों पर।
जिन्दा भी वे मर जाते हैं, मर जाने से डरने वाले ।।

(४)

मैदाने जंग में बिछे हुए, हैं काँटे भी गुल उनके लिए।
अपने खूँ से रणचण्डी का, जो हैं खप्पर भरने वाले।

(५)

हम वतन गुलामी के मारे, दाने-दाने को तरसते हैं,
तब नूरे शहादत पाते हैं, सर शूली पर धरने वाले।

(६)

अब तौक गुलामी का फेंको, वर्ना यह जां कुर्बान करो।
दिन याद करो जब हम हिन्दी, थे दुनियाँ सर करने वाले ।।

□

बेजार हूँ

□ गणेशलाल व्यास 'उस्ताद'

(१)

अय फलक मैं सुनाऊं किसे दर्दे दिल, अपने प्यारों की फुर्कत में बेजार हूं।
कैसे बेकस हूं औ वेवस हूं मैं, औ शहीदों के खूं में शराबोर हूं ।।

(२)

बता आसमां उनकी क्या थी खता, मिली कमसिनी में जिन्हें शूलियां।
जिनके हर कतरे खूं की यही थी सदा, मेरी माता के गम में गमख्वार हूं।

(३)

मेरे गुलशन के गुल वो खिले भी न थे, कि बेदर्द सैयाद ने चुन लिये।
लाखों टुकड़े जिगर के हो गये उन, जवानों के मातम का इजहार हूं ।।

(४)

वे मेरी आवरू पर फिदा हो गये, पर मेरी बेड़िया उनसे कट न सकी।
उनकी कुर्बानियों पर सितम रो पड़ा, उफ् मेरी हस्ति क्या मैं भी बेकार हूं ।।

(५)

मेरे रोने पर हंसता है क्यों इस तरह, जली पर नमक उफ छिड़कता है क्यों।
अय जालिम सताता है क्यों इस कदर, जब तेरी कैद में यों गिरफ्तार हूं ।।

□

माथा देणा पड़सी मुलक नै मौट्यारां

☐ गणेशलाल व्यास 'उस्ताद'

मुलक नै मोट्यारां माथा देणा पड़सी
देस नैं मोट्यारां, माथा देणा पड़सी ।

बीत गयो जूनो जुग सारो, बदल रयो दुनियां रो धारो,
जुग नै हाथ लगावो ।

सिर सोदै री साध सपूतां, पूरी किण विध होसी सूतां,
जागो जगत जगावो ।

मुरधर रा मूंघा मानवियां, काज सरै सिर सूंघा करियां,
रण रा साज सजावो ।

जुलम जोर री जड़ नै काटो, फूट भूठ री खाई पाटो,
हिलमिल हाथ लगावो ।

आवो अपणो देस उबारा, भारत माँ रो भार उतारां,
सिर दे नाक बचावो ।

☐

चल पड़ी फौज मस्तानों की

☐ गणेशलाल व्यास 'उस्ताद'

(१)

आजाद वेकसों को करने, चल पड़ी फौज मस्तानों की।
वेजानों में जाँ भरने को, टोली निकली मरदानों की॥

(२)

हर एक का सर है हथेली पर, और जोशे शहादत दिल में भरा।
कुर्बानी की है चाह इन्हें, सब दुनियाँ के अर्मानों की॥

(३)

मर कर जीने की धुन इनको, है लगी जहाँ के हक के लिए।
मिट जाने की ख्वाहिश है इन, आजादी के परवानों की॥

(४)

शुह देख रंग इन वीरों का, सब जालिम भूले जाते हैं।
सब दुनियां छिग निग करती है, जल्लादों की शैतानों की॥

(५)

आबाद और खुश रहे जहाँ, भूले इनको या याद करें।
दुनियां का दर्द मिटाने की, बस जिद है इन दीवानों की॥

(६)

भाई भाई का रहू नहीं, दुनियां पर हक का साया रहे।
है यही तमन्ना यही तड़प, इन दो दिन के मेहमानों की॥

☐

जमाने से हम जो गुजर जायेंगे

☐ गणेशलाल व्यास 'उस्ताद'

(१)

जमाने से हम जो गुजर जायेंगे ।
तो आजाद होंगे या मर जायेंगे ।

(२)

हुए हैं बिला शक जमाने से पैदा ।
बदल हम उसे भी मगर जायेंगे ।

(३)

जुल्मों का नामो-निशां तक मिटा कर ।
हम जालिम को इन्सान कर जायेंगे ।

(४)

सितमगर गरीबों पै होते रहेंगे ।
तो लाखों शहीदों के सर जायेंगे ।

(५)

किसी घर में उस रोज मातम ना होगा ।
जो मरने को तख्ते जिगर जायेंगे ।।

(६)

यह होगा जमाना गुनाहों से खाली ।
इधर जायेंगे या उधर जायेंगे ।।

☐

मारवाड़ के नौकरशाह की मनोदशा

□ अचलेश्वर प्रसाद शर्मा

इण मारवाड़ रे मांय म्हे तो मजा करां ।।

वड़े राज रा नौकर हाँ,
मोटी तिनखा पावां हां ।
भत्तों की है भरमान्ण, म्हे तो मजा करां ।। १ ।।

ठोठी रैयत नै लूटां,
जो कूके उण ने कूटां,
पड़ जावां उणरो लारे, म्हे तो मजा करां ।। २ ।।

रिश्वत दे तो काम करां
नहीं देवे तो तंग करां,
कर दां उणनै बर्बाद, म्हे तो मजा करां ।। ३ ।।

काल दुकाल भले ही पड़ो,
लोग मांदगी में भी सड़ो,
म्हांने नाहीं आवे आंच, म्हे तो मजा करां ।। ४ ।।

झूठो तो साचों कर दां,
साचों नै झूठो कर दां,
म्हे हां पूरा उस्ताद, म्हे तो मजा करां ।। ५ ।।

म्हे किण सूं भी नहीं डरां,
चूको तो नहीं दण्ड भरां,
म्हे हां मतलब रा यार, म्हे तो मजा करां ।। ३ ।।

रोवे जिका रोवण दो,
दु:ख पावे तो पावण दो,
म्हारे तो रुपियो ही राम, म्हे तो मजा करां ।। ७ ।।

□

हम गरीब हैं

□ अचलेश्वर प्रसाद शर्मा

(१)

ईमान वाले, गो भूखे नंगे गरीब हैं हम, गरीब हैं हम ।
हम अपनी मेहनत से पेट भरते, गरीब है हम, गरीब हैं हम ।।

(२)

जमीन बो कर किसान बनकर, है खुद की अस्ती में सांप पाले ।
उन्हें खिलाकर खुद मर मिटे हैं, गरीब है हम, गरीब है हम ।।

(३)

कभी बनाने लगे जो कपड़ा, तो कारखानों में जां लड़ा दी ।
हमारे बच्चे हैं फिर भी नंगे, गरीब हैं हम, गरीब हैं हम ।।

(४)

मकान हमने बनाये लाखों, मिला है रहने को फिर भी दल-दल ।
उधर बगीचे, इधर है बदबू, गरीब है हम, गरीब हैं हम ।

(५)

जहां की दौलत को हम कमाते हैं, फिर भी खाना उधार खाते है ।
जहां के दाता है खुद भिखारी, गरीब हैं हम, गरीब हैं हम ।

(६)

हमारी ताकत हमीं न जानें, न अपनी कीमत को भी पिछानें ।
कसूर इतना हम मानते हैं, गरीब हैं हम, गरीब है हम ।

(७)

मगर सलामों के दिन हैं गुजरे, बराबरी का जमाना आया ।
कसूर इतना हम मानते हैं, गरीब हैं हम, गरीब हैं हम ।

अरज सुण आज्यो आगवाण

मूलचन्द भट्ट 'भौंर'

अरज सुण आज्यो आगीवाण !
म्हांकी दशा आज कैसी है, थां भी लो पहचाण !

पडिया लिखिया म्हां में कोनी, लागी खेंचाताण ।
बूढ़ा सारा मद में डूब्या, वण बैठ्या अणजाण ।।

भाई भोला, टावर भोला, म्हे भोला अणपाण ।
गुरु रूप बुगलाजी आया, माची धाण मथाण ।।

म्हे समझां छा आने मोटा, सगला गया ववांण ।
थांकी बात भूलग्या म्हां भी, पाणी पीयो छाण ।।

एड़ा सैंठा घर में पैठा, दे सगली ओलखाण ।
पदवी को परसाद बंटायो, लागा मंगल गाण ।।

म्हांने वात बतावण लागा, वरावरी वेसाण ।
म्हांके थका नचीता रेवो, सोवो खूंटी ताण ।

म्हां भूल्यां को भाग भास्कर, भव सूं भयो मंदाण ।
दीपक ले घर दर देखाल्यो, होवण लागी हाण ।।

एवो अकलां इसी उपाई, वण खाटू की खाण ।
धीरे-धीरे लेवण लागा, म्हांसू मोटा डाण ।।

भूखां मर मर पेट वैठग्या, रूप हुवो कृष-काण ।
घर वाला ओलखाणे नहीं, माऊ रे एलाण ।।

आजादी को मंत्र भूलग्या, किण सूं करां बखाण ।
विना कयां रहीजे नाही, डाकू लग्या डफाण ।।

म्हांने इस्या चूमल्या छिन में, ना राख्यो कड़पाण ।
रक्षक भक्षक भया "भौंर' सा. मोटी मोजां माण ।।

जल्दी चेतजो

☐ धीरजमल बछावत

(तर्ज : तू नेणों में मत सार, कोरो काजलियो)

कपड़ो ले परदेश को, थे घणा हुआ बेकार–जल्दी चेतजो ।
रोटी छिन गई दीन की, है नष्ट हुओ व्यापार–जल्दी चेतजो ।
बरसा बरसी जा रह्यो, धन क्रोडों को है बार–जल्दी चेतजो ।
चरबी लागे गाय की, इण भ्रष्ट कियो आचार–जल्दी चेतजो ।
फैशन में ही सब ही फँसे, तन भीणे कपड़े धार–जल्दी चेतजो ।
जाय चुकी है सादगी, इण वस्त्र विदेशी लार–जल्दी चेतजो ।
चमक-दमक के वेश से, है फैल रह्यो व्यभिचार–जल्दी चेतजो ।
भांत चला कर नई-नई, है खींचे द्रव्य अपार–जल्दी चेतजो ।
मलमल, मखमल जोरजट, है घर-घर में परचार–जल्दी चेतजो ।
जो खादी धारण करो, हो जावे उच्च विचार–जल्दी चेतजो ।
'धीरज' धारण कर रह्यो, है खादी को सब कार–जल्दी चेतजो ।

☐

ये सरकारी नौकर

□ धीरजमल बछावत

पब्लिक के नौकर अहलकार अक्सर मनमानी करते हैं ।
ले कानूनों की ओट खोट खा जेवें अपनी भरते हैं ।। टेरे ।।

दिखलाकर आंखें लाल लाल मानो पिण्डी को पकड़ रहे ।
दस्तूरी का दस्तूर बता – पब्लिक के पैसे हरते हैं ।। प० १

हो एक मिनट का काम जहां घंटों पर टाला करते हैं ।
जो पूछे कारण देरी का तो ऐंठ बाँध कर जरते हैं ।। प० २

जिस काम के हित तनख्वाह पात वह करते हैं खोटाई से ।
गरजें करवा कर काम करें – एहसान बड़ा सर धरते हैं ।। प० ३

मन से महाराजा बनकर के, हैं चार इन्च ऊंचे रहते ।
पब्लिक से प्रेम बढ़ाने में नाहक मन ही मन डरते हैं ।। प० ४

गांवों में इनका जुल्म बड़ा, बेगारी में सब काम लेते हैं ।
पानी ईंधन दही दूध मंगाकर, माल मुफ्त में चरते हैं ।। प० ५

नाई बारी सर बुलवाकर, बरतन झूठे मंजवाते हैं ।
देना उनको कुछ दूर रहा, उलटा बे-इज्जत करते हैं ।। प० ६

अनुभव में जैसी आई–'धीरज' ने सच्ची कह डाली ।
सब जगह बहुत से अहलकार, ऐसे ही यार गुजरते हैं ।। प० ७

□

दाने दाने के लिए

□ मुन्शी पुरुषोत्तम प्रसाद 'नैयर'

(1)

इस तरफ तो ये तड़फते दाने-दाने के लिए।
वे उधर मशगूल हैं खुशियां मनाने के लिये।।

(2)

लाल लाखों देश के है भूख से बेजार आज।
जा रहे हैं अब चिता (कब्र) में घर बसाने के लिये।।

(3)

जिन्दगी में चार दाने भी न गर तुम इनको दो।
लाश पर तो आओ दो आंसू बहाने के लिए।।

(4)

मातृभूमि तेरे बच्चे याद करते हैं तुझ।
हैं तेरे दर पर खड़े तुझको मनाने के लिये।।

(5)

देख करके जालिमों के जुल्म को तैयार है।
'नैयर' नाचीज़ भी अब जेल जाने के लिए।।

□

जगा है राजपूताना

□ राष्ट्रीय पथिक

जगा है फिर शुजायत का चमन हां राजपूताना,
छिड़ा है जग का हर सितम से फिर आज अफसाना।
हरएक गुल ने शजर के शाख ने वह रंग बदला है,
कि पत्थर तक सुनाते आज आजादी का शाहाना।

कहीं तलवार चलती है कहीं गोले बरसते हैं,
मगर होते हैं कुरबां मर्द मैदां बनके परवाना।

नहीं परवाह मसाइब की न है परवाह मरने की,
मचल बैठा है मजनूं कौम का बनकर के दीवाना।

सदा हर एक दर्रे कोह से है आ रही यह ही,
हुआ बस बहुत पापों को कदीमी कह के पुजवाना।

सितम के हामियों! सम्हलो! जमाना ख्वाब का गुजरा,
लबालब भर चुका है अब जहर जुल्मों का पैमाना।

□

बोलबाला छै

हीरालाल शास्त्री

ऊरमा अर होसला का बोलबाला छै।
भादरी मरदानगी का बोलबाला छै ॥१॥

अण बोल्या को खाखलो भी, बिना बिक्यो रै जाय छै।
बोलै जी का बूंबलां का, बोलबाला छै ॥२॥

बिन लखणां का मूसलचन्दा त्या त्या त्या करता फिरै।
अकलवन्द हुश्यार का तो, बोलबाला छै ॥३॥

न रोवै जीं टाबर नै तो, मा भी बोबो दे नहीं।
रूसबाला टाबरां का, बोलबाला छै ॥४॥

गद्धा उपर बोझो लादै, पाछां सूं दे कामड़ी।
टांडबाला सांड का तो, बोलबाला छै ॥५॥

निमला की तो पूछ कोनै, निमलो वण रैणो नहीं।
जबर्दस्त बलवान का ही, बोलबाला छै ॥६॥

जीव बचाकर भागै जीं का, जीवा में धरकार छै।
झूंझबाला सूरमा का, बोल बाला छै ॥७॥

नर नारी दोन्यूं को जोड़ो कोई भी कमजोर क्यों।
सिंघ का अर सिंघणी का, बोलबाला छै ॥८॥

नीत जसी ही बरकत हो छै, नीत चोखी राखणी।
भलापणा ईमान का ही बोलबाला छै ॥९॥

खाता जाय बिगोता जावै, यो नुगरां को काम छै।
छेवट में सुगरांइ का ही, बोल बाला छै ॥१०॥

साँच नै तो आंच कोनै, सांच को परताप छै।
सांच का ईमान का ही, बोलबाला छै ॥११॥

नारी मरदाणी

□ हीरालाल शास्त्री

नारी मरदाणी ! तू आबरू की अम्मर सैनाणी !
नारी मरदाणी !

खाली होगो टापरो सो देख लै ए, मरदाणी !
आंख्यां खोलर, आंख्यां खोलर झाक, तू ईकै कानी झांक,
अब तो घर कै कानी झांक, नारी मरदाणी ।।१।।

आज बीत्यो पीसणो जद पीसै कांई मरदाणी !
घर में कोनै, घर में कोनै नाज, जद भी लैणा की छै दाब,
जद भी बोरां की छै दाब, नारी मरदाणी ।।२।।

छोरा-छोरी बावड़ बावड़ रोटी मांगै, मरदाणी !
भूखा रोवै, मरता रोवै नार थारा कालजा का टूक,
थारा हिवड़ा का ये टूक, नारी मरदाणी ।।३।।

दावा मैं ये थर थर धूजै, थारा टाबर, मरदाणी !
सी सरदी तू, सी सरदी तू रोक, यांका तन पर लत्तो नाख,
अब तो यांका तन नै ढांक, नारी मरदाणी ।।४।।

लीरक लीरा घाघरियो तू पैर्या डोलै, मरदाणी !
लाजां मरगी, लाजां मरगी लाज, थारा नागा तन नै देख,
थारो डील उघाड़ो देख, नारी मरदाणी ।।५।।

मूछ्यांला को कालजो तो भार्यो धड़कै, मरदाणी !
घर कै भीतर, घर कै भीतर नार, यो तो बण जावै छै नार,
यो तो घर कै बारै गार, नारी मरदाणी ।।६।।

ढोलाजी तो हातां चुड़लो पैर लीनो मरदाणी !
थारा घर की, थारा घर की लाज, तू तो हिम्मत करकै राख,
अब तो मरदी करकै राख, नारी मरदाणी ।।७।।

□

आंख्यां खोलो रे

☐ हीरालाल शास्त्री

आंख्यां खोलो रै थे सूतोड़ाओ, अब तो खोलो रै!
आंख्यां खोलो रै ।।

बिना फस को टापरो यो थां को, आंख्यां खोलो रे!
पड़बा नै यो, पड़बा नै यो त्यार, ई कै लागी कोनै गार ।
निकल्या सारा वार-तिंवार, आंख्यां खोलो रै ।।१।।

आये दिन बायेड़ो कतरो सोचो, आंख्यां खोलो रे!
बायेड़ा की, बायेड़ा की लार, थानै मिलै कसीक खुराक,
थां की जवरी या पोसाक, आंख्यां खोलो रै ।।२।।

अपणा घर नैं कतरो बन छै, देखो आंख्या खोलो रै!
देणो कतरो, लेणो कतरो मेल. थे तो दोन्यां को मिलार,
देखो स्याव-तिस्याव फलार, आंख्यां खोलो रै ।।३।।

अपणां घर को हेरो करल्यो, नींकां आंख्यां खोलो रै!
लागत कतरी, लागत कतरी,और थांकै पैदा कतरी होय,
थे तो देखो सारी सोय, आंख्यां खोलो रै ।।४।

बिना पढ्योरा टाबर मूरख, डोलै आंख्यां खोलो रै!
बिना दुवाई, बिना दुवाई मौत, देखो ठाडी थां कै द्वार,
या तो बिना बुलाई त्यार, आंख्यां खोलो रै ।।५।।

थां सूं सब की पेट भराई हो छै, आंख्यां खोलो रै!
सब मूं निमलां, सबमूं निमलां फेर, थे ही दीख्या च्यारूं मेर,
मांची कैसी घोर अंधेर, आंख्यां खोलो रै ।।६।।

यां बातां को कांई कारण, सोचो आंख्यां खोलो रै!
चावो तो थे, चावो तो थे बार, थां को होजावै निस्तार,
थांका होवै बेड़ा पार, आंख्यां खोलो रै ।।७।।

☐

'केश्या' की चेतावणी

☐ हीरालाल शास्त्री

एका रै एका, प्यारा सांचा दिल सूं आव,
प्यारा सांचा दिल सूं आव रै !
सांच्यां ही आया सूं म्हां की जीत छै ।।१।।

धन्धा रै धन्धा, भाया प्यारो म्हांनै लाग,
भाया प्यारो म्हांनै लाग रै !
ठालां की दुनियां में भाया पै नही ।।२।।

घाटा रै घाटा, बैरी पल्लो म्हा को छौड़,
बैरी पल्लो म्हां को छोड़ रै !
ठेरयो तो बिगड़ैली थारी आबरू ।।३।।

पीसा रै पीसा, प्यारा पल्लै म्हां कै ठैर,
प्यारा पल्लै म्हां कै ठैर रै !
चाय की बेल्यां क्यों भारयो ह्वै रह्यो ।।४।।

ताता रै ताता, बैरी सीलो होकर बोल,
बैरी सीलो होकर बोल रै !
थारी रै ठणकाई कै दिन चालसी ।।५।।

सूता रै सूता, प्यारा अब तो जल्दी जाग,
प्यारा अब तो जल्दी जाग रै !
सोयां सूं भाईड़ा म्हारा न सरै ।।६।।

सैरी रै सैरी, प्यारा पांव जिमी पर टेक,
प्यारा पाव जिमी पर टेक रै !
ऊंचो रै झांक्यां सूं ठोकर खायलो ।।७।।

बामण रै बामण, भाया धरम करम नै पाल,
भाया धरम करम नै पाल रै !
जदां तो दुनियां भी लैरां लागसी ।।८।।

ठाकर रै ठाकर, प्यारा नुवो जमानो देख,
प्यारा नुवो जमानो देख रै !
दुनियां कै सागै तू प्यारा चाल रै ।।९।।

वाण्यां र बाण्यां, भाया पूरै कांटै तोल,

भाया पूरै कांटै तोल रै !

नांतर तो होवैली भाया सांतरी ॥१०॥

करसा रै करसा, प्यारा अब तो तू भी चेत,

प्यारा अब तो तू भी चेत रै !

थारै रै चेत्यां सूं बेड़ो पार छै ॥११॥

□

म्हे आज बोला छाँ

□ हीरालाल शास्त्री

दुख:भरी आवाज सूं म्हे, आज बोलां छां ।
जोर की ललकार सूं म्हे, आज बोलां छां ।।१।।

बोल्या बोल्या ठठ सूं म्हे, सारी रचना देख ली ।
देखता म्हे धाप गा जद, आज बोलां छां ।।२।।

पिसतां पिसतां आज ताई, म्हां को चुरकट हो लियो ।
फाटगो यो कालजो जद, आज बोलां छां ।।३।।

मांयली तो माय म्हां क, बारली बारै रही ।
कल्लावैं या आतमा जद, आज बोलां छां ।।४।।

टर्रकटम ऊपरलो बोल्यो, बिचला कै तो खुशी न गम ।
निचलां छां सो "दबे तो हम" म्हे, आज बोलां छां ।।५।।

जूती सूं चिथ जावै जद तो, मांटी भी माथै चढ़ै ।
आखर तो छां आदमी म्हे, आज बोलां छां ।।६।।

चोरी अर सिरजोरी थांकी, सारी दुनियां देखली ।
थां का हिया की फूटगी सो, आज बोलां छां ।।७।।

चोखा छां अर भोत सारा, ताकत पण बिखरी हुई ।
ताकत को अन्दाज कर म्हे, आज बोलां छां ।।८।।

चाली जतरै चाल लीनी, अब नहीं या चाल सी ।
दीखै कोनै चालती जद, आज बोलां छां ।।९।।

भोत होगी भोत होगी, अब थे आंख्यां खोल ल्यो ।
नांतर थे पछतावस्यो म्हे, आज बोलां छां ।।१०।।

उल्टैली अर थांका माथा, ऊपर हो कर जायली ।
सुणल्यो या चेतावणी म्हे, आज बोलां छां ।।११।। □

अन्यायां की घाली परजा चाली

□ पं. ताड़केश्वर शर्मा

(तर्ज : वीछूड़ा की घाली पीहर चाली हो आलीजा)

अन्यायां की घाली परजा, चाली हो राजाजी,
या खड़ी पुकारे राजाजी, तू मान म्हारा राजाजी ।
वाहर का अन्यायां ने तैं, राज सोंप्यो राजाजी,
मार भी लगावै रोवण नांय देवै राजाजी,
हेलो तो मारां छां जल्दी सुणजे हो राजाजी ।। अन्यायां०

भूखा रोवै टावरिया पण माल मांगै राजाजी,
झुंझणू जैपुर में लाठ्यां टूटी म्हारा राजाजी,
ये वहोत मार्‌या राजाजी, हाँ खाल उघेड़ी राजाजी ।। अन्यायां०

परजा ने सतावै लूट मचावै म्हारा राजाजी,
करै जो पुकार वाँने जेलां भेजै राजाजी,
ई भोत अन्यायी राजाजी, दया न आवै राजाजी ।। अन्यायां०

परजामण्डल परजा को यां वन्द करायो राजाजी,
किसान पंचायत हालां नै जेलां में भेज्या राजाजी,
न्याय कोन्या करै राजाजी, इन्साफ कोन्या राजाजी ।। अन्यायां०

वारै का भूखा जी अठे, आया जांचण राजाजी,
म्हेर थे करी थी और नौकर राख्या राजाजी,
मालिक वै वण्या छै, आँख दिखावै म्हारा राजाजी ।। अन्यायां०

वदनाम करै राजाजी, ई दीवाण हटावो राजाजी,
नाम थारो मान मांड, हुकम निकालै राजाजी,
धन माल सारो यो विल्लायत भेज्यो राजाजी ।। अन्यायां०

रुजगार मेट्यो राजाजी, थे आँख्यां खोलो राजाजी,
परजा अब घबड़ाई शोर मचायो प्यारा राजाजी।
जेलां में जावै छै लाठी खावै म्हारा राजाजी।
गोल्यां भी खावांगा, ई तो हेलो मारै राजाजी।
या बात कैसी राजाजी ।। अन्यायां०

आप भी मिटैगा और थांने मिटावै राजाजी,
परजा के इब साथ थे तो जल्दी होल्यो राजाजी,
जभी बचोगा राजाजी, जद प्यारा लागो राजाजी ।। अन्यायां०

'पंडित' यो पंचायत हालो गीत बणायो राजाजी,
रुस्योड़ी परजा नै थे तो आय मनाओ राजाजी,
जद सुख होवैगो राजाजी, थे सुणज्यो म्हारा राजाजी ।। अन्यायां०

अन्यायां की घाली परजा चाली हो राजाजी।
या खड़ी पुकारै राजाजी, तू मान म्हारा राजाजी ।।

□

चाल हे नणदी

□ पं. ताड़केश्वर शर्मा

(तर्ज : जलसो देखरण चाल हे नरणदी)

ॐ गैला पर चाल मेरी नरणदी, सत्याग्रही जहँ जावै ये ।
अन्यायां की पोल खोलकर, साँची वात सुरणावै ये ।।

धन-धन नरणदी उरण की जननी इसा पूत जो जावै ये ।
उरण जुल्म्यां का लाठी जूता, हँस-हँस कर वै खावै ये ।। ॐ गैला०

सत्य अहिसा गांधीजी को, वै हथियार उठावै ये ।
बन्दूकां की गोल्यां आगै, छाती जाय अड़ावै ये ।। ॐ गैला०

निरभय होकर आजादी का, मस्त राग नै गावै ये ।
परहित काररण कष्ट झेल कर जेलां माँही जावै ये ।। ॐ गैला०

परजा मण्डल और पंचायत का वै 'वीर' कुहावै ये ।
खुश हो-होकर जय-जय बोलर, उरणपै फूल बरसावै ये ।। ॐ गैला०

उठ खड़ी हो आपां भी चालां, उरण के तिलक लगावां ये ।
'शर्मा' जीत कर जद आवेगा, आय बधाई गावां ये ।। ॐ गैला०

□

रण की बिगुल

□ पं. ताड़केश्वर शर्मा

उठ चलो आज, सज जंग साज,
जयपुर में आज रण की बिगुल बजी ।
भर कर हुँकार, होलो तय्यार, सत्याग्रहियों की फौज सजी ।।

लाठी बन्दूक, सब जांय टूट, प्यारे वीरों इस भांति डटो ।
कैसी है जेल, समझो वो खेल, है धर्म-युद्ध पीछे न हटो ।।

मन में न रखो, सबको परखो, जो शस्त्र तुम्हारे खोटे ।
उन्हें साफ कहो, डट करके कहो, जो पीट बना चाहें मोटे ।।

परजा मण्डल ही करै मंगल, ऊँची आवाज हमारी है ।
जुल्म न रहे, जुल्मी न रहें, बस ये ही मांग हमारी है ।।

होकर हुश्यार, कह दो पुकार, बन रही शहीदों की टोली ।
पीछे न हटें, तिल-तिल जो कटें, 'शर्मा' ये हमारी है बोली ।।

□

सत्याग्रह में चालोजी

□ पं. ताड़केश्वर शर्मा

(तर्ज : गीत मारवाड़ी रंगत)

पिया, सत्याग्रह में चालोजी, पंचायत बिगुल बजायो ।
पिया, देश की लाज बचाल्योजी, अन्यायां जुल्म बढ़ायो ।।
पिया—जो कुछ पैदा करां देश में, सारो लेवै लूट ।

किरसक भूखा मरौ भलांई घेलो मिलै न छूट ।
पिया, हुयो राज मतवालोजी, यो वहोत घणू गरबायो ।।
पिया०

पिया—राजा म्हारो राजकाज की कुछ ना करै सम्हाल,
दूर देश का चाकर आकर म्हांने करै बेहाल।
पिया, इनको काम निरालोजी, घर में बढ़ दखल जमायो ।।
पिया०

पिया—प्रजामण्डल का लोगां जद अणकी खोली पोल,
लूट-पाट अर पक्षपात को चिट्ठो दीन्यो खोल ।
पिया, परजा में हुयो उजालोजी, उणके घर रोल मचायो ।।
पिया०

पिया—अठी उठी का सभी लुटेरा मिल्या एक दिन आय ,
जैपुर मांही होय इकट्ठा सोचण लग्या उपाय ।
पिया, किस विध पोल दावल्योजी, पाप्यां ने मतो उपायो ।।
पिया०

पिया—जमनालाल सेठ ने अब तो जैपुर मत द्यो आण,
परजा मण्डल वन्द कराद्यो सोवो खूंटी ताण ।
सोची, यों जुगत मिलाल्योजी, फिर करस्यां मन को चायो ।।
पिया०

पिया—अण किसाण पंचायत हालां किरसक दिया जगाय,
जेलां मांई ठूँसो जल्दी नयो कानून वणाय ।
पिया, दियो जीभ पर तालोजी, सभादन्दी तीर बढायो ।।
पिया०

पिया—कानूनां को कवच पहन कर, उठा लिया हथियार,
निर्भय होकर लूटां सदा, हम ऐसो कर्यो विचार
बुद्धि को निकल्यो दीवालो जी, यूं सोच जरा ना ल्यायो ।।
पिया०

पिया—जद किसाण पंचायत हालां, वोल्या छाती ठोक,
जेलां नै थाँकी भर देवां, सुण पड्यो उणा कै सोक ।
'नेतराम' नै जेल में घाल्यो जी, साथ्यां नै भी पकड़ायो ।।
पिया०

पिया—फेर अठी ने परजामण्डल हालां कर्यो विचार,
परजामण्डल वन्द करां ना. आफत सहां हजार।
सव मिल साज सजाल्यो जी, गांधीजी यही बतायो ।।
पिया०

पिया—जमनालाल बजाज सेठ जद कसकर बोल्यो बात,
मैं जैपुर जरुर आऊँगो, रोक्यो रुकूं न स्यात ।
दो वर उल्टो घाल्यो जी. तीजी दरियां पकड़ायो ।।
पिया०

पिया—हीरालाल शास्त्री जी और उण का साथी लोग,
उण नै भी पकड्या जैपुर में, हुयो इसो संजोग ।
सारा ने पकड़ाल्यो जी. पुलिस फौज को पहरो विठायो ।।
पिया०

पिया—झुंझनूं ओर जयपुर मांई लाठ्या दई चलाय,
और कई गांवों में वहुत सा, भाई पकड्या जाय ।।
जतां से खाल उड़ाल्यो जी. यूं भारी जुल्म उठायो ।।
पिया०

पिया—मैणास और झुंझनूं मांई कर्या कमींणा काम,
मां-बहना पर हाथ उठाकर कर्यो बहुत अपमान ।
अन्यायां को मुँह कालो जी, सदा सै होतो आयो ।।
पिया०

पिया—पंचायत और परजामण्डल मिलकर करै पुकार,
जैपुर हालां सब भाई अब हो ज्यावो तैयार ।
सत्याग्रह शस्त्र सम्हालो जी, अब पाप बहुत बढ़ आयो ।।
पिया०

पिया—थांने जाता डर लागै तो बैठो घर में आय,
सत्याग्रह मे म्हे -जावाँगी, साँची द्यां समझाय ।
जाती इज्जत बचाल्यो जी, जो साचां मर्द कहावो ।।
पिया०

पिया—"पडित" यो पंचायत हालो गाणो दियो बणाय,
भाई-बहणां सब मिल गावो, हुयो मोर्चा त्यार ।
परजामण्डल को बिल्लो लगाल्यो जी,
जद नाम अमर कर जाओ ।। पिया०

पिया-सत्याग्रह में चालो जी, पंचायत बिगुल बजायो,
पिया-देश को मान बचाल्यो जी, अन्यायां जुल्म बढ़ायो ।।

☐

अब जेल चलो

□ पं. ताड़केश्वर शर्मा

जैपुर वालों ! वस एक बात अब जेल चलो–हां जेल चलो ।
वोलो सब मिलकर एक साथ, अब जेल चलो–हां जेल चलो ।।

वन्दी जीवन से बहुत बुरा. मुँह पर हो लगी लगाम जहां ।
भाषण की आजादी चाहो तो, जेल चलो–हां जेल चलो ।।

हम सव का एक 'प्रजा मण्डल', अब उस पर रोक लगा दी है ।
वनकर मेम्बर उसके वीरों ! अब जेल चलो–हां जेल चलो ।।

संस्था कानून बना करके 'पैदायशी हक' को छीन लिया ।
ऐसे कानून मिटाने को अब जेल चलो–हां जेल चलो ।।

किसान पंचायत वालों ने अन्याय का किया विरोध सदा ।
कर वन्दी का आरोप लगा–कहा जेल चलो–हां जेल चलो ।।

सच्चे और स्वाभिमानी–उनको जेलों में वन्द किया ।
जो हमें छुड़ाना है उनको तो, जेल चलो–हां जेल चलो ।।

हम घर वाले वरवाद हुये, वाहर वाले हैं लूट रहे ।
आवादी आजादी चाहो तो, जेल चलो–हां जेल चलो ।।

□

हम क्यों जाते हैं जेलों में

□ पं ताड़केश्वर शर्मा

तुम पूछना हम से चाहते हो, हम क्यों जाते हैं जेलों में।
यह जानना हम से चाहते हो, हम क्यों जाते हैं जेलों में।।

जैपुर जो राज्य हमारा है, उसमें ही हमारी नही इज्जत,
बन बैठे दूसरे है मालिक, हम यों जाते है जेलों में ।।

बाहर के मंत्री बन करके, ये हमको आख दिखाते है,
प्रजा-मण्डल को बन्द किया हम यों जाते है जेलों में ।।

प्रजा-मण्डल के प्रधान और सीकर का रहने वाला जो,
जैपुर आने से रोक दिया, हम यों जाते है जेलों में ।।

बाहर का रहने वाला जो, बन बैठा जयपुर में सब कुछ,
जमनालाल को कहता बाहर का, हम यों जाते है जेलों में ।।

किसानों के हित में जो काम करें, पंचायत के जो हैं प्रधान,
नेतरामसिह को पकड़ लिया, हम यों जाते हैं जेलों में ।।

जनता के हैं जो प्यारे और, सेवा का जो काम करें,
उन सब को जेल में बन्द किया, हम यों जाते हैं जेलों में ।।

आजादी और उसके प्यारे, जेलों के भीतर बन्द किये,
हम उनके दर्शन करने को, खुश हो जाते हैं जेलों मे ।।

'शर्मा' कहते क्या पूछ रहे, अब तो चलने का समय हुआ,
सम्मान से जीना चाहो तो, अब चलो बढ़ चलो जेलों में ।।

□

□ पं. वाड्केश्वर शर्मा

नहिं रुकणो रै राज, सभा करणो—नहीं रुकणो !

यो कैसो रै हुकम लगायो, परजा-मण्डल नहीं चलणो—नहीं रुकणो !

परजा-मण्डल है रै परजा को. फिर क्यों चावै बन्द करणो । नहिं०

इसो हुकम कर भूल करी तैं. नहीं काम थो यो करणो । नहिं०

अब या परजा मानै रै नाहीं, कठिन काम ई को डटणो । नहिं०

तू जुल्मों पर उतर पड्यो है. कैसे होवे फेर बचणो । नहिं०

अन्यायी तो रै कोई बच्यौ ना. किस विधि तेरो हो डटणो । नहिं०

सभा होण सैं रै बदे रुकै ना. झूठौ देखो क्यों सपणो । नहिं०

"पंडित" कह निश्चय हारैगो. परजा से न कदै लड़णो । नहिं०

नहिं रुकणो रै राज, सभा करणो—नहिं रुकणो०

□

लाखों धन्यवाद

□ चौ. घासीराम

(तर्ज : काली कमली वाले तुमको लाखों प्रणाम)

जेलों में जाने वालों तुमको लाखों धन्यवाद,
तुमको लाखों धन्यवाद ।

संकट के उठाने वालों तुमको लाखों धन्यवाद,
तुमको लाखों धन्यवाद ।

जैपुर की सत्ता वालों ने, जुल्मों का पटका पहाड़,
उन जुल्मों को सहने वालों, तुमको लाखों धन्यवाद ।। तुमको०

झुंझनूं जैपुर में और मैणास गाँव में,
लाठियों की खाने वालों, तुमको लाखों धन्यवाद ।। तुमको०

सत्ता के मद में अन्धों को चेलेंज दे दिया,
अपनी आन पै डटने वालों, तुमको लाखों धन्यवाद ।। तुमको०

दुखियों के दु:ख देखकर सुख अपना छोड़ दिया,
किसान पंचायत वालों, तुमको लाखों धन्यवाद ।। तुमको०

बोलने, लिखने और सभा करने में हैं स्वतन्त्र,
यह टेर लगाने वालों, तुमको लाखों धन्यवाद ।। तुमको०

प्रजा मण्डल है प्राणों का प्यारा होने न देंगे वन्द,
यों बीचम से कहने वालों, तुमको लाखों धन्यवाद ।। तुमको०

संकट करके वरदास्त हम जेलों को भर देंगे,
यह आवाज उठाने वालों, तुमको लाखों धन्यवाद ।। तुमको०

झुंझनूं में जूते मार कर किया है पिशाचपन,
ऐ आजादी के दिवानों, तुमको लाखों धन्यवाद ।। तुमको०

सत्य और अहिंसा की निश्चय होगी जीत,
प्रजामण्डल के बिल्ले लगाने वालों, तुमको लाखों धन्यवाद ।। तुमको०

कहता है 'घासीराम' उठो जैपुर के भाइयों,
आजादी की राह वताने वाले, तुमको लाखों धन्यवाद ।। तुमको०

□

हमारा दावा

☐ चौं. घासीराम

अपने कर्त्तव्य पै कदम बढ़ायेंगे हम।
दु:खी भाइयों का कष्ट मिटायेगे हम ।।

अपनी मांगों से पीछे कभी न हटेंगे।
हँसते-हँसते ही जेलों को जायेंगे हम ।। अपने०

जाती-पांती के झगड़े से दूर रहेंगे।
कोई अपना नहीं मजहब बनायेंगे हम ।। अपने०

जिनके दिमागों में है जुल्म समाया।
अहिंसा से उन को झुकायेंगे हम ।। अपने०

जुल्मी हुक्मों से लाठी व गोली चलेंगी।
तो आगे जा सीना अड़ायेंगे हम ।। अपने०

सर जाय, घर जाय 'घासीराम' न पर्वाह।
अब के शासन का ढर्रा हटायेंगे हम ।। अपने०

☐

उद्बोधन

□ चौ. घासीराम

वीरों ! वीरपने के काम करो,
तुम हो सिंह, भला किस हेतु डरो ।

ऐ जैपुरी वीरों, आज अपना हो रहा इम्तिहान है,
पास होने से जहां में रह सकेगी शान है,
आओ, खुश होकर यह फार्म भरो ।।

लक्ष्य सबका एक रखना, पक्ष रखना न्याय का,
शान्ति से लड़ते रहो, कर सामना अन्याय का,
जवां मर्दों से अब जेल भरो ।।

देश, जाति, धर्म की यदि शान रखना गर्ज है,
तो कहो निज प्राण तक बलिदान में क्या हर्ज है ?
काहे कीट-पतंग समान मरो ।।

जेल से क्यों डर रहे हो, सोच कर देखो हिये,
कृष्ण की वह जन्म-भूमि, तीर्थ है अपने लिये,
उसमें रहकर आत्मा पवित्र करो ।।

□

आजाद होगा

☐ चौं. घासीराम

जयपुर न रह सकेगा हर्गिज गुलाम-खाना ।
आजाद होगा होगा, आया है वह जमाना ॥

खूं खौलने लगा है, जयपुर निवासियों का ।
कर देंगे जालिमों का, अब वन्द जुल्म ढाना ॥

हम अपने प्रजा-मंडल पै जां निसार होंगे ।
हिन्दू, मसीह, मुस्लिम, गाते हैं यह तराना ॥

अब भेड़ और बकरी, बनकर न हम रहेंगे ।
इस पस्त हिम्मती का, होगा कहीं ठिकाना ॥

परवाह अब किसे है, जेलों दमन की प्यारों ।
इक खेल हो रहा है, फाँसी पै झूल जाना ॥

जयपुर वतन हमारा, जयपुर के हम हैं बच्चे ।
माता के वास्ते है, मँजूर सर कटाना ॥

◇

बाजे छै

☐ 'वीरदास'

गाँधीजी को डंको सारा भारत में बाजे छै रे ।
रजवाड़ा में विजयसिंहजी इन्दर ज्यूं गाजे छै रे ॥

घणाँ दिनां सूं पाछो यो तो सुखमंडल छाजे छै रे ।
दुनियाँ को यो रंग देखतां अन्यायी लाजे छै रे ॥

करसाणां को समय आगयो, दुखड़ो सब भाजे छै रे ।
छातो धड़की और कालजो, पाप्यां को लरजे छै रे ॥

◇

हमारी इच्छा

□ राष्ट्रीय पथिक

राजा-प्रजा रहे सब सुख से यही हमारी इच्छा है,
फिर भी जबरन कलह करो तो प्रभू तुम्हारी इच्छा है ।।

बने आप भी रहें, प्रजा भी स्वयं करे अपना शासन,
सत्ता छोड़, प्रेम-सेवा पर रहे राज्य का अभिनन्दन,
जार, लुई ने जो दिन देखे, वे दिन यहाँ न आजावें,
सुभग चमेली की कुंज़ों मे, विषधर कहीं न ब्या जावें,
भारतीय संस्कृति फिर विकसै, यही हमारी इच्छा है ।।
राजा-प्रजा० ।।

हो विराज में राज्य यहां पर, कीचड़ में ही कमल खिलें,
सेवा में सत्ता का बल हो, क्रान्ति मचै पर कर ना हिलें,
जनता करे राज्य की रक्षा, हलधर असि-कर-धारा हों,
आज शिशिर से दग्ध ग्राम-वन, फिर मधु ऋतु की क्यारी हो,
कनक कमल सम बनें प्रकृति में, यही हमारी इच्छा है ।।
राजा-प्रजा० ।।

जम्बुक जननी वीर-प्रसविनी, बन कर फिर सम्मुख आवें,
चारण गन्धर्वों की टोली, विरुद सभाओं के गावें,
लक्ष्मी वाहन बनें लक्ष्मी-पति, विष्णु विरद स्वीकार करें,
गली-गली नारद की वीणा स्वतंत्रता झंकार करें,
रक्षक रहे न रक्ष्य अन्त में, यही हमारी इच्छा है ।।
प्रजा० ।।

परदेशी पंछी और देशी कृषक

☐ हाड़ौती हृदय

अब उड़ जाओ रे! परदेशी पंछियों, कृषक पुकारे रे।
अब उड़ जावो रे!

देस छोड़ परदेशी आया, ऊँचा रूंख रुकाया रे!
मीठी मीठी बोल्यां बोल्या, म्हांर लुभाया रे!
अब उड़ जाओ रे।

थांका सुख का साधन म्हांने पड़े जुटाणा सारा रे।
जरासी क भी चूक पड़े तो लागां खारा रे! अब उड़०

जब सूं हरी भरी नहि देखी, तब सूं आंख गड़ोई रे!
जाणे म्हाने थाँ के खातर खेती बोई रे! अब उड़०

जोवां, बोवां, करां रुखाली, अन्दर आस लगावां रे!
नाज-नाज तो थे चुग जावो, म्हां भूस खावां रे! अब उड़०

(तर्ज नाच्छ-सिन्धुड़ा)

(तरुण राजस्थान, 11 अप्रेल अजमेर 1)

☐

महाजनों की पुकार

□ भैंरोंलाल कालाबादल

म्हूँ छू एक गरीब महाजन, चोबट म्हारी हाट ।
वहां भी आवै लूण तुलाबा, बणकर पूरो लाट ।।
प्रभुजी ! अब तो दुःख दो मिटाय ।

जुल्मी जुल्म करै छै प्रभुजी, अब तो दुःख दो मिटाय ।
पांच रुपया को सौदो राखां, आंसू पालां पेटा
रोटी सांटै टाबर रोवै, किण विध काढ़ां बैठ ।।
प्रभुजी ! अब तो दुःख दो मिटाय ।।

थाणादार दिया छै डेरा, जणा सग है साठ ।
लाडू सारूं घी गुड दे दै, दारू सारू दाम ।
थारी एवज दूजो पकड़ां, ओ सरकारी काम ।।
प्रभुजी ! अब तो दुःख दो मिटाय ।।

जाग जाग बूंदी पति हाडा, प्रजा पुकारै रै ।
कांजर थारा राज मांय नै, लूट खसोट मचावै रै ।
थाणादार-सिपाई वासू तनखा पावै रै,
हाडा जाग रै ।।

म्हां करसां पर दुखड़ो देख्यो, जद पंचायत कीनी रै ।
मोहन मदन कामदार थारां, उल्टो पाठ पढ़ायो रै ।
तोपां अर बन्दूकां भाला ले चढ़ आयो रै,
हाडा जाग रै ।।

□

राजा जी सूं पुकार

□ भैंरोलाल कालाबादल

ढोला राजा जी सूं कहज्यो, थांका दुखी घणा करसाण
कंचन कमाबा आया, खावां गली जुवार ।
निपट बगड गई आमणी अब काइं करां बचार ।।१।।

आषाढ़ी की तान आपणी बैल बिना बगड़ै ।
हांकणी की तान कोई खात बना बगड़ै ।।२।।

मरतां-पचतां, मरतां-पचतां ओरणी आवै ।
बीज देतां बोहरा जी भी अकड़ाई लावै ।।३।।

नवो पराणो कर बोहरा सूं बीज ले आवां ।
टेम टाल कर ओरणी की करज बधा लावां ।।४।।

लोहीं को मल लोही करयो नाज कमायो ।
खलांणां में पड़ता ही अब सांचो दुख आयो ।।५।।

लेबा देबा हाला धोड़ा-धुंध मचावै ।
चौक बगड़्या आपणा वह अस्या सतावै ।।३।।

खात बाकी, बीज बाकी, कड़तो भी बाकी ।
सभला बाकी रहबा से तो खाल बचै म्हांकी ।।७।।

अरज करां छां राजा जी सूं सुणज्यो हाडा राव ।
करसाणां को दुखड़ो मेटो, अस्यो करो उपाव ।।८।।

□

करसां थांका अनदाता छै

□ भैंरोंलाल कालाबादल

(१)

करसा थांका अनदाता छै, क्यूं लाग्या धमकाबा नै ।
जो थां यांसू बैर करो तो, मलै न टुकड़ो खाबा नै ।।
पहली म्हांनै समझाया, सब लाग्या अकड दिखाबा नै ।
लाग्या छा गोलां के चालै, अब लाग्या पछताबा नै ।।

(२)

रैयत पर बन्दूक्यां छोड़ी, लग्या जेल पहुंचाबा नै ।
ये तो वीर डर्‌या नहि थां सूं, लाया जेल में जाबा नै ।।
अकड्या छा, मूंछ्यां खेंची छी, या नै मार मिटावा नै ।

(३)

अब तो थांके सामै ये तो लाग्या नाड झुकाबा नै ।।
धरती तो छै परमेसर की, मालक करसो कहाबा नै ।
थां का असली काम संभालो, मिल्यां जाय जो खाबा नै ।।

परजा ने प्रीती सूं जीतो, छोड़ो जोर जणाबा नै ।
करसां थांका अनदाता छै, क्यूं लाग्या धमकाबा नै ।।

□

गाढ़ा रीज्यौ रै

भैंरोलाल कालाबादल

गाढ़ा रीज्यौ रै मरदांश्रो, थांको दु:ख सभी मिट जाय ।

सभा मांयनै घुस जावेगी श्रन्यायां की फौज ।
बन्दूका तरवार चालसी, तो मत करज्यो सोच ।।
गाढा रीज्यौ रै····

श्रन्यायी तो लूट पीट कर तोड़ेगा बसवास ।
थांको बाल न बांको होसी श्रन्यायां को नास ।।
गाढा रीज्यौ रै····

श्रन्यायी एको कर करसी, थांकै ऊपर वार ।
खोड़ा, बेड़ी, गाली-धमकी, श्रर लाठ्यां को वार ।।
गाढा रीज्यौ रै····

एको करकै मिल जाश्रौ रै भारत मां का सपूत ।
ईश्वर थां की जीत करेगा, रहो खूब मजबूत ।।
गाढा रीज्यौ रै····

पेट बांध खेती करां रै, सारा कासतकार ।
घर मैं म्हां के ऊंदर खेले, भरां जगत-भण्डार ।।
गाढा रीज्यौ रै

उलटी गंगा बह गई रै, बाड़ खवै खेत ।
उलटी डांटे चौरडा, कोई रक्षक खावै रेत ।।
गाढ़ा रीज्यौ रै····

काला बादल रै

□ भैंरोंलाल कालाबादल

काला बादल रै, अब तो बरसा दै बलती आग ।।
बादल राजा कान बना रै, सुणै न म्हां की बात ।
थारा मन की तू करै, बद चालै बांका हाथ ।।

चमार लोग तो खींचता रै, मरी गाय की खाल ।
खींचै हाकम हत्यारा रै, करसाणां की खाल ।।

हल-कलदां खेती करां रै, करां जो रेलां पैल ।
कांई कसूर के कारणै, राजा जी ठैलां ठैल ।।

गडा पडै, रोबी सडै रै, उलटो लेले डंड ।
सण्ड मुसण्डा पापी हाकम खावै म्हांका पंड ।।

माल खावै चारडा रै, खावै करज खलाण ।
कचेड़्यां में हाकम खावै, भूख कत को प्राण ।

लोही को मल लोही करां रै, खाबां गली जुवार ।
भूखां मरता चौक बिगड़्या, अब कांइ करा विचार ।।

□

नाजम की खाल खींचै रै

□ भैंरोंलाल कालाबादल

नाजम जी खाल खींचे रै, नाज न ह्योयो रै, कड़तो बाकी रह्यायो रै ।।
दन-दन तो बढतो रह्यो रै रिश्वत को बाजार ।
अफसर म्हांने दु:ख देवे छै, हो रह्यो अत्याचार ।। १ ।।

नाज में घाटो घसै रै, कुरण सू करां पुकार ।
नाजम सूं जो अरज करां, तो जूता देय चमार ।। २ ।।

सम्मत ९६ साल में रै, गैरो लाग्यो भारी ।
नाजम जी गेहूं न देखै, गेहूं बतावै भारी ।। ३ ।।

काई सारो राजा जी को, आधो कड़तो माफ ।
इतने नाजम जी लिख लेवे, खुल्लम खुल्ला साफ ।। ४ ।।

नाज मैं घाटो नहीं छै, छै किसान मक्कार ।
गेहूं, चरणा, अलसी, धरिणयां तो बहुत हुई छै ज्वार ।। ५ ।।

बाट-पीट खजारणां लाया, दौ मरण होई जुरिया ।
कड़ता बीज मैं बैल-डांगरण, घेरी म्हांकी गायां ।। ६ ।।

संमत ९७ लाग गयो, आसाढ़ी बिगड़ी जाय ।
खाबा नै तो नाज नहीं छै, कस्यां करूं कमाय ।। ७ ।।

कंचन तो पैदा करां रै, खावां गली जुवार ।
अफसरान का कुत्ता भी तो, म्हां से बहुत तैयार ।। ८ ।।

मोटर बैठ्या मौज करे रै, खावै चांवल-भात ।
अफसर वांका मुख चूमै छै, म्हां सूं करे न बात ।। ९ ।।

कुवो खोद तैयार करां रै, धाणी खेत पिरावां ।
पांच रुपया बीघा का लेवे, ऊ मैं कांई कमांवां ।। १० ।।

बैल-डांगण घर का मारां, घर को घीस लगावां ।
सरकार कै सीधो आवै, म्हां यूं ही प्राण गवांवां ।। ११ ।।

सम्मत ६६ के साल में भी, काल पड़्यो छै भारी ।
सरकार नै टैक्स लगायो, सिर पर बोझो भारी ।। १२ ।।

दिन भर तो म्हां कांटा झूडां, मोली लावां एक ।
तीन पीसा टैक्स लगैं छै, म्हां कै रहवे एक ।। १३ ।।

प्रजा दुखारी रै

□ भैंरोलाल कालाबादल

जाग जाग कोटा पति हाडा, प्रजा दुखारी रै—हाडा जाग रै ।।

थां का नोकर मनमानी कर म्हांने घणां सतावै रै ।
थे मोटर में खेलै सिकारां, मौज उड़ावो रै—हाडा जाग रै ।।

दु:ख की वह अरज्यां देवां तो, म्हांनै लुच्चा बतावै रै ।
महनत कर खातां भी म्हां पर, उडा जणावै रै—हाडा जाग रै ।।

म्हांकी लपटा की हांडी छै, जीनै हड़क्या खावै रे ।
म्हांका बालक अन्न बना, भूखा मर जावै रै—हाडा जाग रै ।।

बनी-बनाई सीधी रसोई पर पापी डर जावै रै ।
थोड़ा सा बोलां तो आंख्या, काढ बुरावै रै—हाडा जाग रै ।।

म्हांकी बहू-बेटियां ताकतां पापी नहीं सरमावै रै ।
फूट पटक अन्यायी म्हांने, खूब लड़ावै रै—हाडा जाग रै ।।

पटवारी, कानूगो, नाजम लूट लूट कर खावै रै ।
यां नै रिश्वत नहिं देवां तो, खाल उड़ावै रै—हाडा जाग रै ।।

थे तो सूता आंख बन्द कर, म्हांकी सुध विसराई रै ।
राज बिगाड़ै प्रजा बिगाड़ै, यह अन्यायी रै—हाडा जाग रै ।।

□

कलम कसाई

भैंरोलाल कालाबादल

अब मत लूटो रै, कलम-कसाई खून मल लोही होग्या रै ।। अब····

करां कहां फरियाद, ध्यान सूं सुणै न कोई रै,
फरां भटकता ठाम-ठाम सबली पत खोई रै ।। अब·······

गांव बलाई, छुट्‌यो मांगै, और सिपाही रै ।
पांच रुपैया सुनती मांगै, करै लड़ाई रै ।। अब·······

झूंठो-सांचो बण मामलो, पुलिस सतावै रै ।
छोरा छोरी रो-रो हार्‌या, तरस न खावै रै ।। अब·······

जणां-जणां की तावेदारी करतां हार्‌या रै ।
ठग लेग्या दन दहड़ै, ये ठग फेर धाप्या रै ।। अब·······

खा-खा सावू और झो झसू घाती हांका रै ।
आंटी लगा पेट क धन्धो, करा न थाका रै ।। अब·······

सी-सी करतां स्यालो काटां, फरां उघाड़ा रै ।
ऊनाला मैं फरां अमाणा, कोरा हांडा रै ।। अब·······

लू मैं करां खरार झकर सूं झलसै काया रै ।
आसोजां को तपै तावड़ो, करां कमायां रै ।। अब·······

म्हां का दु:ख को पार न आवै, कहतां आवै लाज ।
मन मसोस कोरी छाती सूं, मरां जगत कै काज ।। अब·······

जागीरी जुलम

□ भैंरोंलाल कालाबादल

धाम-धन धरती लूटै रै जागीरदार ।।

बहण-बेटी रूप की नै ताकै येह सरदार ।
आधो जौबन गोला मांगै, आधो जागीरदार ।। १ ।।

आंख दिखावै, डांटै, डपटै, ललकारै, फटकारै ।
वां तो रोबा भी न दै, ठाकर ठोकर मारै ।। २ ।।

गाल्यां दे दे जूता मारै, और उड़ा दै बाल ।
इज्जत लूटै, चमड़ी फौडे, हाय उधेड़े खाल ।। ३ ।।

मां-बहणां के सामै आवै, रै मूछ्यां दै ताव ।
घर ले लै, वे दखल करा दै, और छुड़ा दै गांव ।। ४ ।।

लोभ कै तो थोब नहीं रै, बढ़्यो पाप को भार ।
बीघा का दो बीघा मांडै, करै एक का च्यार ।। ५ ।।

भभकी दे दे पट्टा गाड़ै, धमकी दे दे लूटै ।
बांध-बूज कर कड़तो मांगै ढांडा ज्यूं फिर कूटै ।। ६ ।।

जागीरी में जीबा सूं तो, भलो कुवा मै पड़बो ।
जागीरी का गांव सूं तो, भलो नरक मैं सड़बो ।। ७ ।।

टींकायत जागीरी बैठ्यो, बैठ्यो मोज्यां माणै ।
छोटा का दन खोटा आवै, नौकरियां में ताणै ।। ८ ।।

टींकायत तो शान बघारै, छुट भय्या लाचार ।
सगा भाई सूं भेद वढ़ावै, जागीरी धरमार ।। ६ ।।

□

म्हांनै चूस्यां ही जावोगा

□ पुरुषोत्तमलाल सोनी

ये जी ! म्हानै चूस्यां ही जावेगा काई जी ।
थे अब तो सुणल्यो म्हां की जी ।।
म्हांनै चूस्यां ही..........

ये जी ! पगां सर पेटयां घालां,
और फाबा के बल चालां,
एड्यां की टूटी ख़ालां जी

म्हानै अबाणा चलावेगा काई जी ।।
म्हांनै चूस्यां ही..........

फाटा की लीरां लीरां,
कुडता की चीरां चीरां,

धोवती की भीरां भीरां जी
म्हांनै नागडा गणावैगा काई जी ।।
म्हांनै चूस्यां ही..........

कड़ता का पड़ता नहीं जी,
हड़क्या खुड खुड खावै ।

हाथ जोड़ कर सामां आवां
तो भी इज्जत जावै जी ।।
म्हांनै चूस्यां ही..........

नाज बिक गया, बैल बिक गया,
और बिक्या घर बार ।

घट्ट्यां विक गईं, छोर्‌यां विक गई
अव कांई वेचां नार जी····
म्हांनै चूस्यां ही···········

म्हांका भूखा छोरा-छोरी,
ज्यांनै चुपड़ी मिलै न कोरी।

थां की तो चालै जोरी जी,
और मोटरां वसावेवा काइ जी····
म्हांनै चूस्यां ही···········

गड़ा पड़े रोली लगै जी, उलटा ले लै डंड।
सण्ड मुसण्डा पापी हाकम, खावै म्हांका पंड जी····
म्हांने चूस्यां ही···········

च्यार कुत्ता चोरडा जी, सुणल्यो हाडा राव।
पटवारी, कानूगो, नाजम चौथो थाणादार जी····
म्हांनै चूस्यां ही जावेगा काईं जी!

□

म्हारा ढोला जी

□ प्रेमचन्द भील

तू हाल सभा में चाल, म्हारा ढोला जी।
तू खाग्यो घर को माल, म्हारा ढोला जी।।

काया बर्णो तो स्यालूल्यों थांकी मांगां म्हानें वो।
ल्यो हाथां में चुडलो घाल, म्हारा ढोला जी.......

माथे बांधो राखडी, नाकी महरां नथड़ी,
नेणां में सुमो सार, म्हारा ढोला जी.......

हाथां महंदी राचणी, मगल्यां नेवर बाजणी,
थे चालो जनानी चाल, म्हारा ढोला जी.......

थां को नांव तो नाथी जी, घड़के थांकी छाती जी
थांने ग्रंधू कोठा में घाल, म्हारा ढोला जी.......

हाथां पहरां हथकडियां, पगां पहरा बेड़ियां,
दुसमन नैं दिखाया चाल, म्हारा ढोला जी.......

आवै अन्यायी फटकारां, कएं न वांकी बेगारां,
चाहे म्हांको करो हलाल, म्हारा ढोला जी.......

गाढी बांधा धोवती, माथे पागां सोलती,
जासी दुसमन-दल हार, म्हारा ढोला जी.......

तोप बन्दूकां म्हें झेलां, नीचे माथा न मेलां,
ले वन्देमातरम् ढाल, म्हारा ढोला जी.......

तू हाल सभा में चाल..........

□

मिलै न टुकड़ा खाबा नै

प्रभुदयाल मीतल

करसा थांका अनदाता छै,
क्यूं लाग्या धमकाबा नै।

जो था म्हांर बैर करोगा,
मिलै न टुकड़ा खाबा नै ।।

पहली म्हां समझाया फिर भी,
माथा उठे कुवावानै ।

लाग्या छा गोला के चालै,
अब लाग्या पछतावा नै ।।

फिर भी वे डरप्या नहिं यांसूं,
लग्या जेल मैं जाबा नै ।।

अकड़्या छा, मूछ्यां खीचीं छी,
व म्हांनैं मार मिटाबा नै ।।

अब तो सत्याग्रह के सामे,
लाग्या नाड़ झुकाबा नै ।।

धरती तो परमेसुर की,
मालिक करसो कहवाबा नै ।।

अब भी सोच समझ ल्यो मन मैं,
छोड़ो अकड़ दिखाबा नै ।।

थांको असली काम संभालो,
मिल्यां जाय जो खाबा नै ।।

प्रभु दयाल प्रीति सूं जीतो,
छोड़ो जोर जनाबा नै ।।

हाडा जाग रे

□ गौरीलाल गुप्त

जाग जाग बूंदीपत थारी प्रजा दुखारी रै।
हाडा जाग रै!

आठ सेर का गेहूं बकै छै, दस सेर की ज्वारी।
कस्यां करै गुजरान समझ तूं, प्रजा बिचारी रै।
हाडा जाग रै!

हाकम मल परजा नै खावै, थनै न जानी रै।
बेगारां ले काम करानै यूं, मनमानी रै।
हाडा जाग रै!

□

आजादी लेणी छै

□ गौरीलाल गुप्त

आजादी लेणी छै, ई की बातां सुणल्यो रै।।

चाली छै या हवा देश में, मन दे सुणल्यो रै।
अंगरेजां को राज मटाकर अपूर्ण करल्यो रै।
पथिक जगावै, गीत सुणावै, वर्मा आयो रै।
गांव-गांव सूं लोग लुगाई, मिलबा आया रै।
सभा करै छै, बात कहै छै, कस्यां बतावां रै।

आजादी लेणी छै, ए सब ही मिलकर गावां रै।

□

जागौ, पथिक जगावै थानै

गौरीलाल गुप्त

जागो जागो रै, पथिक जगावै थानै, भाया जागो रै।
अंगरेजां को राज हटाओ, जागो जागो रै।।

राजा भी गुलाम छै यहां का समझे समझ को रै।
गांव-गांव में सभा भराओ जागो जागो रै।।

राजा भी वेगार वरावै, दुखड़ो देवे रै।
वालक बूढ़ा अर जवान मिल जागो जागो रै।।

आजादी लेणी छै इ को प्रण सब कर ल्यौ रै।
मरदां जागो रै............

अपणूं भारत बण्यूं पराधीन, दुख यो पावै छै।
तोड़ो पिंजड़ो, आजादी ल्यो, बात वतावै छै।।
नेता लोग जगावै सब नै जल्दी जागो रै।
लाग-वाग-वेगार मिटाओ, मिलकर आवो रै।।
सभा और छै गांव-गांव में, ज्या मैं चालो रै।
आजादी की असी लड़ाई, सब मिल जागो रै।
जगत गुरु भारत की इज्जत नीचै गरगी रै।।
सभी उठाओ, नाम कमाओ, आंख्यां चमकी रै।
मरदा जागो रै............

नानक को वलिदान वतावै, मरबो सांचो रै।
गांव-गांव सूं आवो भाई, वालक, बूढ़ा, लोग, लुगाई।।
हरख मनावो रै, मरदां जागो रै............

यो वलिदान वड़ो सुख देणू, दुखड़ो त्यागो रै।
आजादी को दीप संजोवो, मरदां जागो रै।

राजां नै या फौज भेज दी, पुलस्या आया रै।
नानक नाम अमर करणें छै, सबके जाग्यां रै ।।
मरदां जागो रै..........

तोपां का मुख मोड़ो पाछा, संगीनां की मारां रै।
नानक नाम अमर करो सब, भाई जागो रै ।।
डरपो मत कायरपण छोड़ो, भाई जागो रै।
आजादी हित नानक मर गया, ई नै देखो रै ।।
मरदा जागो रै..........

नेतां को संदेसो भाई, घर-घर न भेजो रै।
खादी पहरो चरखो कातो, आलस छोड़ो रै ।।
मरदा जागो रै..........

सत्याग्रह सूं लड़बो सीखो, गांधी कहवै रै।
घर-घर में सब सूत कात कर, दुखड़ो मेटो रै ।।
देसी चीजां खावो पीवो, कपड़ो देसी रै।
अंगरेजां नै नाश कर्या छै, धंधा देसी रै ।।
यां ने सब मिल पार कराओ, समदा।
मरदां जागो रै... ....

□

नेताजी सूं वीनती

□ गौरीलाल गुप्त

धीरां धीरां बातां प्यारी जी ।
म्हानै आछया लागै ये सब टोपी धारी जी,
खादी का छै कपड़ा सारा, भोजन सादो जी ।
आजादी लेबा की बातां म्हाने भावै जी—धीरां बोलो जी,

थांकै साथ लाडली थांकी पतनी प्यारी जी ।
बेटा-बेटी खादी धारी, जेलां प्यारी जी ।।
राजा की ये फोजां आई, मार मचाई जी ।
पकड़-पकड़ ले जावै थानैं, अस्या कसाई जी—धीरां बोलो जी,

यां का मन मैं दया नहीं छै, दुसमन म्हांका जी ।
थे म्हानै भी जैल भेज दो, मानां थांकी जी ।।
लाठ्यां मारै मोलयां मारै, कस्या कसाई जी ।
लोग-लुगाई भाग रह्या छै, आफत आई जी—धीरां बोलो जी,

हुकम करो नेता जी म्हां पर, म्हें भी निबटां जी ।
थे जावो छो जेल बताओ, म्हें कांई करस्यां जी ।।
म्हांनै ये क्यूं नहीं ले जावै, साथै थांकै जी ।
असी अहिंसा काई, मारो ठोकर म्हांकै जी—धीरां बोलो जी,

मार रह्या छै, मां दुष्टां नै मजो चखावां जी ।
हुकम करो नेता जी म्हां पर, म्हें भी निबटा जी ।।
आ जनम भूमि सब नै प्यारी छै, जेलां चाला जी ।
आजादी लेबा की खातिर, मरबा चालांजी—धीरां बोलो जी

□

समाज सेवक का गीत

❑ मोतीलाल पहाड़िया

जागो जागो होय सचेत, भाइयों ! जागो जागो होय सचेत रे ।
होली र जगावा थानैं आ गई ।।

छाई-छाई घटा गम्भीर भाइयों ! छाई-छाई घटा गम्भीर रे ।
कड़की रे भारत पै आभा बीजली ।।

देखो देखो घणों अन्धेर भाइयों ! देखो देखो घणों अन्धेर रे ।
लूम्यों रे भारत मैं कालो बादलो ।।

पहरो-पहरो देशी वस्त्र भाइयों ! पहरो-पहरो देशी वस्त्र रे ।
संपत्ति रे भारत की बाहर जा रही ।।

खोलो-खोलो नेत्र कपाट भाइयों ! खोलो-खोलो नेत्र कपाट रे ।
मालक रे घर का भी दूजा हो रह्या ।।

सीखो सीखो सेवा धर्म भाइयों ! सीखो सीखो सेवा धर्म रे ।
करज्यो रे परजा की सेवा प्रेम सूं ।।

बोलो-बोलो जय-जयकार भाइयों ! बोलो बोलो जय जयकार रे ।
भारत माता की मन बच काय सूं ।।

❑

भारत प्यारा रै

□ राव मुकन्द सिंह

भारत प्यारा रै, आजादी का रंग में रंग जा, भारत प्यारा रै।
भारत प्यारा रै, तोड़ गुलामी पींजडा नै, भारत प्यारा रै।

अंगरेजां की कांई हकूमत, व्यापारी ये लोग।
कम्पनी का नाम सूं ये, भोग रह्या छै भोग ।। भारत०

राजा भी सब बण्या भाईला, पड्या पींजड़ा भोग।

देश बीच बेकारी फैली, बढ्यो गुलामी रोग ।। भारत०

तिलक, गोखले, गांधीजी ये, समझावै कर जोड़।

यां नै भी ये जेल भेजकर, करै घणा कमजोर ।। भारत०

थारी बिठड़ी दशा बावला, जगत गुरु को नाम।
सिंह सरीखी वीरता को, हुयो कस्यो बदनाम ।।

भारत प्यारा रै! आजादी का रंग में रंग जा, भारत प्यारा रै!!

□

नेताजी को भाषण

□ राव मुकुन्द सिंह

नेता जी को भापरण सुराबा चालो बालम जी ।।

फौज पुलिस नै सारा मिलकर मार भगावो जी ।
यां की लाठ्यां तोपां देखो, छीनो बालम जी ।। नेता जी को....

ये पापी तो दखो सबनै, जेल भिजावै जी ।
घर का धन्धा सारा देखो, नाश करावै जी ।। नेता जी को....

जोर जुलम नै सहबो कितरो कितरो महँगो जी ।
नेताजी की असी अहिंसा, हद ही होगी जी ।। नेता जी को....

नेता जी ने जेल भेजकर आपर बाहर क्यूं ?
जेल भरो चालो सब मिलकर, ये ही नाहर क्यूं ?

ये मुट्ठी भर आपां लाखां, फेर डर काई जी ।
करो तैयारी नेता जी नै, बात बताई जी ।।

क्यूं न पकड़ै आपां नै ये, कारण काई जी ।
पीटो यांनै, छीनो लाठ्यां, मनै बताई जी ।।

असी अहिंसा काई काम की, बणां लुगाई जी ।
म्हांनै लड़बा द्यो यां सूं, ये घणा कसाई जी ।।

फौज पुलिस का कस्या सिपाही, दया न बावै जी ।
गोल्यां मारै, लाठी मारै, मन न भावै जी ।।

□

कालो मूंडो हो जासी

☐ राव मुकुन्द सिंह

कामदार बूंदी का थारो क्रम ही मिट जासी ।

म्हानै तू यूं कांई सतावै
भूखां मार जेल भिजवावै

तू भी मर जासी ।

फौज भिजाई बूंदी से या
पुलिस भिजवाई बूंदी है या

तू भी मिट जासी ।

राजा जी नै हुकम दियो तो
तू तो म्हांको ध्यान राखतो

अब कांई हो जासी ।

☐

भाया म्हारा रै !

□ राव मुकुन्द सिंह

सत्याग्रह करबा नै चालां, भाया म्हारा रै।
गांधी जी की बातां प्यारी, सब नै लागै रै ।।

मत लगान द्यो, नमक बणाओ, जागो जागो रै ।
घर घर घूमो आजादी को, गीत सुणावो रै ।। भाया म्हारा रै ।।

काला ये कानून बणाया, यांनै तोड़ो रै ।
जेल भरो सब जेलां जाकर, घर का सारा रै ।। भाया म्हारा रै ।।

राजा लोग वण्या पिछलागू अंगरेजां नै ध्यावै रै ।।
सुणै नहीं अरजी आपां की, अकड़ बतावै रै ।। भाया म्हारा रै ।।

आजादी लेणी छै भाया, सुण लै म्हारी रै ।।
भाया म्हारा रै ! भाया म्हारा रै !!

□

काला बादल रै

□ मांगीलाल निरंजन

काला बादल रै ! अब तो बरसा दे बलती आग ।।
बादल राजा कान बिना रै ! सुणे न वहां की बात ।
थारा मन की थू करे न, जद चालै व्हां का हाथ ।। काला० ।। १ ।।

हज बलदां खेती करां रै ! करे तू रेलां-पेल ।
कांई कसूर कै कारणै राजा की ठेला-ठेल ।। काला० ।। २ ।।

गड़ा पड़ै रोली सडै रै ! उल्टो ले लै डंड ।
सण्ड मुसण्डा पापी हाकम, खावै म्हांका पंड ।। काला० ।। ३ ।।

चमार लोग खींचता रै ! मरी गाय की खाल ।
खींचै हाकम हत्यारा सब, करसाणां की खाल ।। काला० ।। ४ ।।

माल खावै चोरड़ा रै ! खावै करज खलांण ।
कचेड्यां मैं रिश्वत खावै, भूख कंत का प्राण ।। काला० ।। ५ ।।

पेट बांध खेती करां रै ! सारा काश्तकार ।।
घर में ऊंदा खेले, भरै जगत भंडार ।। काला० ।। ६ ।।

कड़ता का पड़ता नहीं रै, हडक्या खुड खुड खावै ।
हाथ जोड़कर गाल्यां खावां, तो भी इज्जत जावै ।। काला० ।। ७ ।।

खाद बाकी, बीज बाकी, लेवी भी छै बाकी ।
कड़वो बाकी रहवा सूं तो, खाल खिचेगी म्हाकी ।। काला० ।। ८ ।।

फाटी टूटी सैपट्या रै, लीरक लीरा पाग ।
फटी धोवती फटी अंगरखी, फूट्या म्हांका भाग ।। काला० ।। ९ ।।

फाट्यो टूटो लूगड़ो रे, लहंगो बिना सज्याव ।
थेगला मैं थेगला द्यां, तो भी दीखै आब ।। काला० ।। १० ।।

छोरा छोरी दूध बना रै, चूड बना घर नार ।
नाज नहीं छै लूण नहीं छै, नही तेल की धार ।। काला० ।। ११ ।।

बैल बिक गया, नाज बिक गया और बिका घरबार ।
छोरा बक ग्या, छोर्यां बक गई, अब कांई बेचां नार ।। काला० ।। १२ ।।

धांसी चालै, डगमग हालै, बेगी आगी हार ।
भरी जवानी बीच मैं ही, सूख गयो भरतार ।। काला० ।। १३ ।।

उलटी गंगा बह रही रै, बाड़ खावै खेत ।
ललटा डांटै चोरड़ा कोई, रक्षक खावै रैत ।। काला० ।। १४ ।।

कानूगो जी कान खांचै, पटवारी फटकारै ।
ताणै थाणादार जी सब, गण्डक ज्यूं दुत्कारै ।। काला ।। १५ ।।

पांच रप्या पटवारी मांगै, सौ सौ तहसीलदार ।
आधो जोबन मुंशी मांगै, आधो थानादार ।। काला० ।। १६ ।।

□

ग्रामराज को एको

मांगीलाल निरंजन

एको करल्यां रै करसांग्रो, सांची गांधी जी की बात ।। टेर ।।

ग्ररै ! तास का खेल सूं रै ! सीखो ज्ञान सुजान ।
गोल्यां, बीबी, राजा सूं भी एको छै बलवान ।। १ ।।

नहला, दहला, गोल्यां, बीबी, राजा भी घबराय ।
एको एक कर के सब नै, नाकां चरणा चबाय ।। २ ।।

करसाणां की फूट सूं रै, सभी उड़ावै माल ।
घूंस मुनाफा चोर-बजारी, थांकी करै हलाल ।। ३ ।।

गल्यो सड़्यो ले नाज उधारो, भर्‌या झड़ा में खाय ।
नयो नाज जब त्यार करां तो, सूंघा भाव बिकाय ।। ४ ।।

मण्डी तो चण्डी बणी रै, मन के भाव बिकाय ।
करसाणां का मांस नै सब, लंच लंच कर खाय ।। ५ ।।

राज ग्रौर व्योपारी दोनूं, मोल-तोल में लूटै ।
खरी कमाई करसाणां की, बात बात में चूंटै ।। ६ ।।

करसाणां का नाज सू रे, होली खेले हमाल ।
ग्राड़त्या, वोपारी, मंगता, राजा करै हलाल ।। ७ ।।

खेत खावै जीव जनावर, खावै करज खलाण ।
कच्चेड़ी मे रिश्वत खावै, करसाणां को प्राण ।। ८ ।।

नौकर चाकर बैठ्या टाल्या, रिश्वत रोज पकाय ।
ग्राजादी का बैरी बणग्या, रौवे भारत माय ।। ९ ।।

बात बात में दाम मांगै, मंहगो करदयो न्याव ।
डांट बताकर रिश्वत चाटै, उलटो बालै न्याव ।। १० ।।

कानूगा जी कान खांचै, पटवारी फटकारै ।
ताणै थाणैदारजी, गण्डक ज्यूं दुत्कारै ।। ११ ।।

नजराणा, कीणा, चिठ्ठावण, डाली, भेंट, रसाल ।
फीस, कमीसन, इनाम, पैरया, घूंस चलै बेताल ।। १२ ।।

गांवड़ा को खून चूसकर, शहर बण्या धनवान, गांववान ।
जगमग जगमग शहर चमकै, गांव बण्यां शमसान ।। १३ ।।

थांकी खरी कमाई सूं रै, सहर सफाई होय ।
गांवड़ा तो सडै नरक में, सहर-सफाई होय ।। १४ ।।

त्याग तपस्या गांव करै रै ! भोगे सहर महान् ।
गांवडा की झूंपड्या मैं, तड़पै भारत-प्राण ।। १५ ।।

एकठ करल्या रै मर्दाओं, करसा और मजूर ।
किसान-मजूर प्रजा राज के, लिये लड़ां भरपूर ।। १६ ।।

□

जागीरी जुलम

□ मांगीलाल निरंजन

धरम, धन, धरती लूटै रै जागीरदार जी ।। टेर ।।
वहन वेटी रूप की नै, तांकै ये सरदार ।
आधो जोवन गोला मांगै, सारो जागीरदार ।। १ ।।

आंख दिखावै, डांटै-डपटै ललकरै फटकौर ।
रोवां तो रोवा भी न दे, ठाकर ठोकर मारै ।। २ ।।

गाल्या खाडै जूता मारै, मार उड़ा दे वाल ।
इज्जत लूटै, चमड़ी फोड़ै, हाय, उधेड़े खाल ।। ३ ।।

मा-वहण्या कै सामै आवै, दे मूछ्यां पै ताव ।
घर ले लै, वे दखल करा दे, और छुड़ा दै गांव ।। ४ ।।

लोभ के थोभ नहीं रै, वढ्यो पाप को भार ।
वीघा का दो वीघा मांडै, करै एक का चार ।। ५ ।।

भभकी देवै पट्टा मांडै, धमकी दे दे लूटै ।
वांध वूज कर कड़तो मांगै, ढ़ाडां ज्यूं फिर कूटै ।। ६ ।।

जागीरी में जीवा सूं तो, भलो कुवा में पड़वो ।
जागीरी का गांव सूं तो, भलो नरक में सड़वो ।। ७ ।।

टीकायत जागीरी भोगे, वैठ्यो मोज्यां माणै ।
छोटा का दिन खोटा आवै, नोकरियां मैं ताणै ।। ८ ।।

टीकायत तो शान वधारे, छूट भैया लाचार ।
सगा भाई सूं भेद वढावै, जागीरी धिक्कार ।। ९ ।।

□

खातो बाण्यां सूं मत घालो

मांगीलाल निरंजन

थांनै समझाऊं सरदार, खातो बाण्यां सूं मत घालो ।
ऊबी अरज करूं भरतार, खातो वोरां कै मत घालो ।

घणा खातां म्हैं थोड़ो खास्यां, दस बीघा थोड़ो ही वास्यां,
हंमी-ह्रांजी, घर मैं रहसी धीणो चार ।।

फाटा कपड़ा मां सीं लेस्यां, सिभाला तय म्हैं जी लेस्यां,
ह्रांजी, ह्रांजी, लारौ नवा लूराड़ा ल्यार ।।

बीज बाजरो सडिया देसी, ऊपर दूणा पैसा लेसी,
ह्रांजी ह्रांजी, करडी पड़ै व्याज की मार ।।

नमता भालै, मीठा भाखै, और पेट मैं छुरियां राखै ।
ह्रांजी-ह्रांजी, माको, लारां तक को प्यार ।।

मीठा वण, सो घर खा जासी, विपत पड्यां टालो दे जासी,
ह्रांजी-ह्रांजी, सवालो सुल जासी परिवार ।।

सापां नै मत दूध ज पावो, दुख दलिद्र क्यूं नूंत बुलाओ ।
ह्रांजी-ह्रांजी, वातां सांच कहवै घरनार ।।

अकेलो ही चाल

□ श्री तनसुखलाल मित्तल

अकेलो ही चाल भाईला, अकेलो ही चाल रै,
थारी पुकार सुणकर कोई न आवै तो, अकेलो ही चाल रै,
अकेलो ही चाल भाईला, अकेलो ही चाल रै ।।

सभी मूंडो फेर्या रहवै, सभी भय खावै, पर सभी डर जावै
तो भी प्राण खोल कर, तू ही मूंडो खोल कर,
थारा मन की बात भाईला अकेलो ही बोल रै ।। अकेलो ही····

कठण मार्ग में चलती बेर्यां, सभी पाछा आवै,
अर मुडकर भी नहिं देखे तो रस्ता का कांटा ने,
लोही-लथपथ पांवां नीचे
अकेलो ही दाब रै ।। अकेलो ही चाल····

कोई उजालो नहिं दिखलावै, बादल अर झड़ी रात में,
घर का दरवाजा बन्द कर लेवे
बज्र ज्वाला मैं तो छाती को मंजर जलाऽर
तू अकेलो ही जलै रै ।
अकेलो ही चाल भाईला, अकेलो ही चाल रै ।।

□

चेतावनी

□ मांगीलाल निरंजन

चेतो रे अब तो मरदांओ ! मरदांओ रै !!
आई बरबादी आंख्यां खोल द्यो ।।

दिन घोलां धाड़ा पड़ै रै, हां रै मरदां, चालै चोर बाजार ।
भरै तजोरी पाप की, कोई, लूटे साहूकार ।। चेतो रे····

बदहजमी सूं सेठ मरे रै, हां रै, भाई, भूखा मरै मजूर ।
करसो मरज्या नंगो भूखो, हरिजन चकनाचूर ।।

गांवड़ा का खून सूं रै, हां रै मरदां ! सहर रंग्या भरपूर ।
गढ-हेल्यां की नींव तलै कोई, सर फोड़ै मजदूर ।।

बाण्यां रौवे ब्याज नै रै, हां रै, भाई ! दात्री रोवै शीष ।
बामण रौवे दान-दक्षणा, वकील रोवै फीस ।।

सेठ जी की दूंद सूं रै, हां रै मरदां ! हाथी भी सरमावै ।
सेठाणी के आगे सांची, भगतण भी सरमावै ।।

वकीलां की फूंक सूं रै, हां रै मरदां ! घर-घर लागी आग ।
बलै गांवड़ा बलै सहर भी, बलै देस का भाग ।।

छत्री डूब्या शराब मैं रै, हां रै मरदां ! बाण्या बणग्या डाकी ।
साहूकार तो चोर बणग्या, धरम बचै क्यूं बाकी ।।

□

जागीरी जुलम

□ मांगीलाल निरंजन

या जागीरी में भोली भाली परजा कुचली जावै ।।

जागीर्यां का ठाकुर मिलकर, एकठ करता जावै ।
राज नौकरां सूं मिलकर म्हां मैं जुलम करता जावै ।।

लोग बाग बेगार बढावै, दाणूं खूब दलावै ।
करै कलेवो कंवर जी तो, म्हां मैं लाग लगावै ।।

नाई, धोबी, कुम्हार, खाती, चमार भी दुख पावै ।
हुकम अदा जो नहीं हुआ तो नत्मां से दिखावै ।।

कलाल सूं दारू मंगवाकर, ठाकर मौज उठावै ।
चार सेर रुपया का भाव सूं, मांस मंगाकर खावै ।।

दूध दही घी करसाणां सूं, मुफ्त में मंगवावै ।
गाजर, कांदा, बैंगण, पालक, चूंट चांट ले जावै ।।

ठीकाणां का नौकर चाकर, दौड़ दौड़ कर आवै ।
माँ बहणा की लाज बगाड़ै, बोलां तो डरपावै ।।

अडियल ठाकर ठीकायां को, खड़ी फसल छुड़लावै ।
बाई जी की घूघरी की, कथा कही न जावै ।।

कुम्हार का गधा के ऊपर, मट्टी रकब मंगावै ।
कारीगर नै डांट बताकर, मैंड्यां महल चुणावै ।।

जुलम मचाओ क्यूं थे ठाकुर, धरम आपको जावै ।
काला बादल यां लावणां सूं, ठाकर भी दुख पावै ।।

□

प्रजामण्डल का गीत

□ भैंरव लाल नंदवाना

भंवर ! मण्डल मैं पल जाज्योजी, भंवर मण्डल मैं जाज्यो ।
सारा दुखड़ा मट्या बना, पाछा थां मत आज्यो ।।

प्रजामण्डल आपणो (स जी), करै न्याव की बात ।
सूरज ऊग्यो, रात बीत गी, आये रह्‌यो परभात ।।

भूखा मंखा देस हो गयो, सारो ही कंगाल ।
परजामण्डल जाण गयो जी, असल आपणो हाल ।।

करां कमाई पच-पच कर सब, राज लूट ले जावै ।
कड़ता को बोझो छै भारी, म्हासूं सह्‌यो न जावै ।।

मोटर बैठ्या मौज करै ये, खरचो करै अपार ।
जान आपको माल मुफ्त को, यांनै दया न आय ।।

सहकारी सूं म्हां समझा छां, होसी दलिदर दूर ।
ईनाचण नैं अस्या लूट्या, रह्‌यो न तन पर नूर ।।

घर भी बिक गया, गाडा बिक गया, बैल, डांगर साए,
करसां की अब कद सुध लेगा, महावीर जी धाए ।

□

सत्याग्रह की रेल

□ भंवरलाल स्वर्णकार 'प्रज्ञाचक्षु'

सत्याग्रह की रेल ऊपर माल सूं चली।
तीन बरस डूंगर पै घूमी, हेरी गली-गली ।।
रावड़रा सूं टक्कर खाकर बेगू मैं मिली।
आगे बढ़कर जावो चाही, देखी मावली ।।
जाटां नै तो पटडी टोडी बाखां हली।
बस्सी हेर पालको हेर्‌यो, बरड़ बीनली ।।
पाछो ई को अंजन लोट्‌यो, सादड़ी चली।
देलवाड़े सींगल लाग्यो, आगै निकली।
जाता जाता नारै मंगरै रखत भी भली ।।
अन्यायां की हुई पाल्टी मैली सगली,
लूट पाट कर बा की वांकी दाल न गली ।।
भीलवाड़ा में हुई तैयारी वैसरण की भली,
धकधूं-धकधूं करती उदयपुर सूं चली।
गारड म्हांका विजयसिंह जी, जाधा महाबली।
अजमेर सूं सीटी दी दी, फूली और फली ।।

□

रजवाड़ी होली

□ तनसुखलाल मित्तल

जागौ रै रजवाड़ी वीरों, देखो दन उग आयो रै।
सारो जगतो जागपड़यो, परण थानैं सोबो भायौ रै।
देस-धरम की सेवा करता, ज्यानैं प्राण गमायो रै।
कंकी थे सन्तान सूरमा, मूंडो क्यूं कर छिपायो रै।
ममता-मान-मोह की मदिरा, पी तन-मन अलसायौ रै।
अब तो आंख्यां खोलो जागो, पाछो सतगुण आयौ रै।

□

इज्जत बढ़ाओ भारत देस की

□ तनसुखलाल मित्तल

इज्जत बढ़ाओ भारत देस की ।
भारत देस की रै हो रै भाई,
इज्जत बढ़ाओ भारत देस की ।

दुनियां का सब देसां बीच रै, देस्यां को छै राज,
भाई देस्यां को छै राज ।

पर ई भारत देस बीच मैं परदेसी को राज,
भाई परदेसी को राज

अब राज रै, इज्जत बढ़ाओ भारत देस की ।। १ ।।
परदेसी जीं देस मैं रै करता हो, वे राज,
भाई करता हो वे राज ।

अस्या देस का देसी वासी फिर गुलामी काज,
भाई फिरै गुलामी काज ।

काज रै, इज्जत बढ़ाओ भारत देस की ।। २ ।।
परदेस्यां का राज मैं रै परजा सब दुख पावै
भाई परजा सब दुख पावै

भारत मैं अंगरेजी राज, धन लन्दन ले जावै
भाई धन लदन ले जावै

ले जावै रै, इज्जत बढ़ाओ भारत देस की ।। ३ ।।
रुई ठेठ बिलायत जाकर, कपड़ो बणकर आवै,
भाई कपड़ो बणकर आवै ।

ऊं कपड़ा सूं देसी धन्धा, सब चौपट हो जावै,
भाई सब चौपट हो जावै
हो जावे रै, इज्जत वढ़ाग्रो भारत देस की ।।४।।

देस कपड़ा की परतिग्या लेकर ऊनै पालो रै ।
लेकर ऊंनै पालो रै,

परदेसी कपड़ा की अब तो, होल्यां बालो रै,
होल्यां बालो रै,
होल्या बालो रै, इज्जत बढ़ाग्रो भारत देस की ।।५।।

भारत की या राष्ट्रीय होली, सब हिलमिल कर गाग्रो रै,
सब हिलमिल कर गाग्रो रै ।

घूल उड़ाबो छोड़ो अब तो, फूलां नै बरसाग्रो रै,
फूलां नै बरसाग्रो रै ।

बरसाग्रो रै, इज्जत बढ़ाग्रो भारत देस की ।।६।।

□

बीनती

□ हरिबल्लभ हरि

अब तो करपा कर भगवान, म्हें सब सरण पड्यां छां थारी ।

हो गया दुरबल दीन अनाथ
सबनै छोड़ दियो छै साथ

तू ही पकड़ेगो अब हाथ, होगी सभी तरां सूं ख्वारी ।।

पड़ रया हाय! काल पै काल
सपनो होगी रोटी-दाल

म्हांको फूट गयो यो भाल, जकड्या जंजीरा सूं भारी ।।

बढ़ रया दुराचार दन-रात
बैठ्यां सभी लगायां घात

म्हांको सुणै न कोई बात, भगवन कांई मरजी थारी ।।

म्हां छां बे-जबान सब लोग
खा रया परदेसी सब लोग

भगवन तू ही मटाबा जोग–म्हां की सारी या लाचारी ।।

म्हें छां सब थारा ही पूत
हिन्दू मुसलिम और अछूत

मलकर करल्यां सारा सूत–भागै दूर गुलामी सारी ।।

□

राजा रै प्यारा

☐ दिनेशचन्द्र वर्मा

राजा रै राजा, प्यारा कैण रैत की मान, प्यारा कैण रैत की मान रै
रैयत को मान्यां सूं शोभ्या होयसी ॥ १ ॥

राजा रै गोरा, मिन्तर नांय, प्यारा गोरा मिन्तर नाय रै
गोरां को सल्ला सूं पींदै बैठसी ॥ २ ॥

राजा रै, राज-काज को भार, प्यारा राज-काज को भार रै
पिरजा नै सौंप्यां सूं नींकां चालसी ॥ ३ ॥

राजा रै गया जमाना बीत, प्यारा गया जमाना बीत रै
पैल्यां तो इकतंत्री-शासन चालतो ॥ ४ ॥

राजा रै, नागरिक अधिकार, प्यारा नागरिक अधिकार रै
लेकर हो मानांगा निश्चै जाणलै ॥ ५ ॥

राजा रै, दमन करो भर पूर, प्यारा..........................रै
राजी सूं रैवानैं सारा यार छां ॥ ६ ॥

राजा रै, प्रीत प्रजा से राख, प्यारा..........................रै
पिरजा ही करै छै थांको पालणा ॥ ७ ॥

राजा रै देख जमानो चाल, प्यारा देख जमानो..............रै
उत्तरदाई शासन की कर घोषणा ॥ ८ ॥

राजा रै, बड़ा बड़ा समराट्, प्यारा बड़ा.......................रै
मांटो में मिल गया आंख्यां देखतां ॥ ९ ॥

राजा रै, सम्हलै छै तो सम्हल, प्यारा..........................रै
नातर तो उठ जासी थांको ठावलो ॥ १० ॥

☐

चालो सहेल्यां

चालो सहेल्याँ आपां ।।

जयपुर का आजाद चौक में सारा मिल जुल जावां एं
आजादी का गीत अनोखा गाकर प्रेम बधांवां एं
चालो सहेल्याँ आपां० ।। १ ।।

ऊंठी के बीचम शाही छै, एंठी के छां आपाँ एं
जय जय बोल प्रजा मण्डल की गहरो रंग जमावाँ एं
चालो सहेल्याँ आपां० ।। २ ।।

सत्याग्रह की गहरी चोखी, असल गुलाल बणावां एं
मंठी भर पिरजा का मुख पर, जी की खूब लगावां एं
चालो सहेल्याँ आपां० ।। ३ ।।

जत्था बणा बणा कर ल्यावां, गिरफ्तार हो जावां एं
बीचम नौकर शाही की खिल्ली खूब उड़ावां एं
चालो सहेल्याँ आपां० ।। ४ ।।

ये लाठी बरसावेंला जद, खड़ी अटल हो जावाँ एं
होली का छापासा गिण कर वांका घाव सजावाँ एं
चालो सहेल्याँ आपां० ।। ५ ।।

नौकर शाही कीच उछाले, कदे नहीं घबरावाँ एं
बन्दूकाँ पिचकारी होवे तो भी पग न हटावाँ एं
चालो सहेल्याँ आपां० ।। ६ ।।

हंसता हंसता गिरफ्तार हो, जेल धाम में जावां एं
ऊंठै बैठ प्रजामण्डल का, मंगल खूब मनावां एं
चालो सहेल्याँ आपां० ।। ७ ।।

□

होली छै

चल्यो जा जालिम होली छै। टेक।

जमनालाल बजाज सेठ नै ज्यो जयपुर को जायो।
क्यों रोके छी, वो दुखियां की सहाय कराबा आयो।
कांये ने विदा घोली छै। चल्यो जा० ॥ १ ॥

वो छै गाढ़ी छाती हालो तू दीखै छै जिनख्यो।
ऊसे भिड़ पछाड़ खा जासी हंससी सारो मिनख्यो ॥
चलाई कैंयां गोली छै। चल्यो जा० ॥ २ ॥

कीचड़ तू कालो कानूनी फैंक दियो पिरजा पर।
ऊं की एवज में यो छापो थारै धर्‌यो जमाकर ॥
पिटारी थारी पोली छै। चल्यो जा० ॥ ३ ॥

सत्याग्रह को रंग कसूमल पक्को घणो बणायो।
जयपुर का पिरजामण्डल पर यो सारै ठै छायो ॥
अहिंसा केसर घोली छै। चल्यो जा० ॥ ४ ॥

ईं की पिचकारी मार्‌यां से प्रेम रंग दरसावे।
चाहे तन का टूक उडाद्यो पाछा पग न हटावे ॥
खड़ी वीरां की टोली छै। चल्यो जा० ॥ ५ ॥

धनुष अहिंसा शर सत्याग्रह आजादी छै निसाणी।
शान्ति और दृढ़ता से डट कर बेध पियांला पाणी ॥
प्रजा दृढ़ता से बोली छै। चल्यो जा० ॥ ६ ॥

सत्याग्रह का वां कैद्यां की क्यों न करी सुणाई।
लाठी बरसाई जयपुर में दी हड़ताल करवाई ॥
करम की पतरी खोली छै। चल्यो जा० ॥ ७ ॥

राजा कठपुतली कर राख्यो छोड़ो अब न नचाओ।
सत्याग्रह करस्यां म्हे जल्दी सर बीचम घर जाओ ॥
प्रजा दृढ़ता से बोली छै। चल्यो जा० ॥ ८ ॥

वीरों लाज बचाना

वीरों, जयपुर की लाज बचाना ।
युद्ध में शीश कटाना ।।

जयपुर वासी बढ़ो अगाड़ी, कभी न रखना पैर पिछाड़ी ।
प्राण भले ही गवाना ।
युद्ध में शीश कटाना ।। १ ।। वीरों...............

आओ प्यारे वीरों आओ, एक साथ सब मिल कर गाओ ।
जयपुर का ही तराना ।
युद्ध में शीश कटाना ।। २ ।। वीरों...............

जयपुर वासी अब दिखलादो, जीवन बलिवेदी पै चढ़ादो ।
जयपुर को आजाद बनाना ।
युद्ध में शीश कटाना ।। ३ ।। वीरो..........

वीर कभी तुम नहीं घबड़ाओ, सौख्य समझ दुख को अपनाओ ।
मातृ-भूमि पर मिट जाना ।
युद्ध मे शीश कटाना ।। ४ ।। वीरों.... ....

बहुत लुट चुके अब न लुटोगे, रही सही अब लाज रखोगे ।
कौल रहे मरदाना ।
युद्ध में शीश कटाना ।। ५ ।। वीरों....... ....

सत्याग्रही बन आगे आओ, अपनी आत्म-शक्ति बतलाओ ।
शत्रु का दिल दहलाना ।
युद्ध में शीश कटाना ।। ६ ।। वीरों...............

भेद भाव को दूर भगा कर, अखण्ड ऐक्यता पाठ पढ़ाकर ।
आपस मे प्रेम बढ़ाना ।
युद्ध में शीश कटाना ।। ७ ।। वीरों...............

प्रजामण्डल गायन हो घर घर, उड़े प्रजाध्वज विश्व गगन पर ।
कह "दिनेश" यह गायन गाना ।
युद्ध में शीश कटाना ।। ८ ।। वीरों.......

जय जनता का बल की

जय बोल प्रजामंडल की, जय जयपुर जनता का बल की।
प्रण करां आंजली ले जल की, छां साथ प्रजा का मंडल की ॥

बच्चा बूचमजी मानोजी, मत पिरजा से हठ ठोनोजी,
ई में दोखे थां की हलको।

पिरजा मर रहो सारी भूखो, यानै दुर्लभ रूखो सूखो,
थे निगलो रोटी डब्बल की।

लीलर कन्तार अधूरा सै, म्हें ढक मेला अदब गभूरा से,
थे फर्श बिछाओ मखमल की।

म्हांनें समझ्यो थे माटी का, थें वार करो छो लाठी का,
थे धमकी द्यो छो राईफल की।

सत्याग्रह का सद्वीरां सें, राजस्थानी रणधीरां सें,
वातां अब छोड़ो थे छल की।

हिन्दू मुस्लिम और ईसाई, छां सारा आपस में भाई,
सब बूंद एक ही बादल की।

अब नाव बैठ कर एका की, सेवा करस्यां म्हें माता की,
लज्जा राखां जन्म-स्थल की ॥

□

जागो रे जैपुर वासी

जागो रे जैपुर वासी, घण्टी वज रही जगने की,
तन मन धन कर भेंट देश हित, सत्य लड़ाई लड़ने की।

जयपुर देश हमारा हम हैं जैपुर वासी जैपुर के,
कहो पुकार सभी मिल जुल अव, नहीं जरूरत डरने की।

परदेशी भर रहे पोल में देशी सव भूखे डोलें,
लुच्चे और लफंगों की वन आई थैली भरने की।

गुंडों के वन मित्र विदेशी, लाठी और घूंसे मारे
धमकी दें भोली जनता को धन सम्पत्ती हरने की।

देश द्रोही टुकड़ों के खातिर, लोगों को वहकाते हैं,
फूट द्वेष पाखण्ड सिखावे, चाल चलावे गिरने की।

तुममें वीर कौन है ऐसा, कष्ट मिटावे माता के,
वोलो अव हिम्मत है किसकी, धर्म धारणा धरने की।

हिन्दू मुसलिम ईसाई, प्रेम डोरि के सागे भाई,
आओ आज प्रतिज्ञा करलो, सत्याग्रह कर मरने की।

वीर बनो प्रण के पक्के, सच्चे योद्धा रणधीर वनो,
त्यागी वन वापू के पथ पर, शिक्षा दो अव चलने की।

□

प्रजा ने राजी राख रै

राजा, ओ मान राजा, मानै छै तो बात प्रजा की मान ओ,
पैलां की फंगी तू मत नै मान ओ।

परदेशी से कांई पालो प्रीत ओ,
परदेशी तो दो दिन का छै पावणां

चौड़े धाड़े माल मस्करा खाय छै,
घर कां नै दुर्लभ छै जौ का टूकड़ा।

पोलो खेल्या लोग नचाई पोल छै,
झटपट माया कान संभालो आपको।

भली बुरी को राजा पर ही भार छै,
पैलां परै सरक कर दांत तिड़ाय सी।

पैला आकर फैलावै छै फूट ओ,
पैलां को कर कालो मूंडो काढ दै।

काम पड़्यां सै घर का आवै काम रै,
पैला पूंछ दबा कर दूरा भाग सी।

थांको म्हांको पीड्यां को व्यवहार जी,
नादानी नें आकर मत नै तोड़ ले।

बिन पिरजा के राजा को नहीं मान रे,
पिरजा ही परमेस्वर को औतार छै।

पैलां सें डरपै मत तू बावला,
पिरजा नें तू राजी राजी राख रे।

□

सांचो अवसर आगो

ओजी, जागो जी जैपुर का वासी जागो ।

थांका घर के मांही घुस कर पैला लूट मचाई,
ओजो, ले जासी ये थांको तागो तागो ।। ओजी०

घर का भूखा डोलै पैला ले ले थैल्यां तोलै,
ओजी, दिन धोलै जैपुर में कलजुग छागो ।। ओजी०

गुन्डा लाग रह्या छै लारै, लाठ्यां घूंसा थप्पड़ मारै,
ओजी, गुस्सा से थे धीरज मत न त्यागो ।। ओजी०

पैला जिद बहकावै तो ये घर कां पर गुर्रावै,
ओजी, कुलकायां काग्यां सें दूरा भागो ।। ओजी०

कितना ही भड़काओ मत न बहकाबा में आओ,
ओजी, अहिंसा को पैरो तो थे बागो ।। ओजी०

हिन्दू मुसलिम और इसाई, मिल कर सारा भाई,
ओजी, माता की सेवा में अब तो लागो ।। ओजी०

आओ सारा भाई, सत्याग्रह की लड़ो लड़ाई,
ओजी, परखाई को सांचो अवसर आगो ।। ओजी०

□

उठो-उठो ऐ प्यारे मित्रों

उठो उठो ऐ प्यारे मित्रों, जेल तुम्हें अब जाना होगा।
जेल विगानी जेलर विगाना, अपना और न कोई होगा।।

ना कोई घर का ना कोई भाई, दुःख कष्ट सब सहना होगा।
एक जान पर दुःख हजारों, सो सब तुमको पाना होगा।।

अन्यायों की लाठी बेंत, सब कुछ तुमको खाना होगा।
सब कुछ भी सह करके तुमको, सत्य अहिंसा निभाना होगा।।

अपनी जन्म-भूमि की खातिर, सर अपना यह देना होगा।
सुख की नींद में क्या सोते हो, आलस्य दूर भगाना होगा।।

घर में देखो चोर खड़े हैं, इनको दूर भगाना होगा।
सत्याग्रह की कर लो त्यारी, जेल तुम्हें अब जाना होगा।।

कमर बांध के उठो रे भाई, जेल तुम्हें अब जाना होगा।।

उठो उठो ऐ प्यारे मित्रों.....................

□

युग है पार उतरने का

जागो-जागो जयपुर वासी, युग है पार उतरने का,
तन-मन-धन से मातृभूमि की, सच्ची सेवा करने का ।

समय चूक कर पछताने से, हाथ नहीं कुछ आता,
आन पड़ा है दाव पियारे, जीवन बाजी धरने का ।

सत्याग्रह का अस्त्र लिये तुम, निर्भय रण में घुस जाओ,
कवच अहिंसा पहनो प्यारे, काम नहीं है डरने का ।

भूले भोले भाई अपने, आप राह पर आवेंगे,
बिना किये बलिदान देश पर जीवन नहीं सुधरने का ।।

□

जय बोलो

□ काशीनाथ 'अक्खड़'

जय बोलो रे पिरजा-मण्डल की ॥ टेक ॥ जय बोलो०

पिरजा रे मण्डल प्रजा की संस्था.........................
आपां कंठ लगा लेस्यां ॥ १ ॥ जय बोलो०

पिरजा रे मण्डल सबको ही प्यारो.........................
सब न ल्यार मिला लेस्यां ॥ २ ॥ जय बोलो०

पिरजा रे मण्डल सब ही ने चावे.........................
पिरजा को राज बना लेस्यां ॥ ३ ॥ जय बोलो०

बुरा-बुरा कानून बरण रह्या.........................
बांनै तोड़ फैंक देस्यां ॥ ४ ॥ जय बोलो०

जो रे प्रजा नै ज्यादा रे सताई.........................
सत्याग्रह खूब मचा देस्यां ॥ ५ ॥ जय बोलो०

□

औैर काम सब छोड़ बावला
सत्याग्रह में चाल रै ।। औैर० ।।

लाठ्यां खाई जेल नहिं पौच्यो,
चाल्यो जनम गंवाय रै,

बिना जेल लख चौरासी में,
फिर-फिर गोत्या खाय रै ।। औैर० ।।

सत्याग्रह की नाव बैठकर,
उतर दमन-दरियाव रै

पैली पार पोंच कर प्यारा,
हो स्वतन्त्र सुख पाय रै ।। औैर० ।।

□

सत्याग्रही केश्यो

केश्या र, प्यारे केश्या, चालै छे तो सत्याग्रह में चाल
प्यारा, चालै छै तो सत्याग्रह में चाल रै।
सत्याग्रह चाल्यां सैं मुक्ति पावसी ॥ १ ॥

केश्या रै, लाल केश्या, मानै छै तो कथन गांधि को मान
प्यारा, मानै छै तो कथन गांधि को मान रै ।
ई का तो मान्यां सैं सारी सिद्धि छै ॥ २ ॥

केश्या रै, लाल केश्या, तोड़े छै तो कालो कानुन तोड़
प्यारा, तोड़े छै तो कालो कानुन तोड़ रै ।
कालो यो कानून भारी जुल्म छै ॥ ३ ॥

केश्या रै, लाल केश्या, जावै छै तो जेलां माहीं जाव
प्यारा, जावै छै तो जेलां माहीं जाव रै ।
जेलां में जायां सैं दुश्मन हारसी ॥४ ॥

केश्या रै, लाल केश्या, जीवै छै तो स्वतन्त्र होकर जी
प्यारा, जीवै छैं तो स्वतन्त्र होकर जीय रै।
ईश्या तो जीबा सैं मरबो ठीक छै ॥ ५ ॥

केश्या रै, लाल केश्या, गावै छै तो गीत जोश का गाव
प्यारा, गावै छै तो गीत जोश का गाव रै ।
जोशीला गीतां सैं उत्साह फैलसी ॥ ६ ॥

केश्या रै, लाल केश्या, खावै छै तो लाठी गोल्यां खाव
प्यारा, खावै छै तो लाठी गोल्यां खाव रै ।
धन्य होय लो जीवन ऐसी मौत सैं ॥ ७ ॥

केश्या रै, लाल केश्या, पहरै छै तो देसी कपड़ा पहर
प्यारा, पहरै छे तो देसी कपड़ा पहर रै ।
याँ कपड़ा पहर्यां सैं भाई जीवसी ॥ ८ ॥

केश्या रे लाल केश्या बोले छै तो जय प्रजा की बोल
प्यारा, बोल छै जय प्रजा की बोल रै,
प्रजा की बोल्यां सैं जालिम कांप सी ॥ ९ ॥

केश्या रे, लाल केश्या, काटै छै तो बीचम की जड़ काट
प्यारा, काटै छै तो बीचम की जड़ काट रै,
बीचम ही या जुल्मां की जड़ मूल छै ॥ १० ॥

सत्याग्रही की विदाई

अजी, आज जावां छां, म्हें आज जावां छां ।

घणां दिनां सूं जयपुर म्हां को, बंध्यो पड़्यो छै पाश में,
अजी, पास ई की काटबा, म्हें आज जावां छां ।। १ ।।

गौरा अंडे राज जमायो, सात समंदर पार का,
अजी, राज यां को मेटबा, आज जावां छां ।। २ ।।

संस्था पर पाबन्दी कर दी, ये काला कानून सैं,
अजी कानून नैं तोड़बा म्हें आज जावां छां ।। ३ ।।

'नागरिक स्वाधीनता' तो जन्म को अधिकार छै,
अजी करबा याही घोषणा, म्हें आज जावां छां ।। ४ ।।

लाठी घूंसा थप्पड़ मुक्का राजी राजी झेलस्यां
अजी, बरत अहिंसा पालस्यां, म्हें आज जावां छां ।। ५ ।।

सभा करांला भाषण द्यालां, बीचों बीच बजार में,
अजी, ताकत बांकी देखबा, म्हें आज जावां छां ।। ६ ।।

जेल की तो बात कांई, फांसी नैं तैयार छां
अजी, राजस्थानी वीर छां, म्हें आज जावां छां ।। ७ ।।

जब तक दम में दम रहे सब वीरता सें जूझ ज्यो,
अजी, या ही 'वसीहत' छोड़कर, म्हें आज जावां छां ।। ८ ।।

□

सेवा में लागो

देखो, या जुलम्यां नै शरम नहीं आवै ।। टेर ।।

म्हां की खावै रोटी उल्टा म्हां पर ही गुर्रावै ।
ओजी, जनतां नैं लाठ्यां सैं पिटवावै ।। १ ।।

दीतवार और बुद्धवार नैं सत्याग्रही निकलै ।
ओजी, जनतां भी हजारां में ही आवै ।। २ ।।

मूलसिंह सा डिप्टी आवै, साथ फौज नैं ल्यावै ।
ओजी, मोटर भी बैठाबा नै ल्यावै ।। ३ ।।

चक्रवर्ती लट्ठ बहादुर भाग्या अन्डे आवै ।
ओजी, आकर के ये ठस्सो खूब जमावै ।। ४ ।।

सत्याग्रही पकड़े ये तो मोहनपुरे लै जावै ।
ओजी, बालंटीयरां ने बीच मैं उतारै ।। ५ ।।

जनता नै डरपावै ये तो, फोजां ने बुलवावै ।
ओजी, जनता भी हड़तालां खूब मनावै ।। ६ ।।

नामी नामी सेठां नै ये जल्दी सैं बुलवावै ।
ओजी, हड़तालां खुलाबा नै मनावै ।। ७ ।।

जत्था ऊपर जत्था निकलै, कुछ नहीं चाले यांकी ।
ओजी, मौजूदा शासन नैं बुरो बतावै ।। ८ ।।

हिन्दू मुस्लिम मिल कर सारा जय प्रजा की बोलो ।
ओजी, प्रजा मण्डल नैं रोज सूं मनवावो ।। ९ ।।

जयपुर वीरों जागो अब तो, चेतो आंख्यां खोलो ।
ओजी, सारा भाई काला कानून हटावो ।। १० ।।

सारा भाई आवो साथ देव्यां नैं भी ल्यावो ।
ओजी, जल्दी जल्दी थे जेलखानै जावो ।। ११ ।।

'जौहरी' की या अर्जी चित में जल्दी से थे ल्यावो ।
ओजी, माता की सेवा में सारा लागो ।। १२ ।।

बोलो, प्रजामण्डल की जय !

भूल मत जाना

☐ अमोलकचन्द सुराणा

मुसीबत हिन्द की ऐ वोटरों ! तुम देखते जाना ।
कभी भी ध्यान इस दर्द वतन का भूल मत जाना ।।

हमारी फूट से हम खुद हुये बदनाम दुनियां में ।
विदेशी श्वान हमको मानते तुम भूल मत जाना ।।

हमारे बाल-बच्चों को नहीं भरपेट भोजन है ।
करोड़ों बिलबिलाते रात-दिन तुम भूल मत जाना ।।

हमारे देश के मानी धनी खुदगर्ज बन वैठे ।
इन्हें परवाह पड़ी क्या देश की तुम भूल मत जाना ।।

लगा है मोरचा धारा सभा में बैठने हमको ।
खुशामद कर रहे हैं वोट को तुम भूल मत जाना ।।

जाल कानून का व्हाईट पेपर आ रहा है यहां ।
फँसाने देश को इस जाल में तुम भूल मत जाना ।।

अगर तुम फँस गये इस जाल में तो खूब रोओगे ।
अभी भी गौर करलो ए अजीजों ! भूल मत जाना ।।

मुसलमानों, ईसाई, हिन्दुओं सब एक हो जाना ।
यह मौका आजमाइश का इसे तुम भूल मत जाना ।।

इसी से देश के नेता पुकारें हैं, सुनो वोटर ।
फक्त दो वोट कांग्रेसी को, यह भूल मत जाना ।।

☐

किसे सर पर चढ़ाओगे ?

कहो वोटर, किसे इस बार तुम माला पिन्हाश्रोगे ?
किसे खर पर, किसे गज पर, किसे सर पर चढाश्रोगे ?

इधर खिलती कली तो है, मगर है खास टेसू की ।
इसे गुण-गंध बिन कैसे हृदय-तल पर बिठाश्रोगे ?

न यह लड़ने की माहिर है नही दुनिया से वाकिफ़ है ।
इसे क्या भेजकर श्रपनी हँसाई ही कराश्रोगे ?

उधर है इक सड़ा नरियल है दाढ़ी गल गई जिसकी ।
न सुनता है न चलता है उसे कैसे चलाश्रोगे ?

बजा है युद्ध का डंका, उद् है दर पै आ पहुँचा ।
तुम्हारी श्रोर से बोलो, किसे सहरा बंधाश्रोगे ?

लगाया जाल है सय्याद ने हर दर व खिड़की में ।
इसे तोड़े वो श्रभिमन्यु, कहो किसको बनाश्रोगे ?

न यह सर पर ठहर सकता, न ही है हार बन सकता ।
जो म्युनिसीपल के लायक है, उसे रण में बढ़ाश्रोगे ?

कहेंगे लोग क्या तुमको, जरा सोचो तो दुनियां के ।
अगर तुम देवता को भोग गोबर का लगाश्रोगे ?

मुकुट ही सर का गहना है वही शोभा तुम्हें देगा ।
उसी को भेजकर इस जंग में, तुम पार पाश्रोगे ?

□

कुछ प्रमुख लोक-गीत

गोरा हट जा

लोक गीत : होरी

आछो, गोरा हट जा !
राज भरतपुर को रै गोरा हट जा !
भरतपुर गढ़ बांको, किलो रै बांको,
गोरा हट जा !

यूं मत जांणी रै गोरा लड़ रै बेटो जाट को,
ओ कंवर लड़ै रै राजा दसरथ को, रै
गोरा हट जा !

राज भरतपुर को रै गोरा हट जा !
भरतपुर गढ़ बांको, किलो रै बांको,
गोरा हट जा !

गढ़ रै ऊभा रै म्हांरा बावन भैरूं,
कांगरां ऊभी रै चौंसठ जोगणियां, रै
गोरा हट जा !

राज भरतपुर को रै गोरा हट जा !
भरतपुर गढ़ बांको, किलो रै बांको,
गोरा हट जा !

कांई तो करैला थारा बावन भैरूं ?
कांई तो करैली थारी चौंसठ जोगणियां, रै
गोरा हट जा !

राज भरतपुर को रै गोरा हट जा !
भरतपुर गढ़ बांको, किलो रै बांको,
गोरा हट जा !

चक्कर चलावैला म्हारा बावन भैरूं,
खप्पर भरैली जल जोगणियां, रै
गोरा हट जा !

राज भरतपुर को रै गोरा हट जा !
भरतपुर गढ बांको, किलो रै बांको,
रै गोरा हट जा !

□

सांभर रा लूण रो गीत

म्हारो राजा भोलो, सांभर दे दीनी अंगरेज नैं
म्हारो राजा भोलो
म्हारो राजा भोलो, सांभर दे दीनी अंगरेज नैं

म्हारा टाबर भूखा, रोटी तो मांगै तीखै लूण की
म्हारा टाबर भूखा
म्हारा टाबर भूखा, रोटी तो मांगै तीखै लूण की

म्हारो राजा भोलो,
म्हारो राजा भोलो, सांभर तो दे दीनी अंगरेज नैं ।।

गोरो गोरो मूंडो आंको, पण तन रो कालो ऐ
राजाजी घर में मत बुलवाओ
आं नैं घर को भेद मत बताओ

म्हारो राजा भोलो
म्हारो राजा भोलो, सांभर दे दीनी अंगरेज नैं ।।

गिटपिट गिटपिट बोली बोले, वातां मारै घूण की
सांभर मतद्यो राजाजी, रोटी विना लूण की

म्हारो भोलो राजा
म्हारो राजा भोलो, सांभर दे दीनी अंगरेज नैं ।।

□

लोकगीत : फागरण

वरिणया वाली गोचर मांय कालो लोग पड़ियो ओ,
राजाजी रै भेलो तो फिरंगी लड़ियो ओ,
काली टोपी रो ।

हे ओ काली टोपी रो, फिरंगी फैलाव कीधो ओ,
काली टोपी रो ।

बारली तोपां रा गोला धूड़गढ़ में लागै ओ ।
मांयली तोपां रा गोला तंव तोड़ै ओ,
झल्लै आउवो ।

हे ओ झल्लै आउवो धरती रो थांबो ओ,
झल्लै आउवो ।।

मांयली तोपां तो छूटै आडावलो धूजै ओ ।
आउवे रा नाथ तो सुगाली पूजै ओ,
झगड़ो आदरियो ।

हे ओ झगड़ो आदरियो, आउवो झगड़ा ने बांको ओ,
झगड़ो आदरियो ।।

राजाजी रा घोड़लिया कालां रे लारं दौड़ै ओ ।
आउवे रा घोड़ा तो पछाड़ी तोड़ै ओ,
झगड़ो व्हैरण दो ।

हे ओ झगड़ो व्हैरण दो, झगड़ां में थांरी जीत व्हैला ओ,
झगड़ो व्हैरण दो ।

□

मुजरो ले ले नी

मुजरो ले ले नी बाबलीया होली रंग राची

मुजरो ले ले नी....

मायांरी सिकार माथे थारा हाकम चडिया ओ
गोली रा लागोड़ा भाई भाकर मिलीया ओ

झाड़ी झंगा में, हां रे झाड़ी झंगा में,
गोलीयां चांदी री चाली ओ, झाड़ी झंगा में
गोलीयां चांदी री चाली ओ झाड़ी झंगा में,

टोली रे टीकायत माथै गोरा लेने आया हो
कोटरी बुरज रै ऊपर भाटी लड़रिया ओ।

कै मुजरो ले ले नी....

भालांरै भलका में टणीयाँ तलवारां तोली जी ओ
भाटी ने उदावत भिड़ग्या चलती गोली ओ

के मुजरो ले ले नी....

बाबा मुजरो ले ले नी, महलां री जागां गायां चरगी ओ

के मुजरो ले ले नी....

□

भायां, सामल रहीजो

आउवे वाला बाग में बावलीये वालो घेरो रे,
माथे फौजां आई नै अंगरेज मेलो रे,
भायां, सामल रहीजो....वा वा भायां....

सामल रहीयो ठाकर ने ठिकाणों छूटै रे
के भायां सामल रहीजो ।।

एकठौ नगारौ धणीयां राते नाडे बाडो·ओ
दूजोड़ो नगारो धणीयां ठेठ बाजे ओ, के झण्डो रोपीये....
वाह-वा झण्डो रोपीयो मैणां रा माथा
कंवरा लीधा, ओ के झण्डो रोपीयो ।।

आउवे वाला धणीयां थारे लीला भलरी मुरकी ओ
गैरीया फरमावे धणीवां कांई मरजी हो, छुट्टी देओ तो....
हां-हां छुट्टी देओ तो फिर नगारां फाड़दा करदां ओ
छुट्टी देओ तो, होली री गैर लड़नै देखलां, छुट्टी देओ तो ।।

सिंगीजी परवाणा मेले भण्डारी ने दीजो ओ
शोर ने सीसारी गाड़ी बेगी मेलो, ओ के....

लिखीया परवाणां, हांरे लिखीया परवाणां....
गोलीयां चांदी री चालै ओ, के लिखीया परवाणां....

□

काली टोपी रो

मोडकी नंगरी रो पाणी ढालो ढलीयो रे
आबू थारे पहाड़ां नें अंग्रेज वडीयो रे
काली टोपी रो देश में छावणीयां नाखे रे
काली टोपी रो....

देश में अंग्रेज आयो कांई-कांई लायो रे
फूट नाखी भायां में वेगार लायो रे
काली टोपी रो, बाबा काली टोपी रो
देश में छावणीयां नाखे रे, काली टोपी रो
घोड़ा रोवे घास ने टाबरीया रोवे दाणां ने

बुरजां में ठुकराण्यां रोवे जानण जाया नै,
कै रोलो बापरियो,
वाह-वा रोलो बापरियो
देश में अंग्रेज आयो रै, कै रोलो बापरियो....

□

रतन राणो

म्हारा रतन राणा ! अेकर तो अमराणै घोड़ो फेर ।
अमराणै में बोलै मूवा-मोर
हो जी हो, म्हारा रतन राणा! अमराणै में बोलै मूवा-मोर,

बागां में बोलै छै काली कोयली,
रै म्हारा सायर सोढ़ा ! अेकर मूं अमराणै घोड़ो घेर ।।

अमराणै में महूड़े रो पेड,
हो जी हो, म्हारा रतन राणा ! अमराणै में महूड़े रो पेड़,
महूड़ां मांही सूं मद नीसरै,
हो म्हारा, रतन राणा ! अेकर मूं अमराणै पाछौ आव ।

अमराणै में घरट मंडाय,
हो जी हो, म्हारा रतन राणा ! घर वरिये में घरट मंडाय,
गेहूँड़ा पीसीजै, आटड़्यो राणै रावरो,
रै म्हारा सायर सोढ़ा ! अेकर तो अमराणै घोड़ो फैर ।

अमराणे में घड़े रे सोनार,
हो जी हो, म्हारा रतन राणा ! अमराणै में घड़े रे सोनार,
पायलड़ी घड़ादे रिमझिम बाजणी,
रै म्हारा रतन राणा ! अेकरिये अमराणै पाछौ आव ।

भटियल ऊभी छाजड़्यै री छांह
होजी हो, म्हारा रतन राणा ! भटियल ऊभी छाजड़्यै री छांह,
आंसूड़ा ढलकावै कातर मोर ज्यूं,
रै म्हारां रतन राणा ! अेकर तो अमराणै घोड़ो फैर ।

अमराणै में घोर अंधार
हो रै म्हारा सोढ़ा राणा ! अमराणै में घोर अंधार ।
बिलखानै लागै महल-मालिया,
हो म्हारा रतन राणा ! अेकरिये अमराणै पाछौ आव ।

□

परिशिष्ट

कवि-परिचय

बांकीदास

वांकीदास का जन्म तत्कालीन जोधपुर राज्य के भांडियावास ग्राम में सम्वत् 1828 में हुआ था। ये जाति के चारण थे। वांकीदास को पुराणों, शास्त्रों, दर्शन, इतिहास, व्याकरण एवं साहित्य का अच्छा ज्ञान था। इनकी इस बहुमुखी प्रतिभा को देखकर जोधपुर के महाराजा मानसिंह इनसे बड़े प्रभावित हुए और इन्हें अपना राज्य-कवि बना लिया। आगे चलकर वे इन पर इतने मुग्ध हुए कि इन्हें अपना काव्य-गुरु बना लिया और सम्मान-स्वरूप कवि-राजा की उपाधि प्रदान की।

जोधपुर नरेश इनका इतना सम्मान करते थे कि उन्होंने इन्हें प्रथक् रूप से कागजों पर मुहर लगाने तक का अधिकार दे दिया था। वांकीदास अपने समय के उन कवियों में से थे जो आश्रित-कवि होते हुए भी अपने आश्रयदाता की चाटुकारिता नहीं करते थे और समय पर अपनी तेजस्वी वाणी से उन्हें सचेत करते रहते थे। यही कारण है कि जहाँ इन्होंने विदेशी सत्ता का कड़े शब्दों में विरोध किया वहीं राजपूत शासकों को चेतावनी देते हुए उन्हें उपालम्भ दिया कि तुम सबका पराक्रम अंग्रेजों ने सोख लिया है इसीलिए प्राचीन गौरव-शाली परम्पराओं के विरुद्ध धणी के रहते हुए भी धरणी जा रही है।

वस्तुतः इनकी रचनाओं में जहाँ भाव-प्रवणता है वहीं राष्ट्रीय चेतना का ओजस्वी स्वर भी मुखरित हुआ है। नागरी प्रचारिणी सभा की ओर से तीन भागों में इनके लगभग 27 ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं और राजस्थान पुरातत्व मंदिर द्वारा इनकी लिखी करीब 2800 ऐतिहासिक 'वातों' का प्रकाशन हो चुका है। लम्बे समय तक साहित्य सृजन के वाद सम्वत् 1890 में इनका देहावसान हो गया।

मीसण सूरजमाल

'वंश भास्कर' और 'वीर सतसई' जैसी प्रसिद्ध कृतियों के प्रणेता सूर्यमल्ल मिश्रण (मीसण सूरजमाल) तत्कालीन बूंदी नरेश रामसिंह के राज्य-कवि थे। विक्रम संवत् 1872 की कार्तिक वदि एकम को जन्मे और रीतिकाल एवं आधुनिक काल के संधि-स्थल पर खड़े वीर-रस के प्रसिद्ध कवि सूर्यमल्ल मिश्रण राजस्थानी साहित्य में भी आधुनिक युग के प्रवर्तक माने जाते हैं।

राष्ट्रीय चेतना का जितना प्रखर स्वर और वीर-रस का जैसा जीवन्त चित्रण इनकी कृतियों में मिलता है उतना अन्यत्र दुर्लभ है। राजस्थान के नरेशों की पराधीनता और उनके तिरोहित होते वीरत्व को देखकर ये बड़े क्षुब्ध हो जाते थे। इनकी यह अदम्य आकांक्षा थी कि बिखरी हुई राजपूत शक्ति पुनः संगठित होकर अंग्रेजों से लोहा ले और अपनी मातृभूमि का गौरव पुनः प्राप्त हो। अपनी इसी आकांक्षा और जीवनादर्श—'इला न देणी आपणी' को केन्द्र-बिन्दु बनाकर इन्होंने वीर सतसई जैसे ग्रंथ की रचना की। इस ग्रंथ को पढ़कर निश्चय ही धमनियों का पानी हो गया रक्त खौल उठता है और सोया हुआ स्वाभिमान जाग्रत हो उठता है।

सूर्यमल्ल मिश्रण को प्राकृत, डिंगल, संस्कृत और व्रजभाषा का भी अच्छा ज्ञान था। वंश भास्कर और वीर सतसई के अलावा बलवद्विलास, छन्दोमयूख, रामरंजाट, सती रासो और धातुरूपावलि इनकी अन्य उल्लेखनीय कृतियां हैं। वास्तव में सूर्यमल्ल मिश्रण प्रांत की ऐसी विभूति थे जिनके वाङ्मय पर सभी को गर्व है। संवत् 1925 में आषाढ़ वदि एकादशी को ये अपनी इहलीला समाप्त कर सदैव के लिए अमर हो गये।

बारहठ केसरी सिंह

राष्ट्रीय भावना से ओतःप्रोत एवं क्रांति-मंत चेतना से कूट-कूट कर भरे इस कवि का जन्म सम्वत् 1927 में मेवाड़ राज्य के सोन्याणा गाँव में बारहठ कृष्णसिंह के घर हुआ था। ये मूलतः शाहपुरा के रहने वाले थे। ये आरम्भ से ही स्वतन्त्र प्रकृति के मनुष्य थे और ओजपूर्ण कविताएँ लिखते थे। इन्हें संस्कृत एवं हिन्दी के अलावा ज्योतिष एवं दर्शन-शास्त्र का भी ज्ञान था। इन्होंने अपने पिता के अलावा महामहोपाध्याय श्यामलदास से भी काव्य की शिक्षा प्राप्त की।

बारहठ केसरीसिंह का क्रांतिकारियों से निकट का सम्बन्ध रहने के कारण इन्होंने सदैव ही अंग्रेजों की नीति एवं सत्ता का विरोध किया। यही कारण है कि सन् 1903 में जब उदयपुर के महाराणा फतहसिंह दिल्ली में आयोजित लार्ड कर्जन के दरबार में भाग लेने जा रहे थे तो इन्होंने मेवाड़ के अजेय एवं गौरवपूर्ण अतीत का गुणगान करते हुए उन्हें ऐसा उद्बोधन प्रदान किया कि वे रास्ते में से ही लौट गये और दरबार में शामिल न होने के साथ-साथ उन्होंने अंग्रेजों के सामने नत-मस्तक होने से भी इन्कार कर दिया।

यद्यपि राष्ट्रीय गतिविधियों से जुड़े रहने के कारण उन्हें काव्य-सृजन का अवकाश नहीं मिल पाता था, किन्तु उन्होंने जो कुछ भी रचा उसमें जन-जागरण

का शंखनाद सुनाई पड़ता है। उदयपुर के महाराणा सज्जनसिंह ने तो इनकी कविता पर मुग्ध होकर जागीर में कई गाँव तक दे डाले थे।

क्रांतिकारियों के समर्थक होने के नाते इन्हें जेल-यातनाएँ भी भोगनी पड़ीं, किन्तु ये अपने सिद्धान्तों पर अडिग रहे। इनके तेजस्वी व्यक्तित्व से प्रभावित होकर ही इनका सारा परिवार भी स्वतन्त्रता संग्राम में सम्मिलित हो गया। इनका पुत्र प्रतापसिंह बारहठ तो देखते-देखते स्वतन्त्रता की बलि-वेदी पर चढ़ गया। देश गौरव और स्वाभिमान जगाने वाले इस कवि का सन् 1941 में देहावसान हो गया।

विजयसिंह पथिक

विजयसिंह पथिक का जन्म उत्तर प्रदेश में बुलन्दशहर जिले के गुढवाली ग्राम के एक गूजर परिवार में हुआ था।

विजयसिंह पथिक राजस्थान में किसान आन्दोलन के जनक कहे जाते हैं। देश प्रसिद्ध विजोलिया किसान आन्दोलन का नेतृत्व एवं सफल संचालन विजयसिंह पथिक ने ही किया था। इनका वास्तविक नाम भूपसिंह था, किन्तु जब ये टाडगढ़ में नजरबन्द थे तो वेश बदल कर भाग निकले और अपना नाम भी बदल कर विजयसिंह पथिक रख लिया।

विजोलिया के किसानों का जो विश्वास पथिक जी को मिला वैसा विश्वास एवं श्रद्धा अन्य किसी व्यक्ति को नहीं मिली। वे वहाँ के जन-मानस में इस तरह छा गये कि लोग उनकी सदाशयता के गीत गाने लगे। उन्होंने तत्कालीन सामन्ती व्यवस्था के प्रति जो जन-चेतना जागृत की और किसानों को सामन्ती शोषण से बचाया उससे तो वे जन-जन के पूज्य हो गये। यही कारण है कि ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी पथिक जी को लेकर ऐसे गीत गाये जाते हैं जिनमे उन्हें एक उद्धारक के रूप में स्वीकारा गया है।

पथिक जी एक कुशल जन-नेता होने के साथ-साथ उच्चकोटि के कवि एवं साहित्यकार भी थे। एक ओर जहाँ वे राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं से जुड़कर लोगों में राष्ट्रीय चेतना का संचार करते रहे वहीं दूसरी ओर उन्होंने 'पथिक विनोद' एवं 'प्रह्लाद विजय' जैसी सशक्त काव्य-कृतियों का भी प्रणयन किया। शोषित एवं पीड़ित जन के मौन को मुखरित करते हुए पथिक जी जीवन-भर सुप्त चेतना और मानव मन की संवेदना को जाग्रत करते रहे।

28 मई, 1954 में आपका निधन हो गया।

माणिक्यलाल वर्मा

विजयसिंह पथिक के सहयोगी माणिक्यलाल वर्मा का जन्म विक्रम संवत् 1954 की माघ शुक्ला एकादशी को मेवाड़ मे हुआ था। वर्मा जी ने अपना प्रारम्भिक जीवन एक अध्यापक के रूप मे शुरू किया था किन्तु पथिक जी के सम्पर्क में आने के बाद वे बिजौलिया में सामन्ती शोषण एवं उत्पीड़न के विरुद्ध किसानों को जाग्रत करने के प्रयास में जुट गये।

वर्मा जी कवि होने के साथ-साथ एक अच्छे गायक भी थे। बिजोलिया किसान आन्दोलन के समय गांवों में जुड़ी सभाओ में जब वे अपनी ओजस्वी शैली में कोई गीत गाते थे तो हताश और निराश मन मे भी उत्तेजना का संचार हो जाता था। बिजोलिया आन्दोलन के समय वर्मा जी के गीतों ने शोषित किसानो के मन में जिस उत्साह और आक्रोश को जन्म दिया उसी का परिणाम था कि जो किसान ठिकाने और मेवाड़ सरकार के दमन चक्र के विरुद्ध उफ् तक नही करते थे वे आगे चलकर किसी भी प्रकार की लाग और बेगार के विरुद्ध उठ खड़े हुए। कविता द्वारा भीरू जनमानस में वीरत्व का संचरण करना वर्मा जी की एक अनूठी उपलब्धि है। यो तो उनके अनेक गीत लोकप्रिय हुए, किन्तु 'पीड़ितों का पंछीड़ा' और 'लेता जाजो जी नानकजी भील, अर्जी पंचा की' गीत तो लोगो के कंठहार बन गये।

वर्मा जी जीवन-भर अन्याय का विरोध करते रहे और लोगों को अपने अधिकारो के प्रति जागरूक रहने का आह्वान करते रहे। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद वे राजस्थान की रियासतों से बने एक संघ के प्रथम मुख्यमन्त्री भी बने, किन्तु पीड़ित जन की पुकार उन्हें फिर अपने बीच खींच लाई। इसके बाद वे मृत्यु पर्यन्त शोषित एवं पीड़ितो की सेवा करते रहे और अन्त मे 14 जनवरी, 1969 को अपना शरीर त्याग दिया।

कविया गिरवरदान

कविया गिरवरदान अपने समय के लोकप्रिय जन कवि थे। जनमानस पर इनके गीतों का बड़ा प्रभाव था। इनके गीतो की लोकप्रियता इस उक्ति से स्वतः ही प्रमाणित हो जाती है कि—परवरिया सारी प्रिथी, गिरवरिये रा गीत।

कविया गिरवरदान जोधपुर की जैतारण तहसील के बासणी गांव के निवासी थे।

गिरधर शर्मा 'नवरत्न'

राजस्थान के द्विवेदी युगीन कवियों में गिरधर शर्मा 'नवरत्न' का प्रमुख स्थान है। ये सदैव ही देश, जाति, भाषा और समाज को प्रगति के प्रशस्त राज-मार्ग पर अग्रसर करने का कार्य करते रहे।

गिरधर शर्मा 'नवरत्न' झालरापाटन के निवासी थे और इन्हें संस्कृत, हिन्दी, उर्दू, फारसी, प्राकृत, बंगला तथा अंग्रेजी का अच्छा ज्ञान था। द्विवेदी युगीन कवि होने के नाते इनके काव्य में भी समाज सुधार एवं उद्‌बोधन के स्वर मुखरित हुए हैं। सरस्वती,. सुधा एवं माधुरी जैसी तत्कालीन साहित्यिक पत्रिकाओं से जुड़े रहने के अलावा भी इनकी अनेक कृतियां प्रकाशित हुई हैं।

सुधीन्द्र

कोटा राज्य के खैरावाद गांव में सम्वत् 1972 को जन्मे कवि सुधीन्द्र का वास्तविक नाम ब्रह्मदत्त था। सुधीन्द्र के काव्य में एक ओर जहाँ राष्ट्रीय चेतना के स्वर मुखरित हुए हैं वहीं छायावादी अमूर्तता और आशा-निराशा के विविध रंगों की छटा भी देखने को मिलती है। अपने सृजन में वे गांधी और टैगोर से विशेष रूप से प्रभावित हुए हैं।

शंखनाद, मेरे गीत, जौहर, प्रलय-वीणा, अमृत-लेखा तथा प्रेयस काव्य-कृतियों के प्रकाशन के अलावा विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में भी इनकी रचनायें प्रकाशित हुई हैं।

रूप, रस और गंध के चितेरे कवि सुधीन्द्र का 14 जून, 1954 को आगरा में निधन हो गया।

रांगेय राघव

बहुमुखी प्रतिभा के धनी रांगेय राघव का जन्म 17 जनवरी, 1923 को आगरा में हुआ था। प्रारम्भ में ये भरतपुर के वैर ग्राम में रहे। यह गांव उनके पिता को जागीर में मिला था। इनका मूल नाम तिरूमल निम्वा-कमा राघव ताताचार्य था, किन्तु इन्होंने अपना समस्त लेखन रांगेय राघव के नाम से ही किया।

हिन्दी साहित्य की सभी विधाओं पर वे समान रूप से अधिकार रखते थे। यही कारण था कि उन्होने डेढ़ सौ से भी अधिक ग्रन्थों की रचना की। चाहे काव्य हो या कथा, इतिहास हो या समाज-शास्त्र, हरेक क्षेत्र में उन्होंने उत्कृष्ट रचनाएं कीं और अपनी लेखनी से निसृत अनेक कालजयी कृतियां हिन्दी साहित्य को देकर उसकी श्रीवृद्धि की।

काव्य के क्षेत्र में जहां मेधावी, अजेय खण्डहर, उत्तरायण, पांचाली, पूर्ण-कलश, राह के दीपक, महाविजय, पिघलते पत्थर जैसी कृतियों का प्रणयन किया वहीं कब तक पुकारूं, मुर्दो का टीला, आखिरी आवाज, पथ का पाप, बन्दूक और बीन, राई और पर्वत, पक्षी और आकाश, जैसी पचासों औपन्यासिक कृतियों की भी रचना की। रांगेय राघव निश्चय ही कवि, उपन्यासकार, निबन्धकार, आलोचक, अनुवादक सभी कुछ थे। लेखन के जो प्रतिमान रांगेय राघव ने स्थापित किये है, वे निश्चय ही श्लाघ्य है।

राजस्थान के ऐसे बहु-आयामी व्यक्तित्व वाले रांगेय राघव का रक्त-कैसर से 39 वर्ष की अल्पायु में ही निधन हो गया।

कन्हैयालाल सेठिया

कन्हैयालाल सेठिया राजस्थान के चूरू जिले में पड़ने वाले सुजानगढ़ कस्बे के निवासी है। सेठिया जी मूलतः चिन्तक है और दर्शन की गूढ़ बातों को भी सहज एवं सरल तरीके से अभिव्यक्त करने में निष्णात है।

इनकी प्रकाशित कृतियों में वन-फूल, मेरा युग, दीप किरण, अग्नि वीणा, प्रतिबिम्ब, प्रणाम, परमवीर शैतान सिंह, जादूगर, माओ, रक्त दो, चीन की ललकार, खुली खिड़कियां और चौडे रास्ते आदि उल्लेखनीय है।

इन्होंने अपनी कृतियो के माध्यम से सदैव ही युगीन जीवन-सदर्भो को चित्रित किया है। यही कारण है कि अग्नि-वीणा, मेरा युग और आज हिमालय बोला में चिन्तक कवि का राष्ट्र-बोध अभिव्यक्त हुआ है तो अन्य कृतियों मे उसने युग-जीवन को भास्वरता प्रदान की है। गत दिनों इनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व को लेकर राजस्थान साहित्य अकादमी ने मधुमती का एक विशेषांक भी निकाला है।

भंवरलाल स्वर्णकार 'प्रज्ञाचक्षु'

नेत्र-विहीन भंवरलाल स्वर्णकार बोलियां के निवासी थे। यद्यपि इनके भौतिक एवं पार्थिव नेत्र नही थे, किन्तु इनके प्रज्ञाचक्षु सदैव ही ज्योतित् रहते थे।

अपने इन्ही प्रज्ञा-चक्षुओं के बलबूते पर भंवरलाल स्वर्णकार ने बिजोलिया आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया और अपनी काव्य रचनाओं के माध्यम से जनता को मार्ग-दर्शन प्रदान किया। उनकी कई कविताओं में भविष्यवाणियाँ भी की गई है जो आज भी कसौटी पर खरी उतरती है।

प्रेमचन्द भील

प्रेमचन्द भील विजयसिंह पथिक के सहयोगी थे। अतः, इन्होंने भी पथिक के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर जन-जागरण के पुनीत कार्य में हिस्सा लिया और विशेष रूप से भीलो में जागृति का शंखनाद किया। प्रेमचन्द अपने समय के प्रसिद्ध लोक-गायक थे।

भैरोंलाल कालाबादल

भैरोंलाल कालाबादल भी विजयसिंह पथिक के अनुयायी थे। इन्होंने अपना कार्य-क्षेत्र मेवाड़ तथा हाड़ौती में रखा। अपनी ओजस्वी एवं क्रान्तिमंत चेतना से युक्त कविताओं और गीतों के माध्यम से इन्होंने आदिवासी भीलों को शोषण के तमाम बन्धन तोड़ कर अपने हितों की रक्षा के लिए उठ खड़े होने का संदेश दिया। जनमानस में क्रान्ति की चिनगारियाँ पैदा करने वाला इनका यह गीत 'काला बादल रे, अब तो बरसा दे जलती आग' बड़ा लोकप्रिय हुआ।

चौधरी घासीराम

चौधरी घासीराम का जन्म नवलगढ ठिकाने के बासड़ी गांव में संवत् 1960 की वैशाख शुक्ला तीज को हुआ था। इनके पिता चौधरी चेतराम एक तेजस्वी एवं प्रभावशाली व्यक्ति थे। क्षेत्र के लोगों पर उनका अच्छा प्रभाव था।

चौधरी चेतराम नवलगढ़ के जागीरदारों के शोषण और अन्याय का डट कर विरोध करते थे। नवलगढ़ के जागीरदार भी चौधरी परिवार को तबाह करने पर तुले हुए थे। फलस्वरूप चौधरी चेतराम के खेत एवं हवेली पर जागीरदार ने कब्जा कर लिया और उन्हे गांव से बाहर निकाल दिया।

ग्यारह वर्ष की उम्र में बालक घासीराम भी अपने पिता के साथ निर्वासित हो गया। घासीराम के पिता ने यह संकल्प लिया था कि भले ही जीवन-भर संघर्ष करना पड़े, परन्तु वे जागीरदारी प्रथा को समाप्त करके ही दम लेंगे। पिता की मृत्यु हो जाने के बाद यह बीड़ा घासीराम ने उठाया। सोलह वर्ष की आयु में घासीराम गाधीजी के सत्याग्रह आन्दोलन में कूद पड़े। आगे चलकर उन्होंने गाँव-गाँव घूम कर जन-जागरण का कार्य किया।

सन् 1931 में झुंझुनू मे जाट महासभा का अधिवेशन हुआ जिसमें जागीर-दारों के अत्याचारों के विरुद्ध जाटो को संगठित करने का प्रयास किया गया था। घासीराम भी इस आन्दोलन में जुट गये। चौधरी घासीराम अनेक बार जेल गये और कठोर यातनाएँ सहन की, परन्तु जीवन-भर अपने हक-हकूकों के लिए संघर्षशील रहे।

पंडित ताड़केश्वर शर्मा

पंडित ताड़केश्वर शर्मा का जन्म संवत् 1969 मे झुंझुनू जिले के पचेटी-वड़ी गाँव में हुआ था। इनके पिता पंडित लेखराम शर्मा अपने समय के जाने-माने उग्र क्रान्तिकारी व्यक्ति थे, अतः पंडित ताड़केश्वर शर्मा को भी क्रान्तिकारी चिन्तन विरासत में मिला।

प्रारम्भ मे इनकी शिक्षा इनके गांव में हुई किन्तु वाद मे इन्हे पढ़ने के लिए बनारस भेज दिया गया। इन्हे हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू और संस्कृत का अच्छा ज्ञान था। शेखावाटी आन्दोलन के अगुआ पंडित ताड़केश्वर शर्मा ने सन् 1929 में 'ग्राम समाचार' नामक हस्तलिखित समाचार-पत्र प्रकाशित किया और 1930 में नमक सत्याग्रह में शामिल होने के लिए अजमेर से जाने वाले पहले सत्याग्रही जत्थे में सम्मिलित होने के लिये खून से अपने हस्ताक्षर किये।

सन् 1932 के वाद शेखावाटी में जागीरदारों के विरुद्ध किसान आन्दोलन को संगठित किया। सन् 1934 मे आगरा जाकर 'गणेश' नाम के एक उग्र साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन किया। 'गणेश' के माध्यम से उन्होने जागीरदारों के अत्याचारों को सबके सामने लाने का प्रयास किया।

आन्दोलनात्मक प्रवृत्तियों के साथ-साथ इन्होने हरिजन शिक्षा, मद्य-निषेध, अस्पृश्यता निवारण जैसी रचनात्मक प्रवृत्तियो को भी बढ़ावा दिया। ताड़केश्वर शर्मा ने कई बार जेल की यात्राएँ की और कठोर कारावास की सजाएं भी भुगती। यहाँ तक कि उनकी सौ बीघा जमीन को भी जब्त कर लिया गया। ताड़केश्वर शर्मा आज भी शोषण विहीन समाज की स्थापना के लिए समर्पित भाव से कार्य कर रहे है।

नयनूराम शर्मा

पंडित नयनूराम शर्मा हाड़ौती क्षेत्र मे राजनीतिक चेतना के अग्रदूत और प्रखर जन-सेवक थे। वर्षो तक कोटा राज्य की पुलिस मे थानेदार रहे, किन्तु राजकीय सेवा के दौरान हाड़ौती क्षेत्र की ग्रामीण जनता की जो दर्दनाक तस्वीर आपने देखी उससे आपका दिल कांप उठा और एक दिन सरकारी नौकरी को तिलांजलि देकर सेवा का कठोर व्रत धारण कर लिया।

राजकीय सेवा से मुक्त होकर पंडित नयनूराम शर्मा विजयसिह पथिक के सम्पर्क में आये और उनके द्वारा स्थापित 'राजस्थान सेवा संघ' में अपने को समर्पित कर दिया। इन्होंने राजनीतिक जीवन की शुरूआत करते ही सवसे पहले कोटा राज्य में वेगार प्रथा का विरोध किया और उसके विरुद्ध सवको संगठित

कर आन्दोलन कर दिया। फलस्वरूप, कोटा के महाराज को नयनूराम की बात माननी पड़ी। उन्होंने 'हाड़ौती शिक्षा मण्डल' की स्थापना कर कोटा राज्य में वर्षों तक दर्जनों ग्रामीण पाठशालाओं का संचालन किया। हरिजन सेवा और समाज सुधार के भी कई कार्य किये।

हाड़ौती के प्रथम और एकछत्र इस नेता की 14 अक्टूबर, 1941 को रामगंज मंडी से अपने गाँव निमाणा जाते हुए रात्रि में अचानक हत्या कर दी गई।

हरिभाऊ उपाध्याय

राजस्थान में गांधी युग का सूत्रपात करने वाले हरिभाऊ उपाध्याय का जन्म तत्कालीन ग्वालियर राज्य के भौंरासा गाँव में 9 मार्च, 1893 में हुआ था।

इनकी आरम्भिक शिक्षा भौंरासा में हुई। बारह वर्ष की उम्र में हरिभाऊ उपाध्याय अपने चाचा के यहाँ, जो बरमंडल में तहसीलदार थे, चले गये। बरमंडल के बाद आगे की शिक्षा के लिए वाराणसी चले गये। वहाँ इन्होंने एक 'औदुम्बर' नामक मासिक पत्र का सम्पादन भी किया। सन् 1916 से 1919 तक महावीर प्रसाद द्विवेदी के साथ 'सरस्वती' का सम्पादन भी किया।

सन् 1920 से 1925 तक हरिभाऊ उपाध्याय गांधी जी के सान्निध्य में रहे। सन् 1926 में हरिभाऊ उपाध्याय राजस्थान आ गये और पूरे 45 वर्ष तक राजस्थान के होकर राजस्थान के राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक क्षेत्रों को प्रभावित कर उनका नेतृत्व करते रहे।

आजादी के बाद हरिभाऊ उपाध्याय राजस्थान मंत्रिमण्डल में करीब 10 वर्ष तक मंत्री रहे और इस दौरान उन्होंने शिक्षा, वित्त, योजना, समाज-कल्याण और खादी-ग्रामोद्योग जैसे विभागों को संभाला और लोगों को सदैव गांधी मार्ग पर अग्रसर करते रहे।

वे कुछ समय तक राजस्थान खादी बोर्ड और करीब पाँच वर्ष तक राजस्थान साहित्य अकादमी के अध्यक्ष भी रहे। राजस्थान विद्यापीठ-उदयपुर के भी वे कुलपति रहे। राजस्थान साहित्य अकादमी ने जहाँ उन्हें 'मनीषी' की उपाधि से विभूषित किया वहीं भारत सरकार ने भी उन्हें 'पद्म विभूषण' से अलंकृत किया।

25 अगस्त, 1972 को हरिभाऊ उपाध्याय का निधन हो गया।

हीरालाल शास्त्री

हीरालाल शास्त्री का जन्म 24 नवम्बर सन् 1899 में जयपुर के जोवनेर कस्बे में पुरोहित परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम श्रीनारायण जोशी और माता का नाम ममता जोशी था। उनके जन्म के केवल सोलह माह बाद ही उनकी माता का देहान्त हो गया।

सोलह वर्ष की उम्र में जोवनेर हाईस्कूल से मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की। बाद में जयपुर आकर सन् 1920 में साहित्य शास्त्री और 1921 में बी. ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। इसके बाद असहयोग आन्दोलन में भाग लेने के कारण आगे नहीं पढ़ सके।

शिक्षा समाप्त करने के बाद अपने पिता की इच्छानुसार करीब 6 वर्षों तक राजकीय सेवा की, किन्तु अर्जुनलाल सेठी के सम्पर्क में आने के बाद 7 सितम्बर 1927 को राजकीय सेवा से त्याग-पत्र देकर समाज-सेवा के कार्य में जुट गये। 12 मई 1929 को जयपुर राज्य की निवाई तहसील के वनस्थली ग्राम में शास्त्रीजी ने 'जीवन कुटीर' नामक संस्था की स्थापना की और वस्त्र स्वावलम्बन की दिशा में महत्त्वपूर्ण कार्य किया।

सन् 1931 में जयपुर में भी प्रजामण्डल के काम की शुरूआत हुई और 1936 में प्रजामंडल के प्रधान बन गये। उसके बाद तो सन् 1944 तक आप प्रजामण्डल से किसी न किसी रूप में जुड़े रहे।

आगे चलकर शास्त्रीजी जयनारायण व्यास के साथ 'अखिल भारत देशी राज्य लोक परिषद्' के प्रधानमंत्री बने और बाद में जब जयपुर राज्य का पूरा लोकप्रिय मंत्रिमण्डल बनाया गया तो उस समय शास्त्रीजी को मुख्यमंत्री पद का दायित्व भी सौंपा गया। हीरालाल शास्त्री विशाल राजस्थान के प्रथम मुख्यमंत्री भी रहे।

सागरमल गोपा

अमर शहीद सागरमल गोपा का जन्म संवत् 1957 के कार्तिक शुक्ला एकादशी को जैसलमेर के सम्पन्न ब्राह्मण परिवार में हुआ था। इनके पिता अखेराज राजकीय सेवा में एक अच्छे पद पर कार्यरत् थे।

सागरमल गोपा यों तो एक साधारण कार्यकर्ता थे किन्तु अपने उग्र स्वभाव के कारण उन्होंने जैसलमेर के तत्कालीन महारावल जवाहरसिंह के अत्याचारों का डटकर विरोध किया। इनके राजनीतिक कार्यों को देखकर जैसलमेर में ही नहीं अपितु हैदराबाद में भी इनके प्रवेश पर प्रतिबन्ध लगा दिया

गया। इन्होंने उन प्रतिबन्धों की तनिक भी परवाह नही की और लगातार 'अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद्' के अधिवेशनों में भाग लेते रहे। सन् 1921 के असहयोग आन्दोलन में भी सागरमल गोपा ने सक्रिय रूप से भाग लिया।

सन् 1939 में सागर मल गोपा के पिता का देहान्त हो गया। जैसलमेर जाना उनके लिए खतरे से खाली नहीं था फिर भी वे जैसलमेर गये। 25 मई सन् 1941 को सागरमल गोपा को गिरफ्तार कर लिया गया और जेल में बन्द कर उन्हें कठोर यातनाएं दी गई। इन्हीं यातनाओं के सिलसिले में उन्हें 3 अप्रेल, 1946 को मिट्टी का तेल डाल कर जला दिया गया और इस प्रकार अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाते हुए सागरमल गोपा 4 अप्रेल, 1946 को शहीद हो गये।

जयनारायण व्यास

राजस्थान के लोकप्रिय नेता जयनारायण व्यास का जन्म 18 फरवरी, 1899 को जोधपुर में हुआ था। राजस्थान के राजनीतिक क्षितिज पर जयनारायण व्यास का उदय एक उग्र और तेजस्वी पत्रकार के रूप में हुआ और सन् 1927 में वे 'तरुण राजस्थान' के प्रधान संपादक बन गये।

जयनाराण व्यास ही राजस्थान में पहले व्यक्ति थे जिन्होने सबसे पहले यह घोषणा की कि राजतंत्रों और सामन्तों का समय समाप्त हो चुका है। या तो वे लोकहित में अपनी सत्ता जनता के निर्वाचित प्रतिनिधियों के हाथों में सौप दें अन्यथा रूस में 'जार' के साथ घटी घटनाओं की पुनरावृत्ति राजस्थान की हर रियासत में होगी। जयनारायण व्यास ने ही सबसे पहले जागीरी प्रथा की समाप्ति और रियासतों में उत्तरदायी शासन की स्थापना का नारा लगाया।

'तरुण राजस्थान' के माध्यम से उन्होंने एक निर्भीक पत्रकारिता को जन्म दिया। सन् 1936 में बम्बई से हिन्दी में 'अखण्ड भारत' नामक दैनिक पत्र निकाला तो राजस्थानी भाषा में 'आगीवाण' पाक्षिक का प्रकाशन किया। अपने अंतिम समय तक वे 'पीप' (Peep) नाम के अंग्रेजी साप्ताहिक के द्वारा अपने स्वतंत्र चिन्तन और परिपक्व विचारो से मार्ग-दर्शन प्रदान करते रहे।

जयनारायण व्यास अनेक बार जेल गये और नमक सत्याग्रह में भी गिरफ्तार किये गये। सन् 1933 में जेल से रिहा होने के बाद 'अखिल भारतीय देशी राज्य प्रजा परिषद्' से पुनः जुड़ गये और 1934 में ब्यावर में 'राजपूताना प्रांतीय देशी राज्य प्रजा परिषद्' तथा 1935 में दिल्ली में देशी राज्य प्रजा परिषद्

का एक विशेष अधिवेशन बुलाया और रियासती कार्यकर्त्ताओं को संगठित होने का संदेश दिया।

'अखण्ड भारत' के प्रकाशन के दिनों ही जयनारायण व्यास 'अखिल भारतीय देशी राज्य प्रजा परिषद्' के महामंत्री चुन लिए गये और करीब 14 वर्ष तक इस पद पर कार्य करते हुए रियासती आन्दोलनों को गतिशील बनाये रखा।

सन् 1948 में जोधपुर में लोकप्रिय मंत्रिमण्डल का गठन हुआ तो व्यासजी राज्य के प्रधान मंत्री बनाये गये। 1949 से 1952 तक राजपूताना कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष रहे और 1956 से 57 तक प्रांतीय कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष तथा 1951 से 1954 तक राजस्थान के मुख्यमंत्री रहे।

अपने जीवन के अंतिम क्षणों तक वे समाज में चारों ओर फैले निहित स्वार्थों से जूझते रहे और 14 मार्च, 1963 को परलोकगमन कर गये।

गणेशलाल व्यास 'उस्ताद'

गणेशलाल व्यास 'उस्ताद' सही अर्थों में एक जनकवि थे। वे सामन्तवाद एवं पूंजीवाद के घोर विरोधी थे। जीवन भर उन्होंने यश और धन के लिए कभी समझौता नहीं किया।

गणेशलाल व्यास जनता में इतने लोकप्रिय थे कि वे 'उस्ताद' के नाम से जाने जाते थे। हिन्दुस्तान में जब आजादी की लड़ाई लड़ी जा रही थी और जोधपुर में सामन्तशाही के विरुद्ध आन्दोलन चल रहा था, उस समय 'उस्ताद' का कवि रूप उभर कर सामने आया।

□

प्रमुख चारणी कविताओं का भावार्थ

1. गीत चेतावणी रो (पृष्ठ संख्या 1)

चुनौती भरा यह गीत उस परिवेश की ओर संकेत करता है जब अधिकांश राजा-महाराजा अपने शौर्यपूर्ण जीवन से विमुख होकर अंग्रेजों की दासता स्वीकार करने लगे थे। देश में अंग्रेजों की बढ़ती और सामन्तों की क्षीण होती शक्ति को देखकर कवि मन बड़ा क्षुब्ध हुआ और अपनी इसी मनःस्थिति में उसने सुप्त चेतना को जाग्रत करने का प्रयास किया है :

अंग्रेज देश पर चढ़ आया है और उसने शरीर की सारी ऊर्जा को खींच लिया है। जिन स्वामियों ने मरकर भी अपनी धरती को दुश्मन के हवाले नहीं किया आज उन्हीं स्वामियों के खड़े-खड़े उनके हाथ से धरती निकल गई। दुश्मन की फौजों को देखकर भी जिन्होंने अपनी फौज तैयार नहीं की वे आज दुश्मन को छिन्न-भिन्न नहीं कर सके। भू-पतियों की मौजूदगी में ही चुड़लै का सुहाग धारण किये पृथ्वी दूसरे के अधिकार में चली गई।

धरती के छिन जाने से न तो छत्रपतियों ने लज्जा का अनुभव किया और न गढ़पतियों ने इसे अपना अपयश समझा। उन्होंने तनिक भी अवरोध नहीं किया और देखते-देखते जमीन उनके हाथों से निकल गई। दक्षिण वालों ने आठ महिने तक डटकर मुकाबला किया फिर भी यदि उनकी भूमि चली गई तो यह उनके वश की बात नहीं थी। मजबूर होकर उन्होंने दूसरी नौकरी करली पर अपनी धरती को अपने हाथों नहीं जाने दिया।

भरतपुर वालों ने जमकर मुकाबला किया। उनकी कीर्ति आकाश में गूंजती है। पहले साहब का मस्तक जमीन पर पड़ा पर उन्होंने खड़े रहते अपनी भूमि पर अधिकार नहीं होने दिया। मरने के दो ही अवसर आते हैं, जमीन का जाना और अबला की चीत्कार सुनना। कुछ तो अपनी रजपूती आन-बान बनाये रखो, इसके लिए क्या हिन्दू और क्या मुसलमान ?

जोधपुर, उदयपुर और जयपुर के भू-पतियों ! अब तुम्हारे किये कुछ नहीं होगा, इस सत्य को मैंने प्रकट कर दिया है।

2. गीत भरतपुर रो (पृष्ठ संख्या 2 से 4)

यह गीत उस पृष्ठ भूमि पर आधारित है जब जनरल लेक के नेतृत्व में अंग्रेज सेनाओं ने भरतपुर के किले पर आक्रमण किया था और उन्हें अपने मुंह की खानी पड़ी थी। इस गीत में उसी युद्ध का वर्णन है :

अंग्रेज, जिनकी जन्म-भूमि विलायत है, कलकत्ता और कानपुर आ गये हैं। वम्वई से मद्रास तक फैल गये हैं। इनका इल्म इतना तेज है कि सारी पृथ्वी पर अपना अधिकार करना चाहते हैं और इसी नियत से ये भरतपुर आ धमके हैं।

मुगल वंश के सूर्य को अस्त कर दिया है, टीपू जैसे योद्धा को परास्त कर दिया है। उन्हीं अंग्रेजों की सेना ने जनरल और कर्नलों के साथ जमदूतों की तरह जाट के किले को घेर लिया है।

उनके साथ सैनिकों की कई रिजमैन्ट और पलटर्णे हैं और उनके साथ वंगाल, तैलंग तथा उड़ीसा के सिपाही आकर मिल गये हैं। भयंकर लड़ाई में भी हार न खाने वाली इस भूमि पर भारत से दूर रहने वाले इन दुरंगियों ने किले को घेर लिया है।

तव भरतपुर के वीरों ने छक कर शराव पी और निर्भीक होकर टोपधारी फिरंगियों की टोपी धूल में मिलाने के लिए उत्साह से वार किया।

इस घमासान युद्ध से प्रलय का सा दृश्य उपस्थित हो गया है और कच्छप की पीठ तक चरमराने लगी है। पृथ्वी कांपने लगी है और तोपों की गर्जना और गोलों के भीषण प्रहारों की गड़गड़ाहट से आकाश गूंज उठा है।

तोप, वारूद और गोलों के धुएं से प्रदीप्त सूर्य भी अव चन्द्रमा के समान दिखाई देने लगा है। धुएं ने अंधकार का रूप ले लिया है और आकाश में दूर तक फैल गया है। युद्ध के वाजों की आवाज पर योद्धा लड़ रहे हैं और इन शूरवीरों को देखकर स्वर्ग की अप्सराएं आनंदित हो रही हैं।

गोरे सिपाही किले के कंगूरों पर चढ़ने की तरकीव सोच रहे हैं। फौजों के झंडे फड़फड़ा रहे हैं और जोगनियां ताली दे-दे कर फैल रही हैं। पिस्तौल और वन्दूक की आवाज सुनकर शूरवीरों में पहले से अधिक जोश छा जाता है रणभूमि में कालिका किलक रही है।

घोड़ों की खुरताल, तूर, तासा और त्रवंट आदि की आवाज, फरफराते झण्डे और मतवाले हाथियों के वीच जाटों का अडिग राजा हाथ में तलवार लिए किले के दरवाजे से वाहर निकला।

तलवारों के टकराने से आग की चिनगारियां निकल रही हैं। सांपों की तरह फुफकारते लड़ते योद्धाओं से शेष नाग का फन तक झुक गया है। इन भारतीय वीरों के प्राणघाती वारों से बचने के लिए अंग्रेज कहा तक अपनी व्यूह-रचना करते ?

वीरों के शरीर मे जोश समा नही पा रहा है। वे उन्मत्त होकर लड़ रहे है। किले के कंगूरों पर कुल्हाड़े बज रहे है और फिरंगियों ने चारों तरफ से किले का विध्वंस करना शुरू कर दिया है, पर जिस किले का संरक्षण गिरधर के हाथ में है उस पर अंग्रेजों का क्या जोर चले ?

किले की रक्षा के लिए सूरजमल ने आग उगलती तोपो की ओर ही कदम बढ़ाये, प्राण-रक्षा के लिए दीवारों का सहारा नहीं लिया। उस योद्धा ने अपना ऐसा रण-कौशल दिखाया कि कपूर के समान रंग वाले अंग्रेज कपूर की तरह गायब होने लगे।

तीरों की तो मानो वर्षा होने लगी है। इस भीषण प्रहार से अंग्रेजों की सेना तितर-बितर हो गयी और किले की खाई खून से भर गई और लाशों से पट गई।

युद्ध का सारा सामान छोड़कर कलकत्ता का वीर (अंग्रेज) भाग छूटा। वज्र के समान दृढ़ भरतपुर के राजा ने ऐसा अवरोध किया कि फिरंगियों का सेनापति जनरल लेक अपना टोप पटक कर युद्ध-स्थल से भाग उठा।

चारों ओर का जंगल असख्य लाशो से भर गया। भरतपुर के वीरों की यह कहानी सर्वत्र फैल गई। इस युद्ध मे हजारों अग्रेज अधिकारी मारे गये और उनकी हजारों कुर्सियां खाली हो गई।

आज तक जिन अनगिनत युद्धों का जो वर्णन हुआ है, इस युद्ध के सामने वे सब फीके पड़ गये है। चीन और यूनान के सारे कवायदी इल्म और अंग्रेजों की सारी ताकत इस युद्ध के साथ समाप्त हो गई है।

यह रणजीतसिह का ही रण-कौशल था जिसके कारण उसकी और उसके देश की मर्यादा सुमेरू पर्वत के समान अचल बनी रही। हमेशा जीत का दंभ भरने वाले अंग्रेजों की सेना का प्रण टूट गया। उन्हे एक ऐसा पुख्ता सबक मिला जो आसानी से नही भुलाया जा सकता। ये भविष्य में फिर कभी भरतपुर आने का नाम नहीं लेंगे।

3. आउवा का/गदर-सम्बन्धी छप्पय (पृ० 5)

गदर सम्बन्धी इन तीन छप्पयों मे आउवा पर अग्रेजो की चढ़ाई का वर्णन है :

संवत् 1914 के आते ही देश भर में चेतना की लहर फैल गई। सब लोग अंग्रेजों को देश से बाहर निकालने की सोचने लगे। लोगों की सोई हुई शक्ति जाग उठी। देखते-देखते देश भर में युद्ध की आग भड़क उठी। लोग अंग्रेजों का खजाना लूटने लगे और ऐरनपुर को भी लूट लिया। इस प्रकार विद्रोही फौजें लूट मचाती दिल्ली की ओर बढ़ीं। आउवा ठाकुर की मदद लेने के लिए उन सेनाओं ने वहीं पर पड़ाव डाला।

काल के समान योद्धाओं ने अपनी कमर कस ली। खुशालसिंह भी युद्ध के लिए कमर कस कर तैयार हो गया। बिशनसिंह और शिवसिंह जैसे बहादुर योद्धा, जिनके रण कौशल को देखने के लिए जोगनियाँ लालायित रहती हैं, भी उसके साथ आ मिले। इस सिन्धु-राग को सुनकर जनता हक्की-बक्की रह गई और पृथ्वी कांपने लगी। शत्रुओं के टुकड़े-टुकड़े कर देने वाली तलवारें खून पीने को व्यग्र हो उठीं। तलवारों के भीषण प्रहारों के आतंक से उन्होंने शत्रुओं को घेर लिया। उधर लोह-स्तम्भ के समान अंग्रेजों की फौज ने भी निश्चय कर लिया कि सवेरा होने तक किले के फाटक तोड़ कर भीतर घुस जायेंगे।

इस विषम स्थिति को देखकर चांपावत खुशालसिंह ने अपने मित्र तथा प्रधानों से सलाह की और जोधपुर के राजा को कहलाया कि आप बड़े हैं, यदि हमसे कोई भूल हो गई हो तो उसे क्षमा कर दें और इस संकट की घड़ी में शत्रु की मदद न करें। अन्त में, अपने साथियों और मन्त्रियों की सलाह से अन्तिम समय तक युद्ध करने का निर्णय लिया गया। होनहार तो होकर रहता है। अतः उसे कब टाला जा सकता है। खुशालसिंह अपनी शक्ति पर भरोसा करके सबके साथ युद्ध में कूद पड़ा। उस निडर आउवा-नाथ के मन में हिन्दुस्तान को आजाद करवाने की एक उमंग थी।

4. गीत आउवा रो (पृष्ठ 6)

इस गीत में आउवा अधिपति खुशालसिंह के शौर्य का वर्णन किया है :

विकट योद्धा और शस्त्रों से भीषण प्रहार करने वाला कुंवारी सेना का दूल्हा खुशालसिंह जोधपुर के राजा से भी टेढ़ा-टेढ़ा ही चलता है। हिन्दुओं को खटकने वाला अंग्रेजों का एजेन्ट जब आउवा आया तो उसने उसका खात्मा ही कर दिया।

तोपों, बन्दूकों और शस्त्रों के बल पर वह दुश्मनों के सामने कदम अड़ा कर खड़ा हो गया। तब चण्डी भी अपने प्रिय शिव का बखान करने लगी। अंग्रेजों का संहार करने के लिए खुशालसिंह अपने हृदय को वज्र के समान कठोर करके हाथ में तलवार लेकर आगे बढ़ा।

आक्रांताओं को किला सौंप कर बाहर निकलना और शरीर से जीव का बाहर निकलना एक ही बात है। तुम तो उसी वक्त मर गये थे जब तुमने अपने देश को बचाने की बजाय अपने प्राणों को बचाने की चिन्ता की।

कायर व्यक्ति को प्रताड़ित करते हुए उसकी पत्नी कहती है कि तुम्हारी यह संचय-वृत्ति व्यर्थ है। मौत से तुम कभी नहीं बच सकते। कीड़ी बड़े परिश्रम से एक-एक कण जुटाकर संचय करती है और तीतर उसे एक ही झपट्टे में खा जाता है।

आंधी और तूफान से उजड़ी झोंपड़ियो पर थोड़ी-सी घास डालकर जो व्यक्ति देश को बचाने की चिन्ता में है उनकी इन टूटी-बिखरी झोंपड़ियों पर राजाओं के गढ़-कंगूरे और उनके राजमहल सब एक साथ न्यौछावर है।

महलों को लूटने वाले डाकुओं को झोंपड़ी बिल्कुल भी नही सुहाती, क्योंकि झोंपड़ियों को लूटने में उन्हे हाथ तो कुछ आता नही, उल्टे प्राण और गंवाने पड़ते है।

6. चेतावणी रा चूंगटिया (पृष्ठ 8 से 9)

ये दोहे उस समय लिखे गये थे जब मेवाड़ के महाराणा फतेहसिंह सन् 1903 में दिल्ली मे आयोजित लार्ड कर्जन के दरबार में भाग लेने जा रहे थे। इन दोहों के माध्यम से मेवाड़ की गौरवशाली परम्पराओं का बखान कर राणा के सोये हुये स्वाभिमान को जाग्रत किया गया है। और, सचमुच मे राणा ने इन दोहो को पढ़कर दिल्ली जाने का विचार त्याग दिया।

मेवाड़ के महाराणा धर्म की रक्षा के लिए पहाड़ो पर नंगे पांव भटकते रहे, धरती को त्याग दिया पर धर्म का मार्ग नही छोड़ा। इसी कारण हिन्दुस्तान के हृदय मे महाराणा और मेवाड़ दोनों ही शब्द बसे हुए है।

मेवाड़ की इस भूमि पर हमेशा ही भयंकर युद्ध हुए पर मेवाड़ के महाराणा तनिक भी विचलित नही हुए और निडर बने रहे। परन्तु, आज अंग्रेजों के इस फरमान मात्र को देखते ही तुम्हारे हृदय में यह हलचल कैसे उत्पन्न हो गई ?

युद्ध भूमि में मेवाड के महाराणाओ के हाथी-घोडों से जो धूल उड़ती थी वह सारे भू-मण्डल में नही समा पाती थी और आज उसी मेवाड़ का महाराणा अपने को सौ गज के घेरे मे समेटने की कोशिश करेगा।

और राजाओ के लिए तो यह बात आसान हो सकती है कि वे शाही फौज की रखवाली करते हुए आगे-आगे चलें, किन्तु जिनके पूर्वजों ने सदा ही अपनी

फौज के आगे शाही फौज को हांका हो, उनके लिए यह बात कैसे आसान हो गई ? देश के अन्य राजा तो दिल्ली में जाकर अंग्रेज बहादुर को झुक-झुक कर नजराना पेश करेंगे। उनके लिए यह मुश्किल भी नहीं है, किन्तु मेवाड़ के महाराणा फतेहसिंह ! तुम्हारा हाथ नजराने के लिए किस तरह आगे बढ़ेगा ? क्या मेवाड़ और उसके महाराणा का पानी उतर गया है ? सभी उसके आगे आदर से शीश झुकाते हैं और उसके दिये हुए दान-धर्म को आदर से धारण करते है, उसी मेवाड़ का महाराणा एक जरा-सा खिताब लेने के लिए किस तरह ललचा गया ?

मेवाड़ के जिस सिंहासन के सामने बड़े-बड़े बादशाहों का दर्प खंडित हो गया आज उसी मेवाड़ का महाराणा फिरंगियों के आगे अपना सिर झुकायेगा ! मेवाड़ के महाराणा फतेहसिंह ! यह तुम्हें किस प्रकार शोभा देगा ?

हिन्दुस्तान ने मेवाड़ को अपना सूर्य माना है। किन्तु, मेवाड़ का वही सूर्य जब अंग्रेजों के खिताब द्वारा 'तारे' के रूप में शेष रह जायेगा तो हिन्दुस्तान के निवासी सूर्य को तारे में परिणत होते देख निःसांसें ही भरेंगे।

मेवाड़ का महाराणा जब अपना शीश झुकाकर दिल्ली के फिरंगी बादशाह की बंदगी करेगा तो दिल्ली का दम्भी गढ़ मन ही मन मुस्करा उठेगा।

राणा प्रताप ने मरते समय अन्तिम बार जो अभिलाषा प्रकट की थी उसको सभी ने आज तक निभाया है। इन सब बातों की साक्षी तुम्हारे सिर की यह जटा है। अर्थात्, तुम अपने सिर की जटा को देखकर मेवाड़ के सम्मान को तो पहचानो।

वचनो को निभाना बहुत कठिन है। फिर भी कुछ मनुष्य हिम्मत न होने पर भी अपने वचनों को गांठ बांध कर उनका पालन करने की चेष्टा करते है। प्रताप और सांगा तो अतुलनीय वीर थे और उन्होने सदा ही अपने वचनो को निभाया। उसी वंशज के होकर आज तुम्हें यह बात याद दिलाने की आवश्यकता कैसे पड़ गई।

हम सब को तो अब भी यही आशा है कि आप मेवाड़ के महाराणा है और उसकी कुल परम्पराओ की रक्षा करेंगे। एकलिंग प्रभु सदा आपके साथ है जो हमेशा सुख-सम्मान दिलाते रहेंगे।

हे सिसोदिया वंश के राणा फतेहसिंह ! अपने देश की मान-मर्यादा और उसके स्वाभिमान को अपने बलबूते पर कायम रखो। असहाय की तरह फिरंगी सरकार की गोद में रखे मीठे फलों को ताकने से कुछ भी परिणाम नहीं मिलेगा

7. सुतंतरता रा फुटकर दोहा (पृष्ठ 10)

इन दोहों के माध्यम से शूरवीरों के वीरत्व को जगाने का प्रयास किया गया है ताकि वे अपने कर्त्तव्य को पहचाने और देश की रक्षा—मातृभूमि की सुरक्षा के लिए सन्नद्ध हो जायें।

राजा और ठाकुर शराब के प्यालों की मनुहार में लगे हुये हैं और उनका देश गुलाम बन गया। ऐसे लोगों को जिनकी मातृभूमि पराधीन हो गई हो उन्हें बार-बार धिक्कार है !

शराब में डूबकर इन्होंने अपने शरीर की सुध-बुध तक खो दी है। ये पराधीन हो गये, बस यही बात हृदय में शूल-सी चुभ रही है। दुश्मन देश को लूटकर उसकी सारी सम्पत्ति बाहर ले जा रहा है और उसका कोई प्रतिरोध करने वाला नहीं रहा। हे राजन ! अब तुम हाथों में चूड़ियां पहन लो और मरदाने वेश के स्थान पर जनाना वेश धारण करलो।

जनाना वेश धारण करके अब तुम महलों में जाकर छुप जाओ। अन्यायी फिरंगी अब दिन-प्रतिदिन अपनी धाक जमाता जा रहा है।

या तो तुम जहर खाकर मर जाओ या शर्म के मारे तालाब में डूब मरो और यह भी नहीं हो तो गले में घाघरा डालकर पुरुष कहलाने का अधिकार त्याग दो।

कहाँ चली गई तुम्हारी वह वीरता ? कहाँ लुप्त हो गई तुम्हारी वह राजपूती शान ? आज तुम अपने स्वाभिमान को खोकर टुकड़ों के मोहताज हो गये हो। तुमने राजपूती शान को खो दिया है। सच्चाई के मार्ग से पथभ्रष्ट हो गये हो। तुम्हारी प्रतिष्ठा मिट्टी में मिल गई है और तुम्हारी मति भी मारी गई है। अब तुम केसरिया बाना पहन कर कमर में तलवार कस लो। हाथों में बरछी और कटार ले लो और युद्ध के लिए घोड़ों पर सवार हो जाओ।

युद्ध में तुम पीछे मुड़कर घर की ओर मत झांकना और न ही पीछे की ओर कदम हटाना। भले ही तुम कट कर रेत में मिल जाना, पर हार कर वापिस मत लौटना। कायर पति का सुहाग पत्नी को बड़ा कष्टदायी होता है। इससे अच्छा, यदि वह शूरवीर की पत्नी है, तो उसे वैधव्य ही सुखदायी प्रतीत होता है।

कहो तो मैं भी युद्ध में तुम्हारे साथ चलूँ और दुश्मन को अपने दो-दो हाथ दिखाऊँ ? वह भी देख लेगा कि हिन्दुस्तान की नारियाँ अबला नहीं हैं अपितु रणचण्डी हैं।

□

प्रासंगिक टिप्पणियां

चेतावणी रा चूंगटिया

फरवरी, सन् 1903 में भारत के तत्कालीन वायसराय लार्ड कर्जन ने भारतीय नरेशों का एक बहुत बड़ा दरबार दिल्ली बुलाया। यह समय ऐसा था जबकि भारत के सभी शासक अंग्रेजों के एकछत्र शासन को स्वीकार कर चुके थे। पर ऐसी परिस्थिति में भी विदेशी सत्ता के विरुद्ध द्वेष और क्षोभ की भावना रखने वाले लोगों की कमी नहीं थी। 1903 के सम्मेलन में शामिल होने की स्वीकृति राजस्थान के सभी राजाओं ने दे दी थी, जिसके फलस्वरूप उदयपुर के महाराणा फतहसिंह जी भी दिल्ली दरबार के लिए रवाना होने लगे। ऐसे अवसर पर कुछ लोगों को यह बात बुरी तरह से अखरी और अंग्रेजो की मातहती, इस अपमानजनक तरीके से हाजिर होने की प्रवृत्ति का उन्होंने विरोध करना उचित समझा। कुछ सरदारों ने शामिल होकर बारहठ केसरीसिंह जी से इस बात का हल निकालने का आग्रह किया। जब महाराणा की स्पेशल ट्रेन रवाना होने ही वाली थी तब उन्होंने कुछ दोहे निर्मित कर महाराणा के पास पहुंचाये। उन दोहों का उन पर इतना प्रभाव पड़ा कि ठेठ दिल्ली जाकर भी वे कर्जन के दरबार में शामिल नहीं हुए और वापिस लौट आए। केवल औपचारिकता के नाते अपने दीवान को वहां भेज दिया।

रतन राणो

रतनराणा उमरकोट का सोढ़ा था। वह अपने समय के काफी प्रभावशाली लोगों में गिना जाता था। कहा जाता है कि उमरकोट में जब पहले-पहल जमीन की पैमाइश के लिए कोई अंग्रेजी अफसर आया तो रतनराणे ने उसे मना किया और उसके न मानने पर उसका सिर काट डाला. जिससे अंग्रेज उसके पीछे पड़ गये। वह कई दिन अरावली की पहाड़ियों में घूमता रहा। आउवा के ठाकुर कुशालसिंह जब आउवा छोड़ कर बाहर निकले तो पहाड़ों में उनकी रतनराणे से भी मुलाकात हुई थी और दोनों काफी अरसे तक साथ रहे थे। अन्त में अजमेर स्थित पॉलिटिकल एजेन्ट ने इसे धोखे से पकड़वा कर फांसी दे दी।

नानकजी भील

नानकजी भील बेगूं और बरड आन्दोलन के प्रमुख नेता थे। सन् 1921 में आन्दोलन का संचालन करते हुए वे बूंदी पुलिस की गोलियो से शहीद हुए। देवगढ़ के पास उनका दाह-संस्कार किया गया था। कहते है कि कवि ने यह गीत इसी स्थल पर लिखा था।

नीमाज और चंडावल

सन् 1942 में भूतपूर्व जोधपुर रियासत के नीमाज और चडावल नामक ठिकानों में ऐसी कई घटनाएं हुयीं जब मारवाड़ लोक परिषद् के कार्यकर्त्ताओ और हुकूमत के बीच संघर्ष हुआ। नीमाज और चंडावल की घटनाएं मूलभूत मानव अधिकारों का हनन करने वाली नीमाज और चंडावल ठिकानो के सामन्तों ने परिषद् के कार्यकर्त्ताओ पर लाठी और भालों से प्रहार कराया। मारवाड़ लोक परिषद् ने इन जघन्य कृत्यो की भर्त्सना की और प्रस्ताव पास किया कि लोक परिषद् अपना संघर्ष जारी रखेगा। लोक परिषद् का संविधान स्थगित कर दिया गया और जय नारायण व्यास को पूरे अधिकार देकर डिक्टेटर नियुक्त किया गया कि वे सरकार के दमन के खिलाफ संघर्ष का संचालन करें।

सर डोनाल्ड फील्ड

सर डोनाल्ड फील्ड, जिन दिनो लोक परिषद् का संघर्ष नागरिक अधिकारों की प्राप्ति के लिए चल रहा था, जोधपुर में प्रधानमन्त्री थे। डोनाल्ड फील्ड के समय जोधपुर राज्य सेवा में बाहर के व्यक्तियो की काफी भर्ती हुई, जिसका विरोध किया गया। डोनाल्ड फील्ड के कार्य-काल में नौकरशाही में किस प्रकार आम जनता का शोषण किया, उसका चित्रण तत्कालीन गीतो में पाया जाता है। डोनाल्ड फील्ड के कार्य-काल में बाल मुकुन्द बिस्सा की जेल मे पिटाई की गयी, जिससे वे बीमार पड़ गये और जेल मे इनकी मृत्यु हो गयी।

सर बीचम

जयपुर राज्य मे जिन दिनों प्रजा मण्डल के कार्यकर्त्ताओं का सत्याग्रह चल रहा था, सर बीचम जयपुर के प्रधानमन्त्री थे। सर बीचम ने ही जमनालाल बजाज पर जयपुर राज्य में प्रवेश की पाबन्दी लगायी थी। जयपुर के अनेक ढूंढाड़ी गीतों में सर बीचम के जन-विरोधी कृत्यो की भर्त्सना की गयी है।

नीमूंचाणा

भूतपूर्व अलवर राज्य में नीमूंचाणा नामक गांव में 15 मई, 1925 को एक दुर्घटना हुई। नीमूंचाणा के किसानों द्वारा करों और लाग-बाग तथा बेगार का विरोध करने पर राज्य के अधिकारियों द्वारा इन पर गोली चलायी गयी, जिसमें काफी जन-धन की क्षति हुई। नीमूंचाणा काण्ड की तुलना जलियांवाला बाग से की जाती है। गांधीजी ने इस काण्ड में होने वाले अत्याचारों की कहानी सुन कर कहा था कि यह दोहरी डायरशाही थी। कहा जाता है कि नीमूंचाणा काण्ड में लगभग 500 आदमियों और जानवरों की जानें गयी थीं।

बिजौलिया

भारतीय इतिहास के उस अग्नियुग में जब देश के कोटि-कोटि नर-नारी ब्रिटिश साम्राज्यवाद के शिकंजे से मुक्त होने के लिए छटपटा रहे थे, राजस्थान का जन-मानस अंग्रेजों के आतंक, रियासती सामन्तों के कुशासन और अत्याचार तथा जागीरदारों के शोषण और उत्पीड़न के तिहरे दुष्चक्र में फंसा मुक्ति के लिए विकल था।

बिजौलिया के किसान आन्दोलन ने मुक्ति की इसी अकुलाहट को पहली बार व्यक्त कर चेतना की ऐसी चिंगारी सुलगाई जिसने अपने आसपास ही नहीं समूचे देश में एक हलचल पैदा करदी। किसान-आन्दोलनों के जरिये राजनीतिक जागरण का जो सिलसिला राजस्थान में शुरू हुआ, उस श्रृंखला का सूत्रपात बिजौलिया के कृषक आन्दोलन से हुआ।

सामान्य जन के संग्राम और दमन के विरुद्ध यह पहला शंखनाद था, जिसके स्वर राजस्थान के सुदूर अंचलों से लेकर देश के कोने-कोने में सुनाई देने लगे थे।

मेवाड़ के बिजौलिया ठिकाने के किसानों का यह आन्दोलन भारतवर्ष में अपने ढंग का पहला किसान आन्दोलन था जिसने समस्त देश का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया था। वास्तव में यह आन्दोलन बिजौलिया के राव के निरंकुश शोषण तथा अत्याचार के विरुद्ध ही नहीं था वरन् वह ब्रिटिश शासन, देशी राज्यों (मेवाड़ राज्य) और जागीरदारों की सम्मिलित शक्ति के लिए भारत में पहली गम्भीर चुनौती थी। यही कारण था कि जब बिजौलिया के किसानों ने वहां के राव को लगान देना बन्द कर दिया और किसान सत्याग्रह हुआ तो उसने

केवल मेवाड़ के महाराणा तथा अन्य देशी नरेश ही नही, तत्कालीन राजपूताने के ए०जी०जी० से लेकर भारत के वायसराय और गवर्नर जनरल तक चौकन्ने हो उठे थे। ब्रिटिश सरकार ने जो देशी राज्यो मे अपनी प्रभुसत्ता के अधीन सामंत वर्ग को संरक्षण देकर अपनी व्यूह रचना रची थी, ब्रिटिशवाद के गढ़ पर यह पहला आक्रमण था। इसका स्वरूप इतना प्रबल और सशक्त था-कि उसके कारण जागीरदार तो क्या मेवाड़ राज्य सरकार तक हिल उठी और ब्रिटिश सरकार का विदेश विभाग भी चिन्तित हो उठा।

भारत में प्रथम किसान सत्याग्रह होने के नाते बिजौलिया आन्दोलन का भारतीय जन-आन्दोलनो के इतिहास मे गौरवपूर्ण स्थान तो निश्चित ही है, परन्तु इस आन्दोलन की कुछ अपनी निजी विशेषतायें थी जिनके कारण यह आन्दोलन इस देश के पीड़ितो और शोषितो के संघर्ष के इतिहास में विशेष गौरवपूर्ण स्थान रखता है।

बिजौलिया के किसानों ने केवल अपने सीमित साधनो के भरोसे ही जागीरदार, मेवाड़ राज्य और ब्रिटिश सरकार की दुर्दनीय शक्ति को ललकारा था। इस आन्दोलन को कोई बाहरी सहायता प्राप्त नही थी। देश मे जो भी और सत्याग्रह तथा जनआन्दोलन हुए है उनमें बाहर से विपुल सहायता प्राप्त हुई थी। बिजौलिया के किसानों का आन्दोलन कोई अल्पकालीन आन्दोलन नही था कि जो केवल आवेश और तत्कालीन भावावेश के वातावरण में चलता गया हो। वह निरन्तर बीस वर्षो तक चलता रहा और किसानो को बार-बार अकथनीय तथा रोमांचकारी अत्याचारों को सहना पड़ा। जिस समय बिजौलिया के किसान ब्रिटिश साम्राज्य द्वारा पोषित और संरक्षित सामन्ती शक्ति से जूझ रहे थे, उस समय देश मे न तो देशी राज्यो का ही कोई राजनीतिक संगठन था और न उस समय तक महात्मा गांधी के नेतृत्व में देशव्यापी प्रथम सत्याग्रह आंदोलन ही छिड़ा था। उसमे भी लगानबन्दी का आह्वान तो किया ही नहीं गया था। लेकिन उससे वर्षो पहले बिजौलिया के किसानों ने लगानबन्दी का आंदोलन सफल कर सत्याग्रह के इतिहास में एक गौरवपूर्ण अध्याय जोड़ दिया था। तभी गांधीजी ने एक बार बिजौलिया के किसानों से कहा था, "मै तुम्हें क्या कह सकता हू, तुम मुझे शिक्षा देने आए हो कि जो मै नही कर सका वह तुमने पहले ही कर दिखाया है।"

बेगूं

बिजौलिया ने जो मशाल जलाई, उसकी ज्योति तेजी से इर्द-गिर्द फैलने लगी। बिजौलिया सत्याग्रह की सफलता से प्रेरित होकर बेगूं के किसानों ने भी

ठिकाने के अत्याचारों के विरुद्ध बगावत का झण्डा खड़ा कर दिया। परन्तु ठिकानों के रावदा ठाकुर ने दमन चक्र का सहारा लिया और सत्याग्रहियों को गोली मार देने तक की धमकी दी। इधर राजस्थान सेवा संघ और माणिक्यलाल वर्मा के प्रयत्नों के फलस्वरूप धीरे-धीरे जन-जागृति हो रही थी। किसानों ने निश्चय किया था कि अब वे मद्यपान नहीं करेंगे, छूआछूत को समाप्त कर देंगे और स्वदेशी वस्त्र धारण करेंगे। निश्चय ही इस प्रकार के निर्णयों से ठिकानों के जागीरदार और अधिक भयभीत हो उठे और उन्होंने आन्दोलन को कुचलने के लिए हर तरह के हिंसात्मक साधन अपनाए, यहां तक कि सार्वजनिक रूप से स्त्रियों के साथ भी असभ्यता एवं बर्बरतापूर्वक व्यवहार किया जिसे शब्दों में व्यक्त किया जाना कठिन है।

राजस्थान सेवा संघ की ओर से रामनारायण चौधरी ने बेगूं पहुंच कर स्थिति का अध्ययन किया। उन्होंने देखा कि बेगूं के स्थानीय सेठ अमृतलाल और पुलिस के अत्याचारों की कहानी अवर्णनीय है। बेगूं के किसानों ने मेवाड़ के सैटिलमेंट कमिश्नर ट्रेंच से हस्तक्षेप की अपील की। 13 जुलाई, 1923 को ट्रेंच एक सैनिक टुकड़ी के साथ गोविंदपुरा गांव पहुंचा और किसानों की सहायता करने के स्थान पर उसने गांव को आग लगा देने और किसानों पर गोली चला देने का आदेश दिया। ऐसा विश्वास किया जाता है कि दो व्यक्तियों की घटना-स्थल पर ही मृत्यु हो गई और अनेक घायल हो गए। 100 बच्चों सहित लगभग 500 व्यक्ति गिरफ्तार किए गए जिन्हें बुरी तरह पीटा गया और बेगूं ले जाया गया। इस दमन चक्र के दौरान सिपाही घरों तक में घुस गए और उन्होंने स्त्रियों का बड़े ही शर्मनाक ढंग से शील हरण किया। परिणामतः वातावरण अत्यन्त उत्तेजित हो गया और किसानों ने रावदा ठाकुर की हत्या तक करने का निश्चय कर लिया। जनता के धैर्य और उनके साहस को बनाए रखने के लिए विजयसिंह पथिक और हरिजी मानक गुप्त रूप से बेगूं पहुंच गए परन्तु पुलिस को पता चल गया और वे दोनों गिरफ्तार कर लिये गये। पथिकजी को उदयपुर लाया गया जहां उन पर राज्य विरोधी कार्य करने, आतंकवादी साहित्य को वितरित करने का आरोप लगाया गया। मुकदमे के दौरान विजयसिंह पथिक ने इस बात पर बल दिया कि देश-भक्त होना कोई अपराध नहीं है और अत्याचारों के विरुद्ध आवाज उठाना व्यक्ति का अधिकार है। यद्यपि पथिकजी के विरुद्ध नियुक्त किए गए आयोग ने उन्हें रिहा कर दिया तथापि मेवाड़ सरकार ने अपनी विशेष शक्तियों का उपयोग करते हुए उन्हें पांच वर्ष के कठोर कारावास का दण्ड दिया। कुछ समय बाद पथिकजी को रिहा कर दिया गया, पर साथ

ही मेवाड़ से निष्कासित भी कर दिया। मेवाड़ राज्य और ठिकाने के अधिकारियों द्वारा किसानों पर किये जाने वाले अत्याचारों की कहानियां प्रत्येक समाचार-पत्र में प्रकाशित हुईं, यहां तक कि ब्रिटिश संसद में भी प्रश्न उठाया गया। अंततः ठिकाना अधिकारियों और किसानों के मध्य समझौता हुआ जिसके अन्तर्गत किसानों की अधिकांश मांगें स्वीकार कर ली गईं।

बरड़

स्वर्गीय विजयसिंह पथिक एवं स्वर्गीय माणिक्यलाल वर्मा का जितना नाम देश की आजादी के आन्दोलन से जुड़ा हुआ है उससे कही अधिक उनकी कर्मभूमि बरड़ क्षेत्र भी एक प्रकार से उनके नामों का प्रतीक है। पथिकजी और वर्माजी की प्रेरणा से ही बरड़ में सामन्ती शोषण के विरुद्ध वह आन्दोलन छिड़ा, जिसकी स्मृति आज भी रोमांचित करती है।

सन् 1920 के आस-पास शुरू हुआ यह आन्दोलन धीरे-धीरे बढ़ता गया। प्रारम्भ में होने वाली छुट-पुट बैठकें ग्राम सभाओं में बदल गईं। पुलिस के आतंक से बचने के लिए यह सभाएं बीहड़ जंगलों में देर रात को आयोजित की जाती थीं तथा इतनी गुप्त होती थीं कि इनकी भनक पुलिस को नहीं मिल पाती थी। विजयसिंह पथिक एवं माणिक्यलाल वर्मा इन सभाओं को सम्बोधित करने के लिए बहुत ही गुप्त रूप में आते। दिन में सभा की योजना बनाई जाती तथा रात को सभा आयोजित की जाती। इन सभाओं की एक विशेषता थी कि इनके चारों तरफ ग्रामीण महिलाओं का घेरा होता था तथा जब भी पुलिस को भनक मिल जाती तथा वह मौके पर पहुंचती तो सबसे पहले उन्हें ग्रामीण महिलाओं से ही जूझना पड़ता था। इसी बीच मौके का लाभ उठाकर सभा में बैठे पुरुष इधर-उधर छुप जाया करते थे तथा पुलिस हाथ मलते हुए वापस लौट जाया करती थी।